विशद
श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

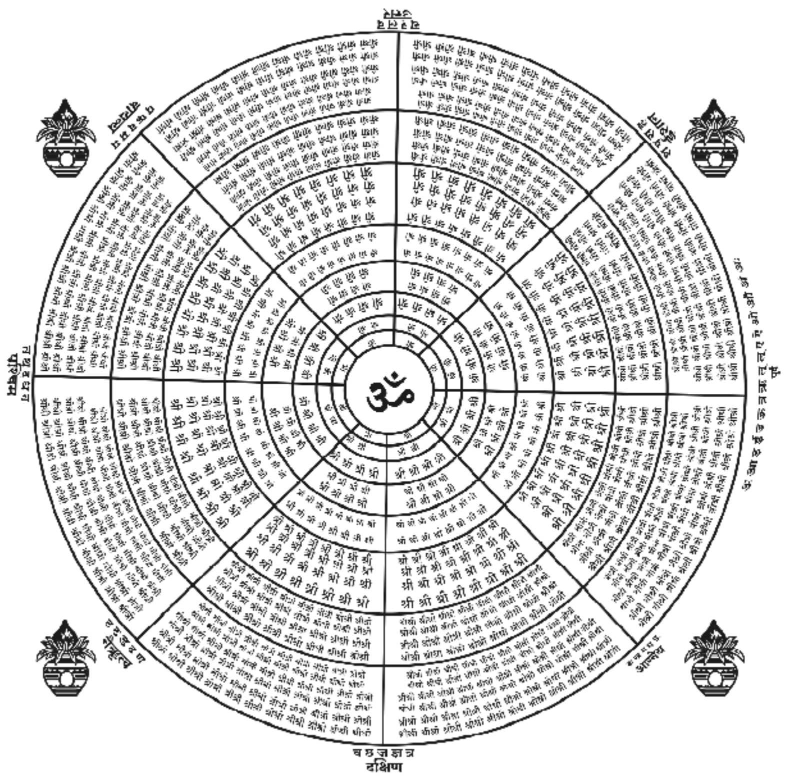

मध्य में ॐ प्रथम वलय में 8 से लेकर आठवें वलय तक दुगुने - दुगुने अर्घ्य दें

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - द्वितीय-2017 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लक 105 श्री विसोमसागरजी
क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी, सोनू दीदी, आरती दीदी

सम्पर्क सूत्र - 09829127533, 09829076085, 09650998425

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेठी, पी-958, गली नं. 3, शांति नगर,
जयपुर मो. 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

4. हरीश कुमार जैन, जय अरिहन्त ट्रेडर्स
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली मो. 9818115971

5. श्री नेमिनाथ जिनालय, नेमिनगर, नैनवां-बूँदी (राज.)
मो. 9799612441

मूल्य - 101/- रु. मात्र

अर्थ सौजन्य

स्व. श्रीमती उमरावदेवी जैन पत्नी श्री मनोहरलाल जी छाबड़ा
श्रीमती किरण छाबड़ा ध.प. श्री ओमप्रकाश जी छाबड़ा
श्रीमती रेणु ध.प. श्री अनिल कुमार जी छाबड़ा
श्रीमती बीना ध.प. श्री अशोक कुमार जी छाबड़ा
पुत्री श्रीमती उषा शाह ध.प. श्री सुरेन्द्र जी शाह
अपूर्वा, अरिहंत, दृष्टि, यामी, समक्ष, अर्पित, भव्य जैन जीरावाला परिवार
मिलाप नगर, जयपुर (राज.) मो. 9636778897, 9829375224

कृति - विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - द्वितीय-2017 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लक 105 श्री विसोमसागरजी
क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी, सोनू दीदी, आरती दीदी

सम्पर्क सूत्र - 09829127533, 09829076085, 09650998425

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेठी, पी-958, गली नं. 3, शांति नगर,
जयपुर मो. 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

4. हरीश कुमार जैन, जय अरिहन्त ट्रेडर्स
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली मो. 9818115971

5. श्री नेमिनाथ जिनालय, नेमिनगर, नैनवां-बूँदी (राज.)
मो. 9799612441

मूल्य - 101/- रु. मात्र

अर्थ सौजन्य

- श्री संतोष कुमार जी, चेतन कुमार जी, नवरतनमल जी जैन
(माधोराजपुरा वाले) गायत्री नगर, जयपुर मो. 9351105559
- श्रीमती कान्ता जैन ध.प. श्री प्रकाशचन्द जैन
डॉ. शुभ्रा जैन ध.प. डॉ. राजीव जैन, श्रीमती राजरानी जैन ध.प. श्री संदीप जैन
राय बहादुर उमराव सिंह जैन स्ट्रीट, रेवाड़ी मो. 9416880609, 9416058658
- संजय जी जैन, चाँदनी चौक, दिल्ली
- चक्रेश कुमार, मनीष कुमार जैन, बरकत नगर (जयपुर वाले) रेवाड़ी मो. 9829011196
- महावीर कुमार, लोकेश, राजेश, सुधीर जैन (सनिधि वाले) जिन्दल परिवार
नैनवां, जिला-बूंदी (राज.) फोन. 9166620322

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

गणाचार्य 108 श्री विराग सागर जी महाराज
का पावन आशीर्वाद

भक्ति, पूजा, अर्चना, विधान ये सब
एकार्थ वाची हैं। जैन धर्म में - प्राथमिक
साधकों को पूजा विधान का सर्वोपरि
स्थान है। कहा भी है -
"पहले देव पूजा फिर काम दूजा"
अथवा
"देव पूजा सम न काम दूजा"
तथा श्रावकों के षडावश्यक कर्त्तव्यों में
प्रथम देव पूजा को ही रखा गया है यथा -
देव पूजा गुरूपास्ती स्वाध्याय: संयमस्तप:।
दानश्चेति गृहस्थाणां, षट् कर्माणि दिने दिने
मुनियों के आवश्यकों में भी देव स्तुति तथा
देव वंदना के रूप में संग्रहीत है यद्यपि
परमार्थ से तो चैतन्य ही देव है और
उसके गुणानुराग की स्तुति है।
यद्यपि प्राचीन आचार्यों विद्वानों द्वारा
विभिन्न संस्कृत एवं हिंदी आदि विधान
उपलब्ध हैं तथापि आज विशिष्टता
को देखते हुए आचार्य श्री विशद सागर
जी ने अनेकों विधान रचे हैं जिसमें
"सिद्धचक्र" विधान आगमिक रहस्यों
से भक्ति पूर्ण अनेकों सरल छंदों से परिपूर्ण
है। मेरा उन्हें तथा उनके इस उपकार
हितकारी कार्य के लिये शुभाशीर्वाद है
वे निरंतर अपनी प्रगति करते रहें।

नमः
4/1/2/2537

कृतिकार का कथन

शब्द नहीं हैं पास हमारे, जो प्रभु का गुणगान करें।
ज्ञान नहीं है पास हमारे, जिससे हम पहचान करें।।
मात्र समर्पण हैं प्रभु पद में, उस पर है अधिकार मेरा।
द्रव्य नहीं है पास हमारे, जो प्रभु तुम्हें प्रदान करें।।

यत्र–तत्र–सर्वत्र विहार करना आगम सम्मत है। आगम का आदेश है अतः जहाँ भी जाते हैं तो पूजन भक्त पुजारी अपनी भावनाओं को लेकर आते हैं, पूजा विधान होते हैं। लोग अपनी भावना के अनुसार कामना भी करते हैं।

एक बार कुछ जैनों को देवी के मंदिर में पूजा करने हेतु जाते देखा मन में भावना हुई **कोई तन दुःखी, कोई मन दुःखी, कोई धन दुःखी दीखे,** अतः लोगों को सम्यक् आराध्य की ओर कैसे मोड़ा जाए तब मन में आया सम्पूर्ण विश्व में लोग भगवान पार्श्वनाथ के प्रति श्रद्धालु हैं उनकी भक्ति के दीवाने हैं। पार्श्वनाथ का विधान लिखना चाहिए, प्रथम प्रयास पूर्ण हुआ। 1 जनवरी, 2005 को विधान किया गया। लोगों को बहुत पसन्द आया, अब तो लोगों की लाईन लग गई। महाराजश्री आपकी लेखन–शैली इतनी सरल और लयबद्ध है कि अन्यत्र कहीं नहीं देखी जाती। चन्द्रप्रभु, महावीर, तत्त्वार्थ सूत्र इत्यादि अनेक निवेदन आए कि यह विधान बनाएँ, अपने आवश्यक कर्त्तव्य के बीच से समय निकालकर कृतियों की रचना की। इसी बीच कुछ लोगों ने निवेदन किया– महाराजश्री **'सिद्धचक्र विधान और कल्पद्रुम विधान'** आपकी शैली में होनी चाहिए। अति आग्रह देख कलम उठाई किन्तु महान् सिद्धों का वर्णन करना मेरे जैसे अल्प बुद्धि वाले के लिए कठिन कार्य था, अतः कृतिकारों की रचनाओं को आधार लेकर इस विधान की रचना की गई, हो सकता है भव्यजनों को यह कृति पसन्द आये तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानूँगा।

मेरी यही भावना है कि अधिक से अधिक लोग यह कृति पाकर सदुपयोग कर लाभान्वित हों तथा मेरे लिए अनुग्रहीत करें।

दिनांक 18–6–2011 **आचार्य विशदसागर** (तिजारा)

ध्वजारोहण-विधि

* ध्वजदण्ड मण्डप की ऊँचाई से दुगना हो, 3 कटनी हों, ध्वजदण्ड पीले खोले से ढका हो ऊपर से गोट लगा हो। * शिखर पर लगे हुए कलश से 1 हाथ ऊँची ध्वजा नीरोगता, 2 हाथ ऊँची ऋद्धि, 3 हाथ ऊँची सम्पत्ति, 4 हाथ ऊँची शासक समृद्धि, 5 हाथ ऊँची सुभिक्ष राष्ट्रवृद्धि में कारण होती है। * ध्वजा त्रिकोण तीन से ग्यारह विलस्त तक लम्बी और 11 अंगुल से 24 अंगुल चौड़ी होनी चाहिये।

ध्वजा फहराने का फल-

ध्वजा फहराने पर प्रथम ही वायु वेग से पूर्व दिशा में फहरे तो सर्वमनोसिद्धि, उत्तर में फहरे तो आरोग्य सम्पत्ति, पश्चिम वायव्य एवं ऐशान दिशा में फहरे तो वर्षा हो, शेष दिशा व विदिशा में फहरे तो शांति कर्म करना चाहिए।

ध्वजा रोहण स्थल में-

1. पहली कटनी में नवदेवता के प्रतीक 9 श्री फल रखना चाहिए।
2. दूसरी कटनी में 5 मिट्टी के कलश रखना चाहिए।
3. तीसरी कटनी में दश दिशा संबंधी ध्वजायें रखना चाहिए।
4. बड़ी शांतिधारा के मंत्रों से हवन स्थल में अग्नि रख धूप खेना।

नोट- ध्वजारोहण से पूर्व सर्वप्रथम विनायक यंत्र या पंचपरमेष्ठी पूजन करें, उसके बाद 108 या नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें।

भक्ति पाठ

लघु सिद्ध श्रुत एवं आचार्य भक्ति।

अर्घ- ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भू स्वाहा। (जल से शुद्धि करें)

ॐ वायु कुमाराय हूँ फट् स्वाहा। (वस्त्र से पीठिका साफ करें)

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय धरां प्रच्छालय अं हं सं तं पं झं चं क्ष्वीं क्षः भू फट् स्वाहा। (जल से शुद्धि करें।)

ध्वजादण्ड एवं ध्वजा की जल से शुद्धि-

ज्ञान शक्तिमयीं मत्त्वा ध्वजदण्डाग्र चूलिकाम्।
अनादि सिद्ध मंत्रेण स्नपनं ते करोम्यहम्॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ह्रीं क्लीं श्री सर्वशान्ति कुरु-कुरु स्वाहा।

अर्घ- **पंचपरमेष्ठिनस्ते मंगललोकोत्तमाश्च शरणानि।**
धर्मोऽपि कर्णिकायां समर्चिताः सन्तु नः सुखदाः॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यो नवदेवताभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नोट- समय हो तो नवदेवता पूजन या विनायक यंत्र पूजन कर सकते हैं।

ध्वजदण्ड पर पुष्पक्षेपण

1. **देवेन्द्र मणि मौलि समार्चितांघ्रि, देवाधिदेव परमेश्वर कीर्तिभाजः।**
पुष्पायुध प्रमथनस्य जिनेश्वरस्य, पुष्पांजलि विरचितोऽस्तु विनेय शांत्यैः॥

ॐ परब्रह्मणे नमो नमः, स्वस्ति-स्वस्ति, नंद नंद, वर्धस्व-वर्धस्व, विजयस्व-विजयस्व, पुनीहि-पुनीहि, पुण्याहं-पुण्याहं, मांगल्यं-मांगल्यं, जय-जय।

2. **तत् कुंभ वार्मिवर मंत्रपूतैः, सत्संमुखानि प्रतिबिंबितानाम्।**
यक्षादि सर्वध्वज देवतानां, संप्रोक्षण सांप्रतमातनोमि॥

ॐ सर्वराष्ट्र क्षुद्रोपद्रवं हर-हर ॐ स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा।

शुद्ध जल से ध्वज दण्ड शुद्धि-

ॐ ह्रीं श्री नमोऽर्हते पवित्रतरजलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ध्वजा एवं ध्वज दण्ड पर स्वस्तिक लेखन-

ॐ ह्रीं ध्वजदण्डे पताकायां च स्वस्तिक लेखनं करोमि।

यहाँ मंगल कलश स्थापन करें -

ॐ ह्रीं स्वस्ति विधान मंगल कलश स्थापनं करोमि।

दीपक स्थान करें - ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपक स्थापनं करोमि।

ध्वजदण्ड में रक्षा सूत्र बांधे–

श्री सूत्राम शतार्चितांघ्रि जलजद्वान्द्वय लोकत्रये,
प्रेष्ठोन्मिष्ठ गरिष्ठ सुष्ठ सुवचो जुष्टाय तेऽर्हन्नमः।
अंतातीत गुणाय निर्जित भव व्राताय बुद्धोल्लसः,
ऋद्धे बुद्धि विशुद्धि दायक महा विष्णो विजिष्णो जिनः॥

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्ड परिवेष्टयामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा। (इस मंत्र का 9 बार जाप करें)

ध्वजदण्ड पर माला काली चोटी, मंगल सूत्र बांधने का मंत्र–

ध्वजदण्डाग्र भागस्थ, कोकिला त्रय वर्तिनः।
वेणुदण्डस्य तस्याग्रे, वहनामि ध्वजकूर्चिकाम्॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रीं ध्वजदण्डं मालामंगलसूत्रेण वेष्टयामि।

ध्वजा गर्त शुद्धि (अष्ट द्रव्य से)

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (जल गर्त में छोड़े), ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (सुगंध)
ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः (अक्षतान्), ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पं)
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यं), ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः (दीपं)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपं), ॐ ह्रीं अभीष्ट फलप्रदाय नमः (फलं)
ॐ ह्रीं परम सिद्धाय नमः (अर्घं)।

ध्वजदण्ड में पंचरत्न–स्वस्तिक स्थापन–

ॐ ध्वजदण्डगर्ते पंचरत्न हिरण्य स्वस्तिकं स्थाफ्नं करोमि।

ध्वजारोहण मंत्र–

रत्नत्रयात्मक–तयाभि–मंतेऽन्नदण्डे, लोकत्रय प्रकृत केवल बोधरूपम्।
संकल्प पूजित मिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सति मंगल वाद्य घोषे॥

ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्तिभद्रं भवतु सर्वलोक शान्ति र्भवतु स्वाहा।

तदग्रदेशे ध्वज दण्ड मुच्चै, र्भास्वद्विमानं गमनाद्विरूंधत्।
निवेश्यलग्ने शुभोपदेश्ये, महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात्॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनपताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।
(इन मंत्रों को बोलकर गीत वाद्य की ध्वनि के साथ ध्वजा फहराना)

ध्वजा पर पुष्पक्षेपण करना–

सजयुत जिन धर्मो यावदा चन्द्र तारम्, व्रत नियम तपोर्भि–वर्द्धतां साधुसङ्ऽघंः। अह–रह–रभि–वृद्धिं यान्तु चैत्यालयस्ते, तदधिकृत–जनानां क्षेम मारोग्यमस्तु॥
ॐ ह्रीं दशचिह्नाष्ट गुंटिकालंकृत ध्वजायै पुष्पं।
प्रतिष्ठाकारक, प्रतिष्ठाचार्य एवं सम्मिलित श्रावक गण ध्वजा पर पुष्प फेंके एवं नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।

ध्वज गीत

(तर्ज– जन गन मन अधिनायक...)

तीन लोक अधिनायक जय हे, अर्हत् सिद्ध विधाता।
मोक्षमार्ग के अनुपम नायक, जग में शांति प्रदाता॥
गणधरादि तुम नमते, साधु चरण प्रणमते, हे मुक्ति पद दाता।
मण्डल की पूजा विधान में, पहले ध्वज फहराता।
जय हे – जय हे – जय हे – जय जय जय जय हे॥
हे जग में शांति प्रदाता॥1॥

पञ्च रंग अथवा केसरिया, ध्वज अनुपम बनवाएँ।
स्वस्तिक चिह्न बनाकर उसमें, सुरभित पुष्प बंधाएँ॥
शुभ जैन ध्वजा फहराएँ, हम सादर शीश झुकाएँ, जो फहर फहर फहराता।
स्वस्तिक चिह्न सहित ध्वज को जग, सारा शीश झुकाता॥
जय हे....॥2॥

पञ्च परम, परमेष्ठि जग में, मोक्ष मार्ग दर्शाते।
भवि जीवों से तीन लोक में, वह सब पूजे जाते॥
उनके गुण हम गाएँ, पद में शीश झुकाएँ, हे भविजन के त्राता।
विशद भाव से आज झुका है, ध्वज के आगे माथा॥
जय हे....॥3॥

नोट – ध्वज की 3 परिक्रमा करें।

हस्त प्रच्छालन मंत्र-ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा।

जल शुद्धि की विधि-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरित नवरत्नगन्धपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

रक्षा मंत्र-ॐ नमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर पुष्प प्रक्षेप किया जावे।

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु। ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु।

यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

दिग्वन्दना मंत्र

ॐ ह्राँ णमो अरिहंताणं ह्राँ पूर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिमदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर सर्वदिशाओं में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

मण्डप प्रतिष्ठा विधि

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा (मण्डप पर जल से शुद्धि करें।)

मण्डप स्थित मंगल कलश में हल्दी सुपारी रखने का मंत्र-

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पुंगी फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट स्वाहा। (मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, पीली सरसों, नवरत्न, सवा रुपया हाथ में लेकर सावधानीपूर्वक रख दें।)

निम्न मन्त्रपूर्वक पंचवर्ण सूत्र से मण्डप को तीन बार वेष्टित करें।

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारं परिवेष्टयामः, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्रम्॥

मन्त्र :-ॐ अनादिपरमब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः। ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुःशरणाय नमो नमः अस्य................... (विधान का नाम) नामधेय यजमानस्य .... (विधान कर्ता का नाम) नामधेय-याजकस्य च सुरासुरनरनृपयक्ष देवतागण गन्धर्वस्य कुलगोत्रनामदेशादिभागृहाराम-परिचारकस्यपुण्याहमंत्रैः पुण्याहं वाचयेत् (करोमि) प्रीयंतां ते कुलं, प्रीयंतां ते

आयु: प्रीयंतां ते मातृपितृसुहृद् बन्धुवर्गस्य प्रीयंतां। त्वं जीव, त्वं विजयस्व, ते मांगल्यं-मांगल्यं भवतु। सपरिवार वर्धस्व-वर्धस्व विजयस्व-विजयस्व, भवतु भवतु सर्वदा शिवं कुरु॥

श्रीमण्डपाभं मिलितत्रिलोकी-श्रीमंडितंपण्डितपुण्डरीकं।
श्रीमण्डपं खण्डितपापतापं तमेनमर्घ्येण च मण्डयाम:॥

ॐ ह्रीं मण्डपायार्घ्यं दद्यात्। (मण्डप के लिये अर्घ्य चढ़ावें।)

मण्डप शुद्धि की संक्षिप्त विधि

नीचे लिखे मंत्र को 5 बार पढ़कर मण्डप पर जल छिड़क देवें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: प्रतिष्ठा मण्डप वेदी प्रभृति स्थानानां शुद्धिं कुर्म:।

मण्डप की आठों दिशाओं में क्रमश: नीचे लिखे मंत्र पुष्प क्षेपते हुए मण्डप शुद्धि करें।

1. ॐ आं क्रौं ह्रीं नम: चतुर्णिकाय देवा: सर्व विघ्न: निवारणार्थाय... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
2. ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्व दिशा के प्रतिहारी कुमुदेश्वर देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय........ कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
3. ॐ आं क्रौं ह्रीं आग्नेय दिशा के प्रतिहारी यमेन्द्र देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
4. ॐ आं क्रौं ह्रीं दक्षिण दिशा के प्रतिहारी वामन देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय...... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
5. ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी नैऋतेन्द्र देवा:...... विघ्न निवारणार्थाय.....कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
6. ॐ आं क्रौं ह्रीं पश्चिम दिशा के प्रतिहारी अंजन देवा:....... विघ्न निवारणार्थाय..... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
7. ॐ आं क्रौं ह्रीं वायव्य दिशा के प्रतिहारी वायुकुमार: देवा:......विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।

8. ॐ आं क्रौं ह्रीं उत्तर दिशा के प्रतिहारी पुष्पदन्त देवा:...... विघ्न निवारणार्थाय....... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
9. ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशान दिशा के प्रतिहारी ऐशानेद्र देवा:...... विघ्न निवारणार्थाय...... कार्य सिद्ध्यार्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।
10. ॐ आं क्रौं ह्रीं वास्तुकुमारदेवा:..... मेघकुमारदेवा:, नागकुमारदेवा:..... विघ्न निवारणार्थाय ...... कार्य सिद्ध्यर्थाय स्वनियोगम कुरुत कुरुत स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगी फलादि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री विशद तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान कार्यर्थं। .. श्री वीर निर्वाण निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्ध्यर्थं, पात्रशुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं इवीं इवीं हं स: स्वाहा।

नोट :- यह पढ़कर मण्डल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगलकलश श्रावक द्वारा स्थापित कराया जावे। इस कलश को पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

दीपक स्थापन मंत्र

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापन

स्थापनीयं वरं शास्त्रं, कुन्दकुन्दादि निर्मितं।
जैन तत्त्व प्रवोधाय, स्याद्वादेन विभूषितम्॥

ॐ ह्रीं मण्डलोपरि जिनशास्त्रं स्थापयामि।

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वांग शुद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्र्येशं,
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर्,
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे॥2॥

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ।
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम्॥3॥

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखि श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्॥4॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम्।
अत्युद्ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि॥5॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश- विघ्नं,
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि।
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल-वार्चित-मुखान् कलधौत-रौप्य-ताम्रार-कूट-घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन- वेदिकांते॥8॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण- कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-संलग्न- रत्न- किरणच्छवि- धूस- राघ्रिम्।
प्रस्वेद- ताप- मल- मुक्तमपि प्रकृष्टैर्-भक्त्या जलै- र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि- वर्धमानपर्यन्तं- चतुर्विंशति- तीर्थंकर- परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे...... देशे.. प्रान्ते... नाम्नि नगरे श्री 1008.. जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे.. तिथौ... वासरे... पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका- श्रावक-श्राविकानां सकल - कर्म- क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

(चारो कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै- र्मनोरथ- शतैरिव भव्य- पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण- कलशै- र्निखिला- वसानैः।
संसार- सागर- विलंघन- हेतु- सेतु-
माप्लावये त्रिभुवनैक- पतिं जिनेन्द्रम्॥10॥

अभिषेक मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं॥

द्रव्यै- रनल्प- घनसार- चतुः समाद्यै- रामोद- वासित- समस्त- दिगन्तरालैः।
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं .... सुगन्धित जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

अभिषेक समय का भजन

(तर्ज - जिनवर जगती के ईश...)

हे तीन लोक के नाथ ! झुकाते माथ।
भक्त हे स्वामी, अभिषेक करें शिवगामी॥

अकृत्रिम सोहें जिन मंदिर।
जिन प्रतिमाएँ जिनमें सुन्दर॥
भक्ति करे शत् इन्द्र करें प्रणमामी॥1॥

जल क्षीर सिन्धु से लाते हैं।
जिनवर का न्हवन कराते हैं॥
भक्ती कर बनते भक्त, श्रेष्ठ पथगामी॥2॥

सुर इन्द्रों का सहयोग करें।
इन्द्राणी मंगल पात्र भरें॥
सुर चँवर ढौंरते जिनके आगे नामी॥3॥

जो न्हवन प्रभू का करते हैं।
वे कर्म कालिमा हरते हैं॥
वे सद् श्रावक भी बने 'विशद' शिवगामी॥4॥

जो जिनवर का अभिषेक करें।
वे अपने संकट दूर करें।
सद् संयम धर बन जाते अन्तर्यामी॥5॥

***

गुरु भक्ति

धर्म प्रभावक परम पूज्य हे !, तव चरणों में करूँ नमन्।
बुद्धि विकाशक प्रबल आपको, करते हम सादर बन्दन॥
परम शान्ति देने वाले हे !, गुरुवर करते हम अर्चन।
विशद सिन्धु गुण के आर्णव को, करते हम शत्-शत् बन्दन॥

लघु शान्ति धारा

ॐ नम: सिद्धेभ्य:। श्री वीतरागाय नम:। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं अस्माकं... छिंद-छिंद भिंद-भिंद।मृत्युं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। रतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। क्रोधं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अग्निभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशत्रुं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वोपसर्गं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वविघ्नं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराजभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वचौरभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वदुष्टभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमृगभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वात्मचक्रभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपरमंत्र छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशूल रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्षय रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकुष्ठ रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्रूर रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वनरमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगजमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वाश्वमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगोमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमहिषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वधान्यमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववृक्षमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगुल्ममारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपत्रमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपुष्पमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वफलमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराष्ट्र मारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व देशमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व विषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेताल शाकिनी भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेदनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमोहनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकर्माष्टकं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वं भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्व

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व दु:ख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्री शांति-रस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नम:।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामरडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां॥
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्र:॥
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं॥

अर्घ्य- शांतिधारा करके हे प्रभु !, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकार।
'विशद' शांति को पाने हेतू, वन्दन करते बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज–सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा.....॥ टेक॥
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है जग सारा– जिन शीश...॥1॥
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा–जिन शीश...॥2॥
गिरि तरुवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।
जो अकृत्रिम हैं ना निर्मित किसी के द्वारा–जिन शीश...॥3॥
जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिन भक्ती बिन यह है संसार असारा–जिन शीश...॥4॥
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा–जिन शीश...॥5॥
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा–जिन शीश...॥6॥
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा–जिन शीश...॥7॥
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा–जिन शीश...॥8॥

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं॥
ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

(दोहा)

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर–नर–किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन–जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू ! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलिं क्षिपामि।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः।।3।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्यायेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-र्जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय॥

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्मयमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नो; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥1॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:॥3॥

प्रज्ञा-प्रधाना: श्रमणा: समृद्धा: प्रत्येकबुद्धा: दशसर्वपूर्वै:।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञा: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:॥4॥

जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वा:।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:॥5॥

अणिम्नि दक्षा:कुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ता: कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ता:।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधाना: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्था:।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंत: स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:॥8॥

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशा:,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो न:॥9॥

क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्त:।
अक्षीणसंवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न:॥10॥

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)
(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन॥
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन॥
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए॥
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सताये हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलाये हैं॥

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्य: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा॥

शांतये शांति धारा करोमि।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ॥

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

_जाप्य_– ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल॥

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई॥
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई॥ जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें॥

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

सिद्धचक्र विधान

सिद्ध वंदना

सिद्धों के ध्यान स्मरण से, मन की पूरी हो अभिलाषा।
सिद्धों की भक्ति पूजा से, हो जाय पूर्ण मन की आशा॥
जिन सिद्धों के गुण गाने से, निज गुण की सिद्धि हो जावे।
माला जपने से सिद्धों की, नर सिद्ध सुपद को भी पावे॥
पूजा करने से सिद्धों की, सारे संकट टल जाते हैं।
सब आधि-व्याधियाँ दुःख शोक, दारिद्र नहीं रह पाते हैं॥
कोई जाति विरोधी प्राणी हों, शत्रु भी प्रेम बढ़ाते हैं।
अर्चा करने से सिद्धों की, अनुकूल सभी हो जाते हैं॥
ग्रह क्रूर सभी अनुकूल रहें, सिद्धों का ध्यान लगाने से।
व्यंतर भूतादि क्रूर पशु, हों शांत प्रभु गुण गाने से॥
मुनि मुख से सुनकर मैना ने, यह सिद्ध चक्र का पाठ किया।
पति श्रीपाल का कुष्ठ रोग, शुभ गंधोदक से दूर किया॥

विधानाचार्य

सज्जादि सम्यक्त्वी ज्योतिष, देशव्रती ज्ञानी विद्वान।
मंत्र तंत्र विद् विधि -विधान का, ज्ञाता निर्लोभी गुणवान॥
पाप भीरू आगम का वक्ता, गुरु उपासक जग हितकार।
श्रेष्ठ विधानाचार्य शांतिप्रिय, श्रेष्ठ प्रभावक मंगलकार॥

विधानकर्त्ता

सम्यक्त्वी श्रद्धालु अणुव्रती, दुर्व्यसनी जाति निर्दोष।
संकल्पी हिंसा का त्यागी, मूलगुणी जो करे न रोष॥
पूजक दानी भक्त गुरु का, स्वाध्याय जिन दर्शनवान।
हीनाधिक न अंग कोई न अन्धा गूंगा बहरावान॥
रोगी या गर्हित व्यापारी, कुष्ठ जलोदर ज्वर से युक्त।
मूर्ख और कंजूस घमण्डी, लोभी न माया संयुक्त॥

न्यायोपार्जित कार्य करे ना मूर्ख होय न ही कंजूस।
ऐसा है यजमान श्रेष्ठ शुभ, किसी से लेता न हो घूस॥
जब विधान की इच्छा हो तो, मुनि सान्निध्य में आवे।
श्रीफल ले परिवार सहित, वह आशीर्वाद शुभ पावे॥
राज्य राष्ट्र के अन्य विधर्मी, को अनुकूल बनावें।
आमंत्रण देकर भव्यों को, शांति यज्ञ करावें॥

सिद्धचक्र विधान मण्डल रचना

दोहा- मध्य में लिखकर ॐ शुभ, मण्डल गोलाकार।
मण्डल की रचना करें, आगम के अनुसार॥
पहला वलय बनाइये, जिसमें कोठे आठ।
द्वितीय वलय में जानिए, सोलह का शुभ पाठ॥
तृतीय वलय में अर्घ्य शुभ, बत्तिस का स्थान।
चौथे वलय में अर्घ्य शुभ, चौंसठ रहे महान॥
पञ्चम वलय में एक सौ, अट्ठाइस शुभ अर्घ्य।
दौ सौ छप्पन अर्घ्य शुभ, छठे में रहे अनर्घ्य॥
पाँच सौ बारह अर्घ्य का, सप्तम में स्थान।
एक सहस्र चौबीस का, अष्टम वलय महान॥
चतुष्कोण पर साथियाँ, श्रेष्ठ बनाएँ चार।
कलश स्थापन कीजिए, जिस पर मंगलकार॥

सिद्ध स्तवन

सोरठा- तीर्थ क्षेत्र निर्वाण, मंगलमय मंगल परम।
करते हम गुणगान, मुक्त हुए जिन सिद्ध का॥

जीवादि तत्त्वों का जिसने, समीचीन श्रद्धान किया।
सम्यक् ज्ञान आचरण पाकर, निज आतम का ध्यान किया॥
संवर और निर्जरा करके, अष्ट कर्म का नाश किया।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया॥1॥

करके योग निरोध आपने, कर्मों का कीन्हा संहार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, आतम का कीन्हा उद्धार॥
किए कर्म का नाश जहाँ वह, बना तीर्थ अतिशय पावन।
कहलाए निर्वाण क्षेत्र वह, सर्व लोक में मन भावन॥2॥
संत साधना से तीर्थों का, कण-कण पावन हुआ अहा।
पार हुआ भव सागर से वह, अतः क्षेत्र वह तीर्थ कहा॥
तीर्थ क्षेत्र की रज को प्राणी, अपने शीश चढ़ाते हैं।
श्रद्धा सहित वन्दना करके, अनुपम जो फल पाते हैं॥3॥
तीर्थ क्षेत्र का वन्दन करके, तीर्थ रूप हम हो जावें।
कर्माश्रव हो नाश हमारा, भव वन में न भटकावें॥
संत और भगवन्तों के हम, पथगामी बन जाएँ अहा।
उनके गुण पा जाएँ हम भी, अन्तिम यह उद्देश्य रहा॥4॥
संत साधना करके अपने, करते हैं कर्मों का नाश।
रत्नत्रय के द्वारा करते, निज आतम का पूर्ण विकाश॥
मोक्ष महाफल विशद प्राप्त कर, बन जाते हैं अनुपम सिद्ध।
शाश्वत सुख पाने वाले वह, हो जाते हैं जगत प्रसिद्ध॥5॥

सिद्ध यंत्रोद्धार (सिद्ध यंत्र पूजा)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मा स्वरावेष्टितं।
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुज-दलं तत्संधि-तत्त्वान्वितम्॥
अंतः पत्र तटेष्वनाहत-युतं ह्रीकार-सवेष्टितं।
देव ध्यायति यः स मुक्ति सुभगो वैरीय कंठी रवः॥1॥

बिन्दु समन्वित ऊर्ध्व अधो 'र' वर्ण हकार है स्वर संयुक्त।
वर्गापूरित दिग् अम्बुज दल, सन्धि है तत्त्वों से युक्त॥
यंत्र ह्रीं से क्रों सुपद तक, वेष्ठित यंत्र सिद्ध गुणवान।
ध्याते मुनिवर कर्म शत्रु को, सिंह नाग को गरुड़ समान॥

(इति सिद्धचक्र यंत्रस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ स्थापना (शम्भू छंद)

कर्मों का सम्बन्ध नाशकर, सिद्ध प्रभु होते अशरीर।
रोग उपद्रव व्याधि विरहित, नाशे जन्म-जरा की पीर॥
सौख्य अनन्त में लीन रहें नित, करते हैं ज्ञानामृत पान।
सिद्धों का आह्वानन है ज्यों, कर्माग्नि को मेघ समान॥

दोहा- आह्वानन करते यहाँ, हे त्रिभुवन के ईश।
विशद भाव से पूजने, झुका रहे पद शीश॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपते ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द रेखता)

कलश में नीर भर लाए, नशाने रोग त्रय आये।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित गंध हम लाए, भवाताप नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल तन्दुल धुवा लाए, सुपद अक्षय को हम आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन सुरभित विशद लाए, काम के नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह मिष्ठ बनवाए, क्षुधा के नाश को लाए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाकर दीप यह लाए, कर्म के नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दश गंध युत लाए, कर्म के नाश को आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल थाल भर लाए, मोक्ष फल हेतु हम आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य यह श्रेष्ठ बनवाए, सुपद शास्वत को हम आए।
आप जो सिद्ध पद पाए, स्वपद के हेतु हम आये।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनाहत पराक्रमाय सिद्धचक्र यंत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धचक्र यंत्र

प्रस्तावना (यंत्र स्थापना)

(शम्भू छन्द)

ॐकारमय दिव्य देशना, तीर्थंकर की रही महान।
अर्हं शब्द है अर्द्ध मात्रिक, अकारादि स्वर सहित प्रधान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाते यह शुभकार।
पूर्व दिशा में अर्चा करते, सर्व स्वरों की बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये नमः पूर्वदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वर्ण 'क' वर्ग के हैं शुभकारी, काल अनादि मंगलकारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, अग्निकोण में पूज रचाते।।2।।

ॐ ह्रीं क ख ग घ ङअनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये आग्नेयदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वर्ण 'च' वर्ग के हैं शुभकारी, ज्ञान प्रदायक मंगलकारी।
दक्षिण दिशि में पूज रचाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।3।।

ॐ ह्रीं च छ ज झ ञ अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये दक्षिणदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वर्ण 'ट' वर्ग के मंगलकारी, भवि जीवों के हैं हितकारी।
दिशि नैऋत्य में पूज रचाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।4।।

ॐ ह्रीं ट ठ ड ढ ण अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये नैऋत्यदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वर्ण 'त' वर्ग के पावन गाये, प्राणी अपने हृदय सजाये।
दिशि पश्चिम में पूज रचाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं त थ द ध न अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये पश्चिमदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वर्ण 'प' वर्ग सुभम् कहलाए, जीवों को सद् राह दिखाए।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्य चढ़ाएँ, वायव्य दिशि में पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं प फ ब भ म अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये वायव्यदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वर्ण 'य' वर्ग की महिमा न्यारी, अक्षर जग में मंगलकारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, उत्तर दिशि में पूज रचाते।।7।।

ॐ ह्रीं य र ल व अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये उत्तरदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शेष वर्ण 'श' आदि जानो, स्वर व्यंजन के कारण मानो।
दिश ईशान रही सुखदायी, अर्घ्य चढ़ाते हैं हम भाई॥8॥

ॐ ह्रीं श ष स ह अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये ईशानदिशि अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(इति सिद्धचक्र यंत्रस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा– शब्द ब्रह्म को पूजकर करना निज उद्धार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भवोदधि पार॥

(चाल छन्द)

स्वर अकारादि नौ गाए, अ इ उ ऋ कहलाए।
लृ ए ऐ ओ औ जानो, ह्रस्व दीर्घ प्लुत पहिचानो॥
यह सत्ताइस हो जाते, सब स्वर संज्ञा को पाते।
हैं पंच वर्ग क आदि, अन्तस्थ य र ल वादि॥
श ष स ह ऊष्मक गाये, चउ अयोगवाह कहलाए।
सब चौंसठ अक्षर मानो, जो जैनागम से जानो।
इनके द्वि आदि संयोगी, कई भेद कहे जिन योगी।
एकट्ठी श्रुत हो जाते, सब द्वादशांग में आते॥
आतम परमातम दोई, के ज्ञान में कारण होई।
श्रुत बोध जनावन हारे, ज्ञानी जन यह उच्चारे॥
आश्रय जो इनका पावें, वह सारे कार्य बनावें।
मन की सब कहते भाई, जाने पर की प्रभुताई॥
इनको जो मन से ध्यावें, वे जीव सुखी हो जावें।
ज्ञानी जन ज्ञान उपावें, मूरख भी ज्ञान बढ़ावें॥
बिन स्वर व्यंजन के कोई, व्यवहार चले न सोई।
इनका उपपाद न होई क्षरणा इनका न कोई॥
अक्षर इसलिए कहाए, जो काल अनादि गाए।
ज्यों सिद्ध अनादि गाए, त्यों वर्ण सिद्ध कहलाए॥
सिद्धों सम पूजे जाते, नवकार मंत्र में आते।

शिव कारण पैंतिस जानो, सोलह छह पंच बखानो॥
दो एक आदि कई गाये, सब मंत्र रूप बतलाए।
गणधर आदि सब गाते, जिनवाणी में भी आते॥
सब में तुमरी प्रभुताई, शिव मार्ग चलाते भाई।

दोहा– शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाओ शिव का द्वार।
शब्दों से पूजा रची, जग में मंगलकार॥
आलम्बन नाना कहे, मुक्ति हेतु महान।
हो पदस्थ शुभ ध्यान से, मुक्ति पद की खान॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्धाधिपतये अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शब्द ब्रह्म को पूजकर, पाना है शिवधाम।
'विशद' भाव से हम यहाँ, करते विशद प्रणाम॥

इत्याशीर्वादः

सिद्ध चक्र समुच्चय पूजा

स्थापना

दोहा– आठों कर्म विनाश कर, बनें सिद्ध भगवान।
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठि समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

प्रासुक निर्मल नीर चढ़ाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म–जरादि रोग नशाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित चन्दन लाए, घिसकर यहाँ चढ़ाने आए।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म–जरादि रोग नशाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे शुभकारी, अक्षय पद पाने मनहारी।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चढ़ाने को हम लाए, कामरोग मेरा नश जाए।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाया प्यारा-प्यारा, मोह नाश हो जाए हमारा।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में शुभ धूप जलाएँ, अपने आठों कर्म नशाएँ।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यह सरस मँगाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया मंगलकारी, पद अनर्घ पाएँ सुखकारी।
सिद्ध चक्र का पाठ रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांति पाने के लिए, तव पद आए नाथ।
शांतिधारा कर रहे, चरण झुकाकर माथ॥ शान्तये शांतिधारा

कर्म नशाए आपने, हे त्रिभुवनपति ईश।
पुष्पाञ्जलि हम कर रहे, चरण झुकाकर शीश॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- अविनाशी अविकार हैं, सिद्ध अनन्तानन्त।
गाते हैं जयमाल हम, पाने पद निर्ग्रन्थ॥

शम्भू छन्द

सिद्ध सनातन हैं अविनाशी, अनुपम सिद्ध शिला के वासी।
नित्य निरंजन जो कहलाए, अपने सारे कर्म नशाए॥1॥
ज्ञानावरणी कर्म नशाए, केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, क्षायिक दर्शन आप प्रकाशे॥2॥
मोहनीय को नाशे स्वामी, सुख अनन्त पाये अविनाशी।
अन्तराय प्रभु कर्म नशाए, उत्तम बल प्रभु जी प्रगटाए॥3॥
आयु कर्म भी नाशे स्वामी, अवगाहनत्व प्रगटाए नामी।
नाम कर्म फिर रह न पाया, गुण सूक्ष्मत्व प्रभु प्रगटाया॥4॥
वेदनीय प्रभु कर्म नशाए, अव्याबाध प्रभु जी पाए।
गोत्र कर्म को प्रभु विनशाए, अगुरुलघु गुण फिर प्रगटाए॥5॥
ज्ञान शरीरी आप कहाए, चित् चैतन्य गुणों को पाए।
गुण अनन्त धारी जिन स्वामी, त्रिभुवन के प्रभु अन्तर्यामी॥6॥
परम वीतरागी विज्ञानी, प्रभु जी पाए मुक्ति रानी।
तीन लोक में पूज्य कहाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए॥7॥
हम भी तव चरणों में आए, अपनी यही भावना लाए।
भव सागर से हम तिर जाएँ, मुक्ति वधू को हम भी पाएँ॥8॥

दोहा- महाव्रतों को प्राप्त कर, धारा अतिशय योग।
वन्दन करते चरण में, पाने आतम बोध॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कर्मों को विध्वंश कर, पाया शिवपुर राज।
पुष्पाञ्जलि करने अतः, आया सकल समाज॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

प्रथम पूजा

स्थापना

रेफ बिन्दु युत ऊर्ध्व अधो 'र', बीजाक्षर शुभ रहा हकार॥
अकारादि स्वर युक्त कर्णिका, वर्ग युक्त वसु दल शुभकार।
मंत्र अनाहत अग्रभाग में, घेरा ह्रीं किए मनहार।
सिद्ध चक्र का आह्वानन कर, पूजा करते मंगलकार॥
सुर नर मुनिवर सिद्ध यंत्र का, विशद भाव से करते ध्यान।
सिंह हिरण को गरुड़ नाग को, यंत्र कर्म को रहा महान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

विषय भोग हैं मधुर मगर, फल उनका होता कटुक महाँ।
चेतन का भोग रहा शाश्वत, अविनाशी अक्चिल श्रेष्ठ यहाँ।
जन्मादि रोग नाशकर हम, निज वैभव पाने आए हैं।
अतएव नीर प्रासुक करके, प्रभु चरण चढ़ाने लाए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जान सके न सदियों से, जड़ चेतन का जो भेद रहा।
अतएव अनादि से हमने, भव-भव में भव आताप सहा॥
हम भव आताप नशाकर के, मति सन्मति पाने आए हैं।
अतएव सुगन्धित चन्दन यह, हम आज चढ़ाने आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्योसंसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल से उज्ज्वल है चेतन, न उस समान कुछ और कहा।
हम कलुषित हुए हैं कर्मों से, न जान सके स्वभाव अहा॥
हम अक्षय पद को भूल गये, वह पद पाने को आये हैं।
चरणों में अक्षय अक्षत शुभ, प्रभु आज चढ़ाने लाए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन में निर्मलता न आई, हम काम चक्र में उलझ गये।
न ध्यान किया निज आतम का, हम कामाग्नि में झुलस गये॥
है कामवासना दुःखदायी, अब उसे नशाने आये हैं।
यह पुष्प सुगन्धित चुन-चुनकर, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने अपने इस तन मन को, व्यंजन देकर संतुष्ट किया।
निज आतम दर्शन का अमृत, चेतन को दे न पुष्ट किया॥
जिह्वा की लोलुपता अपनी, हम आज मिटाने आए हैं।
नैवेद्य सरस ताजे अनुपम, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुँह देखा दर्पण में हमने, निज आतम का न दर्श मिला।
न ज्ञान दीप जल पाया है, न अन्तर्मन का फूल खिला॥
मिथ्या अज्ञान नशे मेरा, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम मोह अंध के नाश हेतु, निज भाव बनाकर आए हैं॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग-द्वेष में पड़े रहे, निज का स्वभाव न पाया है।
पर परिणति में हम रंगे सदा, चैतन्य भाव न आया है॥
हों अष्ट कर्म चकचूर मेरे, निज के गुण पाने आए हैं।
हम भाव कर्म की अग्नि में, यह धूप जलाने आए हैं॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु मव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु पुण्य पाप का काम किया, जीवन को निष्फल कर डाला।
अब धर्म हृदय जागे मेरे, मिट जाए मोह-तिमिर काला॥
हम मोक्ष महाफल पाने को, यह श्रेष्ठ सरस फल लाए हैं।
जो है शाश्वत फल अविनाशी, वह फल पाने हम आए हैं॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ भाव की ज्वाला यह, सदियों से जलती आई है।
उसमें ही जलते रहे सदा, चेतन की सुधि न पाई है॥
यह वसु द्रव्यों का अर्घ्य बना, वसु गुण प्रगटाने आए हैं।
पाने अनर्घ अविनाशी पद, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिधारा दे रहे, लेकर निर्मल नीर।
यही भावना है विशद, मिटे जगत की पीर॥

शान्तये शांतिधारा...

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, खिले पुष्प ले हाथ।
झुका रहे जिन पाद में, भाव सहित हम माथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रत्येकार्घ्य

दोहा- प्राप्त किए गुण सिद्ध ने, अनुपम अचल महान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करते हैं गुणगान॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सिद्धों के 8 मूलगुण)

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया ज्ञान अनंत।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥1॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अनंतज्ञानगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, दर्शन पाए आप अनंत।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥2॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अनंतदर्शनगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय का नाश किए फिर, पाए अव्याबाध स्वरूप।
परम सिद्ध परमेष्ठी जिन के, पद में झुकते हैं शत् भूप॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥3॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अव्याबाधत्वगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय मोहित करता है, उसका भी जो घात किए।
परम सिद्ध परमेष्ठी बनकर, सुख अनंत को प्राप्त किए॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥4॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अनंतसुखगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म के भेद चार हैं, उसका आप विनाश किए।
अवगाहन गुण पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥5॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अवगाहनत्वगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के भेद अनेकों, उनका प्रभु विनाश किए।
सूक्ष्मत्व गुण प्रगटाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥6॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने सूक्ष्मत्वगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से जग के प्राणी, उच्च नीच पद पाते हैं।
अगुरुलघु गुण गोत्र कर्म के, नाश किए प्रगटाते हैं॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥7॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अगुरुलघुत्वगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्मों का कर्त्ता, विघ्न डालता कई प्रकार।
वीर्यानन्त के धारी जिनको, वंदन मेरा बारम्बार॥
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए॥8॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अनंतवीर्यत्वगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सिद्धों के हैं आठ गुण, सिद्ध शिला पर वास।
जिन सिद्धों को पूजकर, पाऊँ मोक्ष निवास॥

ॐ ह्रीं सिद्ध परमेष्ठिने अष्टगुणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

दोहा- अविनाशी पद प्राप्त कर, बने सिद्ध भगवान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण॥

(शम्भू छन्द)

सिद्ध प्रसिद्ध रहे इस जग में, जो अनन्त गुणवान कहे।
भक्तों के आराध्य कहाए, सिद्धि दायक नाथ रहे॥
चतुर्गति में जीव रहे जो, सब निगोद से आते हैं।
गतियों में जा जाकर सारे, दुःख अनेकों पाते हैं॥
पुण्य उदय से नर गति पाई, गुरुओं ने संदेश दिया।
शिक्षा दीक्षा पाकर अनुपम, संयम व्रत को धार लिया॥
अनुप्रेक्षा का चिंतन करके, निज स्वभाव को ध्याया है।
सम्यक् श्रद्धा को प्रगटाकर, वीतराग पद पाया है॥

शीत ऋतु में सरिता तट पर, शीत योग को धारा है।
ग्रीष्म ऋतु में आतापन शुभ, तुमने योग सम्हारा है॥
वृक्ष मूल वर्षा में जाकर, योग धारकर खड़े रहे।
ध्यान योग में लीन रहे तब, मुनिवर परिषह कई सहे॥
धर्म ध्यान अरु शुक्ल ध्यान से, कर्मों का कीन्हा संहार।
जड़-चेतन उपसर्ग सहनकर, पाया है आतम का सार॥
जड़ को जड़ चेतन को चेतन, तभी समझ में आया है।
शुद्ध ध्यान करके आतम का, निज स्वरूप को पाया है॥
कर्मों की शक्ति हीन हुई जब, तप ने जोर दिखाया है।
कर्मों के भू का हनन हुआ, न चली कोई भी माया है॥
क्षायिक श्रेणी पर चढ़कर के, फिर विशद ज्ञान को प्रगटाया।
इन्द्रों ने चरणों में आकर, जयकारा प्रभु का लगवाया॥
शुभ समवशरण बनता प्रभु का, सौ इन्द्र वहाँ पर आते हैं।
पूजा अर्चा वन्दन करते, नत हो चरणों झुक जाते हैं॥
फिर ॐकारमय दिव्य ध्वनि, खिरती जिनेन्द्र की मंगलमय।
सुनकर जीवों में हर्ष बढ़े, होता है कई कर्मों का क्षय॥
हो आयु कर्म का अन्त समय, फिर समुद्घात करते स्वामी।
फिर शेष कर्म का नाश किए, बन जाते प्रभु अन्तर्यामी॥
शास्वत स्वाश्रित सुख पाकर के, प्रभु गुणानन्त को पाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं॥

दोहा- अन्तिम है यह भावना, ज्ञान कली खिल जाय।
सिद्धों का गुणगान कर, सिद्ध श्री मिल जाय॥

ॐ ह्रीं सम्मत्तणाणादिअट्ठगुणसंजुत्तसिद्धेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- काम धाम को त्याग कर, हो जाएँ निष्काम।
सिद्धों के पद में विशद, बारम्बार प्रणाम॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

द्वितीय पूजा

स्थापना

सम्यक् श्रद्धा ज्ञान जगाने, नाथ शरण में आए हैं।
शुभ भावों के पुष्प संजोकर, तव चरणों में लाए हैं॥
सिद्ध सनातन हो स्वामी तुम, हमने गुरुओं से जाना है।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, हमको भी वह पद पाना है॥
हम आश लिए द्वारे आये, विश्वास है प्रभु तुम आओगे।
हम भक्त आपके हैं स्वामी, हमको भी सिद्ध बनाओगे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिनः षोडशगुणसंयुक्ता अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

हम निज अनुभव का निर्मल जल, पाने प्रभु पद में आए हैं।
यह जन्म मरण का रोग नशे, प्रभु नीर चढ़ाने लाए हैं॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ निजानन्द का शीतल चंदन, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
हम भव संताप नशाकर जीवन, सफल बनाने आए हैं॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अक्षत धोकर निज गुण के, हम अर्चा करने लाए हैं।
हम अक्षय पद पाने को अनुपम, जिन चरणों में आए हैं॥

तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम स्याद्वाद वाणी के मनहर, विविध पुष्प यह लाए हैं।
अब कामबाण विध्वंश हेतु प्रभु, पूजा करने आए हैं॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अनेकान्त के यह अनेक, नैवेद्य बनाकर लाए हैं।
प्रभु क्षुधा रोग हो नाश हमारा, चरण शरण में आए हैं॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य शक्ति रोशन करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम मोह महा मिथ्या कलंक, अति शीघ्र नशाने आए हैं॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन के गुण प्रगटित करने, यह धूप जलाने लाए हैं।
अब अष्ट कर्म हों नष्ट हमारे, विशद भावना भाए हैं॥

तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पाने हम चेतन की निधियाँ, यह श्रेष्ठ सरस फल लाए हैं।
अब मोक्ष महाफल हमें प्राप्त हो, शरण आपकी आए हैं॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम अनर्घ गुण आतम के, वह प्राप्त नहीं कर पाए हैं।
अब पद अनर्घ के हेतु हम, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, तव पद में शीश झुकाते हैं।
हम भी सिद्धों में मिल जाएँ, नित यही भावना भाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अनन्तदर्शनानन्तज्ञानादि गुणसंयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

दोहा– सोलह अर्घ्यों से यहाँ, सिद्धों का गुणगान।
पुष्पाञ्जलि लेकर विशद, करते यहाँ महान॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत

सोलह गुण सहित सिद्धों के अर्घ

जो ज्ञान सुगुण को ढक लेता, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
इस कारण जीव अनादि से, भव सागर में ही भटक रहा॥

कर ज्ञानावरणी कर्म शमन, प्रभु ज्ञान अनन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्शन गुण का घात करे, वह दर्शन आवरणी जानो।
यह कर्म महा दुःखदायी है, इसको भी तुम कम न मानो॥
यह कर्म नाश कर सिद्ध प्रभु, शुभ दर्शानन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख–दुःख के वेदन का कारण, यह कर्म वेदनीय होता है।
सुख में तो हँसता है लेकिन, दुःख आने पर नर रोता है॥
प्रभु कर्म वेदनीय नाश किए, गुण अव्याबाध उपाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह महा बलशाली है, इसने दो रूप बनाए हैं।
दर्शन चरित्र दोनों गुण में, यह अपनी रोक लगाए है॥
मोह कर्म का नाश किए, सम्यक्त्व सुगुण प्रगटाए है।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

है बन्धन आयु कर्म महा, चारों गतियों में कैद करे।
वह उठा पटक करता रहता, प्राणी की शक्ति पूर्ण हरे॥
प्रभु आयु कर्म विनाश किए, गुण अवगाहन शुभ पाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं अवगाहन गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है शिल्पकार सम नाम कर्म, जो नाना रूप बनाता है।
ज्यों खेल खिलौना पाने को, बालक का मन ललचाता है॥
कर नाम कर्म का नाश प्रभु, सूक्ष्मत्व सुगुण उपजाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥6॥

ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्मत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ऊँच-नीच का कारण है, जग में कटुता का काम करे।
जो अरति ईर्ष्या का कारण, जीवों को कष्ट प्रदान करे॥
कर गोत्र कर्म का नाश प्रभु, गुण अगुरुलघु जिन पाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥7॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघु गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कदम-कदम पर विघ्न करे, वह अन्तराय दुःखदाई है।
शान्ति को क्षीण करे प्रतिपल, यह कर्म की ही प्रभुताई है॥
प्रभु अन्तराय का नाश किए, फिर वीर्यानन्त जगाए हैं।
चरणों में वन्दन हम करते, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥8॥

ॐ ह्रीं अतुलवीर्य गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

अचल मेरु सम रहने वाले, गमन कभी न करने वाले।
गमनागमन कभी न पावें, जिन स्वभाव में जो रम जावें॥
कर्म नाश कर शिव पद पाए, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं अचलत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा रोग जग में दुःखकारी, उससे पीड़ित जगती सारी।
अजर जरा को हरने वाले, स्वयं सिद्ध गुण के रखवाले॥
कर्म नाश कर शिव पद पाए, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥10॥

ॐ ह्रीं अजरत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यम के दूत सामने आवें, मृत्यु बनकर जो ले जावें।
अमर आप मृत्यु के जेता, तीन लोक में कर्म विजेता॥
कर्म नाश कर शिव पद पाए, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥11॥

ॐ ह्रीं अमरत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे पावन गुण आ जावें, श्रुत ज्ञानी वह जान न पावें।
चक्षु से न दिखते भाई, महिमा सिद्धों की जिन गाई॥

अप्रमेय गुण प्रभु जी, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥12॥

ॐ ह्रीं अप्रमेयत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्री मन पुद्गल मय जानो, इनसे रहित सिद्ध को मानो।
पराधीन इन्द्रिय के धारी, सिद्ध अतीन्द्रिय हैं अविकारी॥
कर्म नाश कर शिव पद पाए, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥13॥

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियोत्सव गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को वेद लुभाते भाई, होते हैं जग में दुःखदायी।
आकुल व्याकुलता उपजाए, सिद्ध वेद से रहित कहाए॥
कर्म नाश कर शिव पद पाए, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥14॥

ॐ ह्रीं अवेदत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन ज्ञानवान कहलाया, जल में शीतलता वत् गाया।
जो अभेद गुण पाने वाले, इस जग से हैं सिद्ध निराले॥
कर्म नाश कर शिव पद पाए, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥15॥

ॐ ह्रीं अभेदत्व गुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजाधीन रहते अविकारी, सिद्ध सनातन मंगलकारी।
चेतन गुण के जो रखवाले, निजानन्द में रमने वाले॥
कर्म नाश कर शिव पद पाए, निज स्वभाव अपना प्रगटाए।
सिद्धों के हम भी गुण गाएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ॥16॥

ॐ ह्रीं निजाधीन जिनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

दोहा- ज्ञान शरीरी बन गये, पाया ज्ञान अनन्त।
जयमाला गाते विशद, पाने भव का अन्त॥

चौपाई

सिद्धों की महिमा है न्यारी, कर्म नाश होते अविकारी।
अपने आठों कर्म विनाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे॥1॥
नित्य निरन्जन जो अविनाशी, प्रभु हैं सिद्ध शिला के वासी।
शुद्ध बुद्ध हैं मंगलकारी, महिमा जिनकी विस्मयकारी॥2॥
हैं अखण्ड अविचल शिवकारी, सर्व लोक में अतिशयकारी।
गुण अनन्त तुमने प्रगटाए, रत्नत्रय का फल प्रभु पाए॥3॥
ज्ञान शरीरी प्रभु कहलाए, प्रभु जी शास्वत सुख उपजाए।
निज स्वभाव में रहते स्वामी, त्रिभुवन पति हैं अन्तर्यामी॥4॥
जो हैं सिद्ध शिला के वासी, हैं अखण्ड गुणमय अविनाशी।
प्रभु अकलंक अमल अविकारी, श्रेष्ठ गुणाश्रित हैं शुभकारी॥5॥
प्रभु ने आठों कर्म नशाए, अष्ट मूलगुण तव प्रगटाए।
किन्चित न्यून देह से स्वामी, अन्त में जो पाए जगनामी॥6॥
अविचल अव्याबाध अरूपी, चिदानन्द चैतन्य स्वरूपी।
बाल वृद्ध न तुच्छ कहावें, जन्म-जरा-मृत्यु न पावें॥7॥
स्वेद खेद से हीन कहाए, पुण्य-पाप से हीन बताए।
योग भोग न शोक है भाई, विश्वनाथ हैं जग सुखदायी॥8॥
रोग शोक न जिन्हें सताए, बन्ध मोक्ष से हीन कहाए।
रहित कषायों से हैं भाई, रागादि नाशे दुःखदायी॥9॥
चिंता चिता समान बताई, जिससे हीन रहे प्रभु भाई।
चतुर्गति का चक्र नशाए, चिदानन्द अनुभव जो पाए॥10॥

दोहा- गुण निधि गुणकर हे प्रभो, गुण अनन्त के धाम।
निजगुण पाने के लिए, करते विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनज्ञानादिषोडशगुणयुक्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सिद्ध अनन्तानन्त हैं, अविनाशी अविकार।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, पाने भव से पार॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तृतीय पूजा

स्थापना

हे नित्य निरंजन अविकारी !, हे ज्ञाता दृष्टा सिद्ध महान !।
हे अविनाशी ज्ञायक स्वरूप !, हे ज्ञान शरीरी तेजवान !॥
हे अक्षय निधि शाश्वत ललाम !, हे सिद्ध सनातन मोक्ष धाम !।
हम विशद हृदय में आह्वानन, करते हैं करके पद प्रणाम॥
हे गुण अनन्त के धारी जिन !, मेरे अन्तर में वास करो !।
अज्ञान तिमिर जो छाया है, अब उसका पूर्ण विनाश करो !॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिनः द्वात्रिंशत गुणसंयुक्त अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

हमने सदियों से जल पीकर, इस तन की प्यास बुझाई है।
किन्तु चेतन की प्यास कभी, न शांत पूर्ण हो पाई है॥
अब जन्म-मृत्यु का रोग नशे, हम निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज, में सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगाहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन के लेपन से, यह तन शीतल हो जाता है।
किन्तु शीतलता यह चेतन, न जरा प्राप्त कर पाता है॥
अब भव सन्ताप नशाने को, यह चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज, में सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगाहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चतुर्गति भटकाए हैं, अक्षय निधि न मिल पाई है।
है अक्षय मेरा धाम श्रेष्ठ, न उसकी सुधि भी आई है॥
अब अक्षय धाम प्राप्त करने, यह अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज, में सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से पीड़ित हो, भव के भोगों में लीन रहे।
भव के भोगों को पाने में, हमने अनगिनते कष्ट सहे॥
अब काम व्यथा के नाश हेतु, यह सुरभित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज, में सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन खाकर के हमने कई, इस तन को पुष्ट बनाया है।
न भोग किया निज चेतन का, न योग शुद्ध हो पाया है॥
अब क्षुधा रोग हो पूर्ण नाश, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज में, सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने मोहित हो सदियों से, सारे जग को अपनाया है।
अज्ञान तिमिर में भ्रमित हुए, न ज्ञान दीप जल पाया है॥
अब मोह महातम नाश हेतु, यह मणिमय दीप जलाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज, में सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का बंध पड़ा भारी, जो बन्धन डाले रहते हैं।
यह जीव रहें जब तक जग में, घन घातकर्म का सहते हैं॥
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु यह, सुरभित धूप जलाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज में, सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की आशा में भ्रमण किया, न क्षेत्र कोई अविशेष रहा।
फल पाया हमने नाशवान, फिर पछताना ही शेष रहा॥
अब मोक्ष महाफल पाने को, फल ताजे सरस चढ़ाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज, में सादर शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मूल्यवान कोई वस्तु, हमने इस जग की पाई है।
न प्राप्त हुई शायद कोई, फिर भी शक्ति अजमाई है॥
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम जिन सिद्धों के पद पंकज, में सादर शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं द्वात्रिंशत गुणसंयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

32 गुण सहित सिद्धों के अर्घ्य

दोहा– मंगलमय मंगल परम, मंगलमय भगवान।
मंगलमय पुष्पाञ्जलि, से करते गुणवान॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चाल छन्द)

चित् स्वभाव के धारी, चेतन जो मंगलकारी।
सद्दर्शन क्षायिक पाए, स्वभाविक गुण प्रगटाए॥
तुमने सब कर्म नशाए, शुभ अष्ट सुगुण प्रगटाए।
हम जिन गुण पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धचेतनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न चार ज्ञान रह पाए, जब क्षायिक ज्ञान जगाए।
है ज्ञानमयी अविकारी, आतम विशुद्ध शिवकारी॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चेतन है चिद्रूपी, ज्ञायक आनन्द स्वरूपी।
जो निज स्वभाव में रहते, पर भावों में न बहते॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धचिद्रूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का जाल हटाया, न चली कर्म की माया।
अनुपम जो शुद्ध स्वरूपी, पुद्गल से भिन्न अरूपी॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो राग-द्वेष के त्यागी, चैतन्य गुणों के भागी।
है परम शुद्ध निज ध्यानी, शुभ वीतराग विज्ञानी॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमशुद्धस्वरूपभाषाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधाएँ कितनी आएँ, पर उनसे न घबड़ाएँ।
वह शुद्ध सुदृढ़ता धारी, पाते शिवपद अविकारी॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धदृढ़ाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवर्त कर्म के भारी, सब नाशे जिन शिवकारी।
हैं शुद्धावर्तक स्वामी, इस जग में अन्तर्यामी॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धावर्तकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम रस मन को भाया, तप करके ध्यान लगाया।
जिन निर्मल ज्ञान जगाए, प्रभु शुद्ध स्वयंभू गाए॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धस्वयंभुवे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन वच तन को साधें, चैतन्य प्रभु आराधें।
वह शुद्ध योग के धारी, परमेष्ठी हैं अविकारी॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धयोगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम कर्म मतवाला, इस तन को रचने वाला।
प्रभु जाति कर्म नशाए, तब शुद्ध जात कहलाए॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धजाताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शुद्ध सुतप अपनाए, तप कर सब कर्म नशाए।
निज आत्म रसिक कहलाए, अविकारी शिवपद पाए॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धतपसे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्णादि नहीं रह पाए, प्रभु जी अमूर्त कहलाए।
हैं शुद्ध मूर्ति के धारी, संस्थान रहित शुभकारी॥
सिद्धों की महिमा न्यारी, इस जग में मंगलकारी।
हम शिव पद पाने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धमूर्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छन्द)

जो ममता मोह के त्यागी हैं, जिन आत्म रसिक बड़भागी हैं।
जो निज पुरुषार्थ जगाए हैं, तव शुद्ध सुखों को पाए हैं॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षमा आदि पुरुषार्थ अरे, धारण जो यह पुरुषार्थ करे।
वह शुद्ध पौरुषी कहलाए, पुरुषार्थ मोक्ष वह भी पाए॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धपौरुषाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल परमाणु को छोड़ा, नो कर्मों से नाता तोड़ा।
प्रभु शुद्ध शरीरी जिन स्वामी, बन गये आप अन्तर्यामी॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धशरीराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुद्ध ज्ञान चेतनधारी, जो शुद्ध प्रमेय हैं अविकारी।
हे ज्ञाता ज्ञानस्वरूप महाँ, शुभ चिन्मय हैं चिद्रूप अहा॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धप्रमेयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब शुद्धोपयोग प्रभु पाए, तब परम विशुद्धी प्रगटाए।
प्रभु शुद्ध चेतना को ध्याये, तव जिन स्वरूप को दर्शाए॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धोपयोगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन निजानन्द रस भोगी हैं, शुभ निर्विकल्प उपयोगी हैं।
प्रभु शुद्ध भोग को पाया है, निज चेतन रस प्रगटाया है॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धभोगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग का अवलोकन करते हैं, जो राग-द्वेष न वरते हैं।
निज का अवलोकन करते हैं, सारे विकार जो हरते हैं॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धावलोकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्या शुक्ल ध्यान की अग्नि है, जो कर्मों को दावाग्नि है।
प्रभु सारे कर्म जलाए हैं, चिन्मय स्वरूप प्रगटाए हैं॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धप्रज्वलितशुक्लध्यानाग्निजिनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आदि अन्त से रहित कहे, प्रभु शुद्ध द्रव्य स्वरूप रहे ।
स्वयंसिद्ध परमातम गाये, शुद्ध निपात रूप कहलाए॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धनिपाताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गर्भ कल्याणक जो पाए, फिर शुद्ध गर्भधर कहलाए।
प्रभु बने सूक्ष्म गुण के धारी, मंगलमय शुभ मंगलकारी॥
अक्षय अखण्ड अविनाशी हैं, जो मोक्ष महल के वासी हैं।
उन सिद्धों को हम ध्याते हैं, वन्दन को पद में आते हैं॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धगर्भाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

सिद्ध शिला अतिशय पावन, सिद्धों का है स्थान महाँ।
है शुद्धावास जहाँ अनुपम, निज में रत रहते सिद्ध जहाँ॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धवासाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बाह्याभ्यन्तर शुद्ध रहे, जिनका विशुद्ध आवास परम।
हम उनकी महिमा गाते हैं, जिनने प्रगटाया परम धरम॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशुद्धपरमवासाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अविकारी हैं अनुपम, जो शुद्ध बुद्ध हैं निराकार।
परमातम हैं जो शुद्ध परम, निज में रत रहते निराधार॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धपरमात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा का पार नहीं जिनकी, हैं शुद्ध अनन्त सुगुण धारी।
रहते हैं निज में लीन विशद, जो मंगलमय मंगलकारी॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धअनन्त गुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे प्रदेश हैं शुद्ध शांत, महिमा का जिनकी पार नहीं।
खोजा है हमने इस जग में, किन्तु न पाए और कहीं॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धशांताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा जिन सिद्ध प्रभु, हैं शुद्ध वेद जिनवर स्वामी।
निज का वेदन करने वाले, त्रैलोक्य पति अन्तर्यामी॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धविदंताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों पापों को, जिनने समूल ही नाश किया।
बन शुद्ध ज्योति जिन सिद्धों ने, निज के स्वरूप में वास किया॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धज्योतिर्जिनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कामबाण का नाश किए, निर्वाण सुखों को पाए हैं।
संसार वास को छोड़ चले, शिवपुर में धाम बनाए हैं॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धनिर्वाणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गर्भ जन्म का अन्त किए, संदर्भ गर्भ अनुपम पाए।
अब सिद्ध शिला पर जन्म लिए, शास्वत सुजन्म प्रभु प्रगटाए॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धसंदर्भगर्भाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन शुद्ध शांत शिवपद धारी, जन-जन को शांति प्रदान करें।
निज में रहकर भी सिद्ध लीन, जग में जीवों के कष्ट हरें॥
हम सिद्ध शुद्ध अविनाशी जिन, श्री सिद्धों के गुण गाते हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, पद सादर शीश झुकाते हैं॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धशांताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस गुण के साथ शुभ, किया यहाँ गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने पद निर्वाण ॥33॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदगुण संयुक्ताय सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

दोहा– सिद्धों के गुण सिद्ध पद, पाने पर हों प्राप्त।
जयमाला गाते यहाँ, बनने हम भी आप्त॥

(शम्भू छन्द)

जिन सिद्ध अनन्तानन्त कहे, जिनका शिवपुर में वास अहा।
जो जगतपति हैं परमेश्वर, जिनका जग में विश्वास रहा॥
यह लोक अनादि है अनन्त, इसका तो कोई अन्त नहीं।
हैं जीव अनन्तानन्त यहाँ, जिनका दिखता न अंत कहीं॥1॥
रहते निगोद में जीव सभी, कई दुःख सहकर के आते हैं।
हो जाए निगोद वास पूरण, फिर चतुर्गति भरमाते हैं॥
मानव गति पाना है दुर्लभ, उत्तम कुल पाना सुलभ नहीं।
पञ्चेन्द्रिय मन पाना दुर्लभ, दुर्लभ जानो श्रद्धान कहीं॥2॥
दुर्लभ शिक्षा दीक्षा पाना, संयम को पाना कठिन रहा।
अतिचार रहित संयम पालन, दुर्लभ से दुर्लभ अति कहा॥
शुभ पञ्चमहाव्रत गुप्ति त्रय, जो पञ्च समीति को पाये।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, कर विशद भावना को भाये॥3॥
सर्दी में सरिता के तट पर, चिन्तन में चित्त लगाते हैं।
सम्यक् तप करने हेतु शुभ, गर्मी में गिरि पर जाते हैं॥
वर्षा में वृक्षों के नीचे, निज आतम को ही ध्याते हैं।
सम्यक् त्रय योगों के द्वारा, कर्मों की फौज भगाते हैं॥4॥
जड़ चेतन का अन्तर जिनने, स्पष्ट रूप से जाना है।
चेतन की शक्ति है अनुपम, उसको जिनने पहिचाना है॥
शुभ ध्यान में रहते लीन सदा, आतम की शुद्धि करते हैं।
करते हैं शुद्ध ध्यान अनुपम, कर्मों के निर्झर झरते हैं॥5॥

शुभ धर्म ध्यान में रत रहते, फिर शुक्ल ध्यान प्रगटाते हैं।
उपसर्ग परीषह सहते हैं, निर्ग्रन्थ मार्ग अपनाते हैं॥
फिर क्षायिक श्रेणी पर चढ़कर, निज मोहकर्म का नाश करें।
कर कर्म घातिया नाश पूर्ण, शुभ केवलज्ञान प्रकाश करें॥6॥
फिर आयु पूर्ण हो जाने पर, कोई समुद्घात भी करते हैं।
जो रहे अघाती कर्म सभी, वह अन्तरमुहूर्त्त में हरते हैं॥
फिर सिद्ध शिला के स्वामी बनकर, ज्ञान शरीरी हों भगवान।
उनके विशद गुणों को पाने, करते हैं हम भी गुणगान॥7॥

दोहा– सिद्धों की कर वन्दना, प्राणी बनते सिद्ध।
करते हैं हम अर्चना, जो हैं जगत प्रसिद्ध॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नमः द्वात्रिंशतगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परमेष्ठी जिन सिद्ध का, करते हम गुणगान।
शीश झुकाते पद युगल, पाने पद निर्वाण॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

चतुर्थ वलय पूजा

स्थापना

रेफ बिन्दु युत ऊर्ध्व अधो 'र', बीजाक्षर शुभ रहा हकार॥
अकारादि स्वर युक्त कर्णिका, वर्ग युक्त वसु दल शुभकार।
मंत्र अनाहत अग्रभाग में, घेरा ह्रीं किए मनहार।
सिद्ध चक्र का आह्वानन कर, पूजा करते मंगलकार॥
सुर नर मुनिवर सिद्ध यंत्र का, विशद भाव से करते ध्यान।
सिंह हिरण को गरुड़ नाग को, यंत्र कर्म को रहा महान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिनः चतुःषष्ठिगुणसंयुक्त सहित अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द : रेखता)

नीर का कलशा लिया भराय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन लिया घिसाय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल अक्षत का लिया भराय, प्रभु के पद में दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प हाथों में ले शुभकार, अर्चना करते बारम्बार।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस नैवेद्य बनाए आज, चढ़ाने लाए हम जिनराज।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घी का लिया प्रजाल, वन्दना करते विशद त्रिकाल॥
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित लाये धूप महान, नशाएँ आठों कर्म प्रधान।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ महान, मोक्ष फल पाएँ हम भगवान।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं चतुःषष्ठिगुणसंयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

64 गुणयुत सिद्धों के अर्घ्य

दोहा- **सर्व ऋद्धियाँ प्राप्त कर, बने सिद्ध भगवान।**
पूजा कर पुष्पाञ्जलि, करते यहाँ महान॥

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

'णमो जिणाणं' श्री जिनेन्द्र को, विशद भाव से करूँ नमन्।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, श्री जिनेन्द्र को शत् वन्दन।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हंत्‌जिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो ओहि जिणाणं' कहकर, अवधि ज्ञान का करूँ मनन।
अवधि ज्ञान के धारी मुनिवर, के चरणों में हो वन्दन।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं अवधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहकर 'णमो परमोहि जिणाणं', परमावधि का होय यतन।
परम साधना करने वाले, मुनि के चरणों में वन्दन।।

सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं परमावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बोल 'णमो सव्वोहि जिणाणं' सर्वावधि पाये जो ज्ञान।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, सर्व लोक में रहे महान्।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं सर्वावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं', की महिमा है अपरम्पार।
श्रेष्ठ ज्ञान धारी मुनि पद में, वन्दन मेरा बारम्बार।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं अनन्तावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो कोट्ठ बुद्धीणं' पद से, कोट्ठ बुद्धि धारी जिन संत।
उनके चरणों में वन्दन कर, हो जाए कर्मों का अंत।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो बीज बुद्धीणं' पद में, बीज बुद्धि ऋद्धि धारी।
श्रेष्ठ साधना करते मुनिवर, मन से होकर अविकारी।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो पदाणुसारीणं' पदाणु सारिणी ऋद्धिवान।
तप बल से यह ऋद्धि पाते, स्वयं जगाते हैं उपमान।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं पदानुसारणीऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो संभिन्न सोदारणं', सभिन्न श्रोतृत्व के धारी।
उनको चरणों वन्दन करते, हम भी होकर अविकारी।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो सयं बुद्धाणं' कहकर, स्वयंबुद्ध ऋद्धि धारी।
मुनिवर के चरणों में वन्दन, करते हम मंगलकारी।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१०।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो पत्तेय बुद्धाणं' कहकर, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि पाऊँ।
श्रेष्ठ साधना करूँ भाव से, मोक्ष महल को मैं जाऊँ।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।११।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो बोहिय बुद्धाणं' कहते, बोधि पाने हेतु महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उनका हम करते गुणगान।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१२।।

ॐ ह्रीं बोधबुद्धिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो उजु मदीणं' कहके, ऋजु मति मनःपर्यय ज्ञान।
परम साधना करने वाले, पा जाते है सम्यक् ज्ञान।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१३।।

ॐ ह्रीं ऋजुमतिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहके 'णमो विउल मदीणं', विपुल मति पा लेते ज्ञान ।
आतम ध्यान लगाने वाले, पा जाते हैं केवल ज्ञान।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१४।।

ॐ ह्रीं विपुलमतिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो दश पुव्वीणं' कह, दश पूर्वों का पाऊँ ज्ञान ।
विशद भाव से जिन मुद्रा का, करता रहूँ नित्य मैं ध्यान।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१५।।

ॐ ह्रीं दशपूर्वऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो चउदश पुव्वीणं', चौदह पूर्वों के धारी ।
मुनिवर की शुभ करें वन्दना, होकर हम भी अविकारी।।
सिद्धों की हम यहाँ भाव से, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।१६।।

ॐ ह्रीं चौदहपूर्वऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

णमो अट्ठंग महा, निमित्त कुसलाणं जानिए।
महा निमित्तक ज्ञान, मुनिवर पाते मानिए।।
करते हैं कर जोर, वन्दन उनके चरण में ।
होके भाव विभोर, शिव पद पाने के लिए।।१७।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्तऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

णमो विउव्व इड्ढि पत्ताणं, ऋद्धिधर स्वामी।
ऋद्धि सिद्धि का दान हमें दो, मुक्ति पथ गामी।।
जिनेश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ।। १८।।

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्याउँ 'णमो विज्जाहराणं', ऋद्धि महा नामी।
इसको पाने वाला बनता, मुक्ति पथ गामी।।
जिनेश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ।।१९।।

ॐ ह्रीं विज्जाहरणऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो चारणाणं' ऋद्धिधर, हैं त्रिभुवन नामी ।
उनकी भक्ति करने वाला, हो उसका स्वामी।।
जिनेश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ।।२०।।

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो आगास गामीणं' वाले, ऋद्धि के स्वामी।
गगन गमन करते है भाई, मुक्ति पथगामी।।
जिनेश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ।।२१।।

ॐ ह्रीं आकाशगामिनीऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो पण्ण समणाणं' जानो, मुक्ति पथ गामी।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, हैं त्रिभुवन नामी ।।
जिनेश्वर हे अन्तर्यामी !
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी ।।२२।।

ॐ ह्रीं परामर्शऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो आसी विसाणं' ऋद्धि, मुनिवर ने पाई।
श्रेष्ठ ऋद्धि को धार गुरू ने, प्रभुता दिखलाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।२३।।

ॐ ह्रीं आशीनिर्विषऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो दिट्ठी विसाणं', ऋद्धि मुनिवर ने पाई।
मरण देखते होय जीव का, देखें न भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।२४।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो उग्ग तवाणं' जानो, ऋद्धि यह भाई।
उग्र तपों को पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।२५।।

ॐ ह्रीं उग्रतपऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धि से, मुनीवर भाई।
दीप्त तपों को अतिशय तपते, मुनीवर सुखदायी।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।२६।।

ॐ ह्रीं दीप्ततपऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धि, से ऋषिवर भाई।
कठिन-कठिन तप करके मुनिवर, अतिशय दिखलाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।२७।।

ॐ ह्रीं तप्त तपऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो महा तवाणं' ऋद्धि, पाकर के भाई।
उत्तम से उत्तम तप तपते, हैं ऋषि सुखदायी।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।२८।।

ॐ ह्रीं महातपऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो घोर तवाणं' ऋद्धि, ऋषिवर जो पाई।
घोर परीषह सहकर भी मुनि, तप करते भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।२९।।

ॐ ह्रीं घोरतपऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो घोर गुणाणं' जानो, ऋद्धि सुखदायी।
श्रेष्ठ गुणों को पाते ऋषिवर, ऋद्धि यह पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।३०।।

ॐ ह्रीं घोरगुणऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो घोर परक्कमाणं' यह, ऋद्धि सुखदायी।
घोर पराक्रम पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।३१।।

ॐ ह्रीं पराक्रमऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो घोर गुण बंभयारीणं', ऋद्धिधार भाई।
घोर ब्रह्मचर्य पालन करते, अतिशय सुखदायी ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदाई ।।३२।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल-छन्द

'णमो आमोसहि पत्ताणं' बोल बोल मैटो सब गम।
आमर्षौषधि के धारी, ऋषिवर जग में उपकारी।।
प्रभु की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३३।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं', ऋद्धि पाकर मैटो गम।
थूक लार मुख के न्यारे, रोग नशाते हैं सारे।।
प्रभु की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३४।।

ॐ ह्रीं अमौषधऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो जल्लोसहि पत्ताणं' मोह त्याग कर धारो सम।
ऋषि के तन का जल्ल अहा, रोग मैटता पूर्ण रहा।।
प्रभु की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३५।।

ॐ ह्रीं जलौषधऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो विप्पोसहि पत्ताणं', ऋद्धि होती है सक्षम।
मल औषधि बन जाता है, सारे रोग नशाता है।।
प्रभु की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।३६।।

ॐ ह्रीं मलौषधिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो सव्वोसहि पत्ताणं' पाते हैं जो धारे यम।
सर्वोषधि ऋद्धि धारी, व्याधि मैटते है सारी।।
प्रभु की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।। ३७।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर -छन्द

'णमो मण बलीणं' यह, ऋद्धि पाए हैं।
मन बल से श्रेष्ठ ऋद्धि, ऋषिवर जगाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।। ३८।।

ॐ ह्रीं मनोबलऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो वचि बलीणं', यह ऋद्धि जानिए।
वचनों में शक्ति मिलती, ऋषि को ये मानिए ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।। ३९।।

ॐ ह्रीं वचनबलऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो काय बलीणं', इस ऋद्धि के धनी।
पाते हैं मुनि शक्ती, ऋद्धि से अति धनी।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से ।। ४०।।

ॐ ह्रीं कायबलऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो खीर सवीणं', यह ऋद्धि जो पाए।
रुखा आहार कर में, शुभ क्षीर सा बनाए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४१।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्राविऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो सप्पि सवीणं', इस ऋद्धि के धारी ।
रुखा आहार पाते, शुभ घृत सम भारी ।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४२।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावीऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो महुर सवीणं' यह ऋद्धि जानिए।
मधुर आहार रुक्ष भी, हो जाए मानिए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४३।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावीऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो अमिय सवीणं', यह ऋद्धि पाए हैं।
आहार रुक्ष अमृत, जैसा बनाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।४४।।

ॐ ह्रीं अमृतरसऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्या -छन्द

'णमो अक्खीण महाणसाणं', यह ऋद्धि है अतिशयकारी।
कमें नहीं आहार जहाँ पर, भोजन लेवें अनगारी।।
जिन सिद्धों की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।। ४५ ।।

ॐ ह्रीं अक्षीणरसऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो बड्ढमाणाणं' यह, ऋद्धि मुनिवर ने पाई।
केवल ज्ञान प्राप्त होने तक, ऋद्धि बढ़ती सुखदायी।।
जिन सिद्धों की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४६।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ॐ णमो सिद्धायदणाणं' यह, ऋद्धि ऋषिवर जी पाते ।
सिद्धायतन के दर्शन मुनि को, बैठे-बैठे हो जाते।।
जिन सिद्धों की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४७।।

ॐ ह्रीं सिद्धायतनऋद्धिजिनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णमो भयवदोमहदि महावीर बड्ढमाण', बुद्ध ऋषि जानो।
वर्द्धमान महावीर प्रभु सम, बन जाते हैं ऋषि मानो।।
जिन सिद्धों की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।४८।।

ॐ ह्रीं वर्द्धमानसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द- स्रग्विणी)

मन वचन काय त्रय योग को रोधकर, निज स्वभावी प्रभु सिद्ध योगी बने।
ध्यान करके परम शुक्ल जिन श्रेष्ठतम, कर्म अपने स्वयं सिद्ध आठों हने।।49।।

ॐ ह्रीं णमो योग सिद्धाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्येय निज को बना ध्यान कर आपने, ध्येय अपना विशद सिद्ध भी कर लिया।
लोक के शीश पर जाके ठहरे हैं अब, निज गुणों का स्वयं सौख्य अमृत पिया।।50।।

ॐ ह्रीं ध्येय सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अनादि सभी कर्म को नाशकर, शिव सदन में सभी सिद्ध पहुँचे अहा।
लीन होके स्वयं अपने स्वभाव में, अपने गुण प्राप्त करना ही लक्षण रहा।।51।।

ॐ ह्रीं सव्वसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर रहे आप कल्याण पर का तथा, आप कल्याणमय इस जग में रहे।
स्वस्ति हों सिद्ध जिन स्वयं ही लोक में, स्व परोपकारी अतः आप सबके कहे।।52।।

ॐ ह्रीं स्वस्ति सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घाति नशाए प्रभु पूर्णतः ज्ञान केवल प्रकट कर अर्हं पद लिया।
प्राप्त करके चतुष्टय बने आप जिन, तुमने कल्याण इस जग में सबका किया।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष जिनके रहे न अठारह कोई, बनके अर्हन्त पद सिद्ध का पा गये।
लोक के शीर्ष पर पूज्य के पूज्य बन, जग में जीवों को शिवपद का मार्ग दिया।।54।।

ॐ ह्रीं सिद्धसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म पाके परम सिद्ध जिनवर स्वयं, सिद्ध परमात्मा आप बन गये अहा।
कर रहे अर्चना हम चरण आपके, लक्ष्य मेरा भी यह सुपद पाना रहा।।55।।

ॐ ह्रीं परमात्मसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि-सिद्धि सभी आपने प्राप्त कर, सिद्धपद के परम आप स्वामी बने।
आठ कर्मों ने जग में भ्रमाया सदा, ध्यान कर आपने कर्म सारे हने।।56।।

ॐ ह्रीं परम सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

तुम परम आगम के प्रकाशक, ज्ञान केवल धारते।
जो भक्त चरणों में समर्पित, उन्हें भव से तारते।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।57।।

ॐ ह्रीं परमागम सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुण अनन्त प्रकाश करके, निज गुणों में लीन हो।
सारे विभावों को नशाया, स्वभाव में लवलीन हो।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।58।।

ॐ ह्रीं प्रकाशमान सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बनके स्वयंभू सिद्ध स्वामी, शिवपुरी में जा बसे।
सद्ज्ञान दर्शन बल सुयश शुभ, निज गुणों से प्रभु लसे।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।59।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से सचेतन भिन्न जानो, ब्रह्म गुण प्रगटाए हैं।
स्व पर प्रकाशी ज्ञान केवल, सिद्ध जिनवर पाए हैं।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।60।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण हैं अनन्तानन्त अपने, नहीं जिनका पार है।
जिन सिद्ध पद है सार केवल, असद यह संसार है।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।61।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुण सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे सिद्ध ! परम अनन्त पावन, शिवपुरी के ईश हैं।
हे अचल ! अनुपम ज्ञानधर, कल्याणमय जगदीश हैं।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।62।।

ॐ ह्रीं परमअनन्त सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकाग्रवासी सिद्ध जिन की, अर्चना करते सभी।
कर ध्यान हो एकाग्र मन से, मुक्ति पाते हैं तभी।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।63।।

ॐ ह्रीं लोकाग्रवासी सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनादि सिद्ध गाये, परम शाश्वत जो रहे।
त्रिभुवन धनी जग पूज्य, अनुपम लोक में पावन कहे।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।64।।

ॐ ह्रीं अनादि सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जिन गुणों की अर्चना कर, जिन गुणों को पाएंगे।
जिन सिद्ध का है सदन अनुपम, हम वहीं पर जाएंगे।।
यह अर्घ्य प्रभु चरणों चढ़ाने, आपके हम लाए हैं।
जो आपने पाया सुपद वह, विशद पाने आए हैं।।65।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणात्मक सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

दोहा– जिन सिद्धों की अर्चना, करते यहाँ त्रिकाल।
निज गुण पाने के लिए, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द रेखता)

अहो ! चित् परम अकर्ता नाथ, अपरिमित अक्षय वैभववान।
शुभाशुभ की जड़ता कर दूर, जगाया अनुपम केवलज्ञान।।

विधाता शिवपथ के तुम एक, किए जिन सत्ता की पहिचान।
प्राप्त कर अनुपम ज्ञान प्रकाश, किया तुमने चेतन का ध्यान॥
घोर तम छाया चारों ओर, लोक में फैल रहा अज्ञान।
मोह का फैल रहा है जाल, जीव है अपने से अन्जान॥
नहीं देखा निज शास्वत देव, जमाया मिथ्या ने अधिकार।
भ्रमाया चतुर्गति हर बार, कर्म ने जग में बारम्बार॥
भ्रमण कर काल अनन्त निगोद, नहीं पाया है भव का अन्त।
पड़ी जड़ कर्मों की जन्जीर, व्यर्थ ही बीते कई बसन्त॥
सहे नरकों के दुःख अपार, कथन करना है कठिन महान।
जानते सहने वाले जीव, या जाने ज्ञानी जिन भगवान॥
पशु गति में बध बंधन आदि, घने दुःख सहते रहे त्रिकाल।
विकल त्रय बनकर पाये दुःख, कृमि आदि बनकर हर हाल॥
गर्भ में उल्टे मल के बीच, रहे नर गति में भी नौ मास।
जवानी में भोगे कई भोग, बुढ़ापे में हो गये उदास॥
स्वर्ग के सुख में हो मदमस्त, बिताया भोगों में बहु काल।
माह छह आयु रहते शेष, सोचकर हुए बहुत बेहाल॥
दशा चारों गति की दयनीय, दिखाई देती है हे नाथ !
परिश्रम किया बहुत हर बार, लगा न फिर भी कुछ मम हाथ॥
अपरिमित अक्षय वैभव कोष, सुलभ है सबको जो अविराम।
सुलभ ना कर पाए हम नाथ, रहा सम्मोहन का परिणाम॥
बिताया काल अनादि अनन्त, मोहतम छाया चारों ओर।
उदित न हुआ ज्ञान रवि नाथ !, हुई न चिर निद्रा की भोर॥
नहीं देखा निज का स्वरूप, क्षम्य हो कैसे मेरी भूल।
विधाता तुम शिव पथ के ईश, करो मुझको भी अब अनुकूल॥
जगे मम सुस्थिर हृदय श्रद्धान, उदित हो प्रज्ञा प्रखर प्रकाश।
विशद हो चिर समाधि में लीन, शीघ्र हो अब विभाव का ह्रास॥

आपका चित् प्रकाश कैवल्य, प्रकाशित करता लोकालोक।
योग अवरुद्ध हुआ योगीश, रहा न अन्तर्मन में शोक॥
जीव कारण परमात्म त्रिकाल, सकल चैतन्य रूप अविकार।
धवल है अन्तस्तत्त्व खण्ड, रहे चिद् ब्रह्म निमग्न विलास॥
अतीन्द्रिय सौख्य चिरन्तन भोग, प्राप्त हो स्थिर शिवपुर वास।
प्रभो ! अब शिवपुर शैया बीच, त्वरित हो मेरा प्रथम प्रभात।
घुमड़ते शुभानन्द के मेघ, विशद हो शांति की बरसात॥

दोहा- अवलम्बन के अधिपति, शुद्धातम परिशुद्ध।
अन्तर कालुष दूर हो, हैं परिणाम विशुद्ध॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठीदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अक्षय अनुपम ज्ञान की, प्रतिपल उठे तरंग।
शास्वत सत्ता प्राप्त हो, जागे सुथिर उमंग॥

इत्याशीर्वादः

पञ्चम पूजा

स्थापना

बिन्दु समन्वित ऊर्ध्व अधो 'र', कमल कर्णिका स्वर संयुक्त।
वर्ग पूर्ण वसुदल युत अम्बुज, सन्धि है तत्त्वों से युक्त॥
अग्र भाग में मंत्र अनाहत, वेढित ह्रीं सहित मनहार।
सुर ध्याते यह सिद्धचक्र शुभ, तीन लोक में मंगलकार॥
ध्यान करें मुनि सिद्ध यंत्र का, यंत्र हिरण को सिंह समान।
नागराज को गरुड श्रेष्ठ है, विशद यहाँ करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिनः अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्त अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(त्रिभंगी छन्द)

भव-भव भटकाए, कष्ट उठाए, जन्म जरा के दुःख पाए।
जल भर के लाए, गर्म कराए, त्रय रोग नशाने हम आए॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग भ्रमण कराए, कष्ट उठाए, भव-भव में कई दुःख पाए।
केसर मनहारी, सुरभित भारी, जल में घिसकर के लाए॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँचा पद पाए, मान बढ़ाए, वह पद भी न रह पाए।
अक्षय पद पाएँ, ज्ञान जगाएँ, अक्षत चरणों में लाए॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की आशा, बहु अभिलाषा, में सारा जग भटकाए।
अब काम नशाने, शिवपद पाने, पुष्प संजोकर हम लाए॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाया, निश दिन खाया, क्षुधा शांत न कर पाए।
अब क्षुधा मिटाने, शिव सुख पाने, नैवेद्य चढ़ाने हम लाए॥

सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ में अंधियारा, अतिशयकारा, जग जंगल में भटकाए।
अब मोह नशाने, ज्ञान जगाने, दीप जलाकर हम लाए॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्म सताए, भ्रमण कराए, तीन लोक में भटकाए।
यह धूप सुहानी, अति मन भानी, अग्नि में खेने लाए॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय आयो, फल वह पायो, कोई उससे न बच पाए।
फल सरस मंगाए, थाल भराए, शिवपद अब पाने आए॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुलता भारी है दुःखकारी, चिंता चिता समान करे।
प्रभु के गुण गाएँ, शिवपद पाएँ, जिन पद अर्घ्य प्रदान करें॥
सिद्धों की भक्ति, पाने मुक्ति, करते हैं हम शुभकारी।
हम जिन गुण गाते, शीश झुकाते, सर्व जगत मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

128 गुण पूजा

दोहा- गुण अट्ठाइस एक शत्, के यह अर्घ्य महान।
पुष्पाञ्जलि के साथ हम, करते यहाँ प्रदान॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(तर्ज- बारह भावना) (विष्णुपद छन्द)

सम्यक् दर्शन की महिमा को, जिनवर ने गाया।
क्षायिक सम्यक् दर्शन भाई, सिद्धों ने पाया॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान को पाया प्रभु ने, विशद ज्ञान पाए।
लोकालोक प्रकाशित करके, शिव मग दर्शाए॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत धारण करके, चारित प्रगटाए।
उत्तम संयम धारी प्रभु जी, निजानन्द पाए॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मादि उत्पाद और व्यय, के हैं प्रभु नाशी।
निज अस्तित्व प्राप्त कीन्हें हैं, अक्षय गुण राशी॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥4॥

ॐ ह्रीं अस्तित्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज की निज में निजता पाने, वाले हितकारी।
प्रभु वस्तुत्व धर्म को पाए, जग मंगलकारी॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥5॥

ॐ ह्रीं वस्तुत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व चराचर के ज्ञाता प्रभु, अप्रमेय धारी।
लोकालोक प्रमेय बताया, महिमा शुभकारी॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥6॥

ॐ ह्रीं अप्रमेयत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् गुण पतित हानि वृद्धि जो, निज गुण में करते।
अगुरु लघुत्व धर्म के धारी, निज में आचरते॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥7॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् स्वरूप चेतन गुण पाए, अनुपम अविकारी।
महिमा कह पाना है मुश्किल, जिनकी मनहारी॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥8॥

ॐ ह्रीं चेतनत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग रंग न गंध है कोई, रस भी न होते।
हैं अमूर्त जिन सिद्ध निराले, पर गुण को खोते॥
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए॥9॥

ॐ ह्रीं अमूर्तत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप के श्रद्धाधारी, समकित गुण पावें।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, निज गुण प्रगटावें।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।10।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान धर्म चेतन का भाई, आगम में गाया।
कर्म नाशकर ज्ञानावरणी, मोक्ष सुपद पाया।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।11।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव धर्म चिन्मूरत धारी, इस जग में गाया।
नहीं जीव सम अन्य द्रव्य कोइ, पावन बतलाया।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।12।।

ॐ ह्रीं जीवत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं किसी से रोके रुकता, सूक्ष्म धर्म धारी।
जीव अमूर्त कहा आगम में, पावन अविकारी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।13।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव द्रव्य अवगाह धर्मयुत, होता है भाई।
सर्व जहाँ में अनुपम इसकी, होती प्रभुताई।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।14।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

अव्याबाध धर्म से संयुत, अविनाशी जानो।
सुख अनन्त का अतिशय भाई, जीव श्रेष्ठ मानो।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।15।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व संवेदन ज्ञान का अनुभव, जीव करे भाई।
निजानन्द अमृत रस पीवे, अनुपम सुखदायी।।
सिद्धों की हम पूजा करने, आज यहाँ आए।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, चरणों में लाए।।16।।

ॐ ह्रीं स्वसंवेदनज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

स्वरूप ताप तप से, सब कर्म नशाए।
आतम उद्योत पाने, निज ज्ञान जगाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ।।17।।

ॐ ह्रीं स्वरूपतापतपसे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दर्श ज्ञान वीर्य, सुखानन्त जगाए।
जो कर्म घातिया हैं, वह आप नशाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयात्मकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व प्राप्त करके, मिथ्यात्व नशाए।
कर्मों का नाश कीन्हें, गुण आठ उपाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ।।19।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादिगुणात्मकसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्श ज्ञान चारित, तप वीर्य भी पाए।
आचार्य पाँच पाए हैं, इस जग को दिलाए॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥20॥

ॐ ह्रीं पंचाचाराचार्येभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व ज्ञान चारित, त्रय रत्न जगाए।
मुक्तिश्री को पाने, का यत्न कराए॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रयप्रकाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान ध्यान तप में, नित लीन रहे हैं।
साधु स्वरूप साधना, के मूल कहे हैं॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥

ॐ ह्रीं स्वरूपसाधकसर्वसाधुभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनः संरम्भ क्रोध, मन गुप्ति धारी।
जिनराज क्रोध त्यागी, हैं श्रेष्ठ अविकारी॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥21॥

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसंरम्भमनोगुप्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने अकारित क्रोध को भी पूर्ण नशाया।
आतम का ध्यान करके, शुभ मोक्ष पद पाया॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥22॥

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसंरम्भनिर्विकल्पधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदना न क्रोध की, मन से कभी करें।
वे निर्विकल्प ध्यानी, शिव पंथ को वरें॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥23॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसंरम्भसानंदधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनः जो क्रोध, समारम्भ कहाए।
कर्मों का नाश करके, आनन्द मनाए॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥24॥

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनः जो क्रोध, समारम्भ के धारी।
आनन्द सघन पाए, हो ब्रह्म बिहारी॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥25॥

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदना न क्रोध, समारम्भ की करें।
आनन्द परम पावें, सब कष्ट जो हरें॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥26॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदसंतुष्टाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनः आरम्भ, क्रोध से विहीन हैं।
आनन्द के सरोवर जो, निज में लीन हैं॥
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ॥27॥

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधारम्भस्वसंस्थानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनः आरम्भ क्रोध, हीन बताए।
जिनराज बन्ध संस्थान, हीन कहलाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ।।28।।

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधारम्भबन्धसंस्थानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदना न क्रोध, आरम्भ की करें।
मन के विकार तज के, निज ज्ञान को वरें।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ।।20।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधारंभसंस्थानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनः जो मान, संरम्भ हीन हैं।
निज का जो ध्यान करते, धर्म के अधीन हैं।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ति से, शीश झुकाएँ।।30।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसंरम्भसाधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-भुजंग प्रयात)

अकारित मनोमान संरम्भ भाई, अनुपम अनन्य शरण सिद्धों ने पाई।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।31।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसंरम्भअनन्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मान संरम्भ गाया, मन का सुगत भाव सिद्धों ने पाया।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।32।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसंरम्भसुगुणभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमान समारम्भ जानो, सुख आत्म गुणधर जिन सिद्ध मानो।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।33।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसमारम्भसुखात्मगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमान समारम्भ भाई, अनुपम अनन्य शरण सिद्धों ने पाई।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।34।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसमारम्भअनन्यगताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मान समारम्भ धारी, मनोनन्त वीर्यधर सिद्ध अविकारी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।35।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसमारंभअनन्तवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमानारम्भ भाई, अनन्त सुख सिद्धों की पहिचान गाई।।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।36।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानारम्भअनन्तसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमानारम्भ पाए, ज्ञानानन्त जिन सिद्ध स्वयं प्रगटाए।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।37।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानारम्भअनन्तज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनोमानारम्भी, गुणानन्त के सिद्ध प्रभु आलम्बी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।38।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानआरम्भअनंतगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमायासंरम्भ पाए, निज ब्रह्म स्वरूपी जिन सिद्ध गाए।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।39।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासंरम्भब्रह्मस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमाया संरम्भ जानो, चेतना में रमण नित्य करते हैं मानो।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।40।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासंरम्भचैतन्यभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनोमाया संरम्भी, अनन्य स्वाभाव के सिद्ध अवलम्बी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।41।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासंरम्भअनन्यस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमाया समारम्भ पाए, प्रभु स्वानुभूति रत जिन सिद्ध गाए।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते।।42।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारंभस्वानुभूतिरताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमाया समारम्भधारी, प्रभु साम्य धर्म के बने हैं पुजारी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥43॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासमारंभसाम्यधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित माया समारम्भी, सिद्ध प्रभु हैं स्वयं गुरु गुणालम्बी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥44॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासमारंभगुरवे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमाया आरम्भ जानो, परम शांत गुण भोगी सिद्ध को मानो।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥45॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारम्भपरमशांताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमाया आरम्भ योगी, निराकुल परम रस चैतन्य भोगी।
सिद्धों की शरण जो भव्य जीव पाते, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जाते ॥46॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोमायारंभनिराकुलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

नानुमोदित मनोमाया आरम्भधर, सुखानन्त पाने वाले अनुपम अजर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥47॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायारंभअनन्तसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मान लोभ संरम्भी जानिए, दृगानन्तधारी जिन को पहिचानिए।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥48॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भअनंतदृगात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो अकारित लोभ संरम्भी जिन कहे, दृगानन्द अन्तर में जिनके नित बहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥49॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसरंभदृगानंदभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनोलोभ संरम्भ धर, सिद्धभाव को पाने वाले हैं अमर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥50॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसंरंभसिद्धभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोलोभ समारम्भ सिद्ध हैं, चिन्मय चित् स्वाभावी जगत प्रसिद्ध हैं।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥51॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारम्भचिद्देवाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मान लोभ समारम्भी जानिए, निराकार जिन सिद्धों को पहिचानिए।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥52॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसमारंभनिराकाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनो लोभ समारम्भिया, रहे आप साकार यही निश्चय किया।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥53॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसमारंभसाकाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोलोभ आरम्भ जिन कहे, चिदानन्द चिद्रूपी अविनाशी रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥54॥
ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभारंभचिदानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो अकारित लोभारंभी जिन प्रभु, चिदानन्द चिन्मय स्वरूपी हे विभु।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥55॥
ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारंभचिन्मयस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनोलोभ आरम्भ धर, निज स्वरूप में लीन रहे हैं सिद्धवर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥56॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभारंभस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन क्रोध समरम्भी सिद्ध हैं, वाग्गुप्ति के धारी जगत प्रसिद्ध है।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥57॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसंरंभवाग्गुप्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित क्रोध संरम्भी जिन कहे, निज स्वरूप में लीन सिद्ध अनुपम रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥58॥
ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरंभस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन क्रोध संरम्भया, प्राप्त स्वानुभव लब्धि का जिनने किया।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥59॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरंभस्वानुभवलब्धये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन क्रोध समारम्भ धर, स्वानुभूति कर प्राणी होते हैं अमर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥60॥
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारंभस्वानुभूतिरमणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन अकारित क्रोध समारम्भी कहे, नर साधारण धर्म प्राप्त करते रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥61॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारंभसाधारणधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन क्रोध समारम्भ धर, परम शांत शिव पाते हैं जिन सिद्धवर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥62॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारम्भपरमशांताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वैर कटु वचनों से होवे, आरंभाकृत शांति खोवे।
क्षमा धर्म परमामृत धारी, तुष्टीय पाते हैं अविकारी॥63॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारंभपरमामृततुष्टाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित धारी प्राणी, क्रोधारम्भ रहित हो वाणी।
क्षमा धर्म समरसता धारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी॥64॥

ॐ ह्रीं अकारितवचतक्रोधारंभसमरसाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन सुनाएँ, क्रोधारम्भ नहीं जो पाएँ।
परम प्रीति धारी मनहारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी॥65॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारंभपरमप्रीतये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन मान संरम्भी, हीन परिग्रह या आरम्भी।
परम धर्म अविनश्वर धारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी॥66॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसंरम्भअविनश्वरधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन मान संरम्भी जानो, स्वयं अकारित ही पहिचानो।
परमा धर्म अव्यक्त स्वरूपी, जिन अचिन्त्य अव्यय चिद्रूपी॥67॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसंरम्भअव्यक्तस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन मान संमरम्भ नशाए, नानुमोदित जिन कहलाए।
दुर्लभ मार्दव धर्म स्वरूपी, जिन अचिन्त्य अक्षय चिद्रूपी॥68॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसंरम्भदुर्लभाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन मान के त्यागी, समारम्भ के न अनुरागी।
परम गम्य अविकारी गाए, प्राणी सिद्ध सुपद को पाए॥69॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारंभपरमगम्यनिराकाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित मान नशाए, समारम्भ से रहित कहाए।
परम स्वभाव आपने पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया॥70॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारंभपरमस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन बताए, समारम्भ गत मान नशाए।
जो एकत्व सुगत कहलाए, अनुपम सिद्ध सुपद को पाए॥71॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसमारंभएकत्वसुगताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन मान आरम्भी, वचन कभी न कहते दम्भी।
धर्म राज स्वभावी गाए, परमातम पद जिन प्रभु पाए॥72॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानारंभपरमात्मधर्मराज धर्मस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित मान विनाशी, हैं आरम्भ रहित अविनाशी।
जो शास्वत आनन्द जगाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए॥73॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारम्भशाश्वतानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन निराले, मानारम्भ रहित गुण वाले।
अमृत पूरण आप कहाए, अनुपम निजानन्द सुख पाए॥74॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानारंभअमृतपूरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन माया संरम्भी, रहित परिग्रह औ आरम्भी।
धर्मैकरूपा आप कहाए, गुण अनन्त तुमने प्रगटाए॥75॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासंरम्भअनन्तधर्मैकरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित माया धारी, समरम्भ रहित अविकारी।
अमृत चन्द्र कहे हैं स्वामी, मोक्ष पंथ के है अनुगामी॥76॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासंरंभअमृतचन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन सुनाए, जो माया संरम्भी गाए।
अनेक मूर्ति कहलाए स्वामी, तीन काल के अन्तर्यामी॥77॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासंरम्भअनेकमूर्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकृत माया के धारी, कहे समारम्भी अविकारी।
नित्य निरंजन शांत स्वभावी, पूर्ण ज्ञान धारी अनगारी॥78॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासमारंभनित्यनिरंजनस्वभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल – टप्पा)

वचनाकारित माया समारम्भ, कहे गये भाई।
आत्मिक धर्म प्राप्त कीन्हें हैं, जिनवर सुखदायी॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥79॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासमारंभआत्मैकधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सूक्ष्म जिन सिद्ध श्री की, महिमा शुभ गाई।
नानुमोदित वचन माया, समारंभ सहित भाई॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥80॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासमारम्भपरमसूक्ष्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन माया आरम्भी, सिद्ध कहे भाई।
अनन्तावकाश रूप सिद्धों की, फैली प्रभुताई॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥81॥

ॐ ह्रीं अकृतमायारम्भअनन्तावकाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित माया आरम्भी, जिनवर सुखदायी।
अमल गुणों के कोष प्रभु की, महिमा दिखलाई॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥82॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायारंभअमलगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन माया, आरम्भ युक्त भाई।
निज में निज से लीन हुए फिर, निराबाध सुख पाई॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥83॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायारम्भनिरवधिसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ संरम्भी, व्यापक धर्म पाई।
सरल गति संतोषी अनुपम, होती सुख दायी॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥84॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभ संरम्भी, व्यापक गुण भाई।
पाने वालों की इस जग में, फैली प्रभुताई॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥85॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसंरंभव्यापकगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन लोभ, संरम्भ युक्त भाई।
अचल धर्मधारी कहलाए, भविजन सुखदायी॥
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी॥86॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसंरंभअचलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ समारम्भी, निरावलम्ब धारी।
चिदानंद चैतन्य स्वरूपी, जग में शुभकारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥87॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसमारंभनिरालंबाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभ समारम्भ, संयुत अनगारी।
सिद्धशिला पर सिद्ध निराश्रय, गाये शुभकारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥88॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसमारंभनिराश्रयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन लोभ युत्, समारम्भ धारी।
अक्षय सिद्ध अखण्ड अरूपी, पावन मनहारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥89॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसमारंभअखण्डाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ आरम्भी, जिन मंगलकारी।
परीत अवस्था धारी अनुपम, जन-जन मनहारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥90॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभारंभपरितावस्थाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभारम्भी, श्री जिन गुणधारी।
समयसार के सार रूप हैं, पावन अनगारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥91॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभारम्भसमयसाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचनारम्भी, लोभ कषाय धारी।
नित्य निरन्तर, सुखानन्तमय, दर्श ज्ञान कारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥92॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरंतराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत क्रोध काय समरम्भी, काय गुप्तिधारी।
अजर अमर पद पाने वाले, भविजन हितकारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥93॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसरंभकायगुप्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय क्रोध संरम्भाकारित, अतिशय शुभकारी।
ज्ञान शरीरी कर्मरहित जिन, शुद्ध काय धारी॥
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी॥94॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसरंभशुद्धकायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घ्य-जोगीरासा)

नानुमोदित काय क्रोध युत, संरम्भ काय धर पाए।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी, के गुण हमने गाए॥95॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसमरंभअकायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय क्रोध समारम्भी, स्वान्वयगुण के धारी।
स्वाभाविक गुण प्राप्त सिद्ध की, महिमा है न्यारी॥96॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसमारंभस्वान्वयगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय क्रोध समारम्भाकारित, है अनुपम गुण वाले।
विशद भावरत सिद्ध श्री जिन, जग में रहे निराले॥97॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसमारम्भभावरतये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित काय क्रोध युत, समारम्भ के धारी।
सिद्ध स्वान्वय धर्म स्वभावी, अनुपम है गुण धारी॥98॥

ॐ ह्रीं नानुमोदिकायक्रोधसमारंभसान्वयधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय क्रोधारम्भी, शुद्ध द्रव्य रत जानो।
सिद्ध आठ गुण धारी पावन, शुद्ध स्वरूपी मानो॥99॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारंभशुद्धद्रव्यरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायाकारित क्रोधारम्भी, सिद्ध प्रभु जी गाए।
जो संसारच्छेदक जानो, सबके मन को भाए॥100॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारंभसंसारच्छेदकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायारम्भ में क्रोधानुमोदन में न, हर्ष विषाद धारें।
जैन धर्म अनुसार क्रिया कर, सर्व दोष परिहारें॥101॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारंभजैनधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित संरम्भ कार्य कृत, तन से रचना त्यागें।
स्वस्वरूप के गोपन में ही, नित्य प्रति जो लागें॥102॥
ॐ ह्रीं अकृतकायमानसंरंभस्वरूपगुप्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानोदय संरम्भ विधि जो, नहीं देह से करते।
निज कृत कर्म करे नित ज्ञानी, सब विकार जो हरते॥103॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमानसंरंभनिजकृतये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित संरम्भ कार्य में, नहीं देह से धारें।
ध्यान योग से ध्येय भाव धर, निज के गुण में लागें॥104॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसंरम्भध्येयभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से मान युक्त होकर न, समारम्भ को पावें।
परमाराधन करने वाले, शुद्ध भावना भावें॥105॥
ॐ ह्रीं अकृतकायमानसमारंभपरमाराधनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से मद युत समारम्भ न, कभी धारने वाले।
ज्ञानानन्द गुणी मतवाले, जग से रहे निराले॥106॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमानसमारम्भआनंदगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से समारम्भ की विधि में, हर्ष मान परिहारें।
स्वानन्दानन्दित हो करके, संयम रत्न सम्हारें॥107॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसमारम्भस्वानंदनंदिताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय मान आरम्भी, अनुपम हैं शुभकारी।
निजानन्द संतोषी प्राणी, जग में मंगलकारी॥108॥
ॐ ह्रीं अकृतकायमानारम्भसंतोषाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायारम्भ अकारित मानी, स्वस्वरूप रत गाये।
उनके गुण से प्रीत धार नर, तन मन से हर्षाए॥109॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमानारम्भस्वरूपरताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानारम्भ अनंदित देही, विमल शुद्ध पर्यायी।
नानुमोदित मानारम्भी कहे, सिद्ध जिन भाई॥110॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानारम्भशुद्धपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय माया संरम्भी, अमृत गर्भ के धारी।
तन मन से जो शुद्ध कहाए, संत सहज शुभकारी॥111॥
ॐ ह्रीं अकृतकायमायासंरम्भअमृतगर्भाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया युत संरम्भ देह से, कभी न करने वाले।
मुख्य धर्म चैतन्य स्वरूपी, जग में रहे निराले॥112॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमायासंरम्भचैतन्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया युत संरम्भ देह से, नानुमोदित धारी।
वीतराग समरसी भाव मय, अनुपम हैं अविकारी॥113॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासंरम्भसमरसीभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ माया के धारी, अकृत तन विच्छेदी।
भवछेदक निज पर के हैं जो, तन चेतन के भेदी॥114॥
ॐ ह्रीं अकृतकायमायासमारम्भभवछेदकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ तन की कुटिलाई, भये अकारित स्वामी।
नानुमोदित स्वतंत्र धर्म युत, सिद्ध कहे शिवगामी॥115॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारंभस्वातंत्र्धर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया युत निज देह के द्वारा, करते न आरम्भ कभी।
नानुमोदित गुण के धारी, धर्मसमूही सिद्ध सभी॥116॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारम्भधर्मसमूहाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज देहाकृत माया प्रधान, आरम्भ रहित गुण के निधान।
परमातम सुख में रहें लीन, इन्द्रिय आदि से हैं विहीन॥117॥
ॐ ह्रीं अकृत कायमायारम्भ परमात्मसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरम्भ काय माया विहीन, हैं सिद्ध अकारित सर्वहीन।
निष्ठातम स्वस्थित हैं जिनेश, चरणों में वन्दन है विशेष॥118॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमाराम्भनिष्ठात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित माया विहीन, आरम्भ काय चैतन्य लीन।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥119॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायारम्भचेतनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्रम्भ लोभ नहि काय वान, चित् परिणति युत गुण के निधान।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥120॥
ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसंरम्भपरमचित्परिणताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संरम्भाकारित देह लोभ, स्व समय लीन हैं रहित क्षोभ।
जिनवर की महिमा है महान, है सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥121॥
ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भस्वसमयरताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संरम्भ लोभ तन हर्ष हीन, जिन व्यक्त धर्म स्वसमय लीन।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥122॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसंरम्भव्यक्तधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन लोभाकृत तन समारम्भ, प्रभु सिद्ध रहित हैं पूर्ण दम्भ।
हैं नित्य सुखी जिनवर महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥123॥
ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भनित्यसुखाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज लोभाकारित काय वान, जिन समारम्भ की किए हान।
जो रहित पूर्णतः हैं कषाय, कहलाते जिनवर अकषाय॥124॥
ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसमारम्भअकषाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं समारम्भ तन लोभहीन, अनुमोदन से जो हैं विहीन।
शुभ शौच गुणी जिनवर महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥125॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भशौचगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोभाकृत कायारम्भवान, जो चिद् आतम का करे भान।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥126॥
ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भचिदात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो लोभाकारित कायारम्भ, जिन आधार विराजे निरालम्ब।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥127॥
ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भनिरालम्बाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित तन लोभारम्भ, निज आत्म निरत हैं हीन दम्भ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान॥128॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभारंभआत्मरतसिद्धाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में सिद्धों की, महिमा का कोई पार नहीं।
सिद्धों सम इस जगती पर भी, दिखता न कोई और कहीं॥
हम भक्त शरण में भक्ति से, आए श्रद्धा के पुष्प लिए।
जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, घृत के जलते यह साथ दिए॥
यह धूप सुगन्धित फल अनुपम, से अर्घ्य बनाया है पावन।
हम चरणों में अर्पित करते, हो विशद प्राप्त समकित सावन॥129॥
ॐ ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणयुक्त सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

दोहा– तीन लोक में पूज्य हैं, मंगल मयी त्रिकाल।
सिद्धों के गुण की यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

हे शुद्ध सनातन अविकारी, हे नित्य निरंजन मोक्ष धाम।
हे महाधैर्य ! हे अविनाशी !, तव चरणों में शत्-शत् प्रणाम॥
हे मोहजयी ! हे कर्मजयी !, तुमने कषाय पर जय पाई।
मोहित करने को मोह कर्म ने, अपनी शक्ति अजमाई॥1॥

उदयागत कर्मों ने अपना, शक्तिशः जोर लगाया था।
पर नाथ आपकी समता के, आगे न जोर चल पाया था॥
कभी क्रोध ने जोर लगाया था, कभी मान उदय में आया था।
माया कषाय अरु लोभोदय, का भी न जोर चल पाया था॥2॥

मिथ्यात्व ने मति मिथ्या करने, हेतु भी जोर लगाया था।
क्षायिक सम्यक्त्व के आगे वह, क्षणभर भी न रह पाया था॥
ज्ञानावरणी जो कर्म रहा, आवरण ज्ञान पर डाल रहा।
अज्ञान महातम के कारण, जग में रहकर बहु कष्ट सहा॥3॥

कर्म दर्शनावरण उदय में, आ दर्शन गुण घात करे।
अन्तराय विघ्नों की भाई, जीवन में बरसात करे॥
वेदनीय सुख-दुःख का वेदन, करने में सहयोग करें।
राग-द्वेष निर्मित कर अपने, चेतन गुण को पूर्ण हरे॥4॥

गतियों में भटकाने वाला, आयु कर्म निराला है।
तीन लोक में जन्म-जरादि, के दुःख देने वाला है॥
नाम कर्म तन की रचना कर, नाना रूप बनाता है।
कर्म और नो कर्म वर्गणा, पर अधिकार जमाता है॥5॥

उच्च नीच कुल में ले जाने, वाला गोत्र कर्म गाया।
नाथ आपके आगे कर्मों, की न चल पाई माया॥
चिन्मूरत आप अनन्त गुणी, तुममें आनन्द समाया है।
सब ऋद्धि सिद्धियों ने झुककर, आश्रय तव पद में पाया है॥6॥

सूरज को देख गगन में ज्यों, कई फूल जमीं पर खिल जाते।
अपनी सुगन्ध सौरभ द्वारा, जन-जन के मन को महकाते॥
हे प्रभु आपका दर्श विशद, जग जन में प्रेम जगाता है।
शुभ ध्यान आपका भव्यों को, सीधा शिवपुर पहुँचाता है॥7॥

दोहा- जिन सिद्धों की अर्चना, करते जो धर ध्यान।
अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः श्रीसम्मत्तणाण दंसण वीर्य सुहमं अवगहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्टाविशत्यधिकशतगुणसंयुक्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चित् चिन्मय चेतन प्रभु ! चिदानन्द चिद्रूप।
तव चरणों का ध्यान कर, पाएँ निज स्वरूप॥

इत्याशीर्वादः

षष्ठम पूजा

स्थापना

वर्ण हकार रेफ बिन्दू युत, अधो रकार है अपरम्पार।
अकारादि स्वर युक्त कर्णिका, अनुपम है अति मंगलकार॥
वसुदल कमल वर्ग से पूरित, सन्धी तत्त्व युक्त शुभकार।
अग्रभाग में मंत्र अनाहत, शोभित होता है मनहार॥
परम ह्रीं से वेढ़ित है शुभ, ध्याते हैं सुर चरणों आन।
नागारि को गरुण हिरण को, केहरि है यह श्रेष्ठ विधान॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिनः षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्त अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

निर्मल वचन न निर्मल मन है, निर्मल न मम काया है।
आतम स्वच्छ नहीं हो पाई, पाप कर्म की माया है॥
यह निर्मल प्रासुक जल अनुपम, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो गुणसहिताय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बचपन क्रीड़ा में गुजर गया, विषयों मे गई जवानी है।
भौंरा सम भ्रमण किया जग में, आगम की सीख न मानी है॥
अब चन्दन घिसकर के सुरभित, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पद के मद ने मदहोश किया, माया ने मन को ललचाया।
चिन्ता ने चिता बना डाला, न अक्षय पद हमने पाया॥
अक्षय यह श्रेष्ठ धवल अतिशय, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सौन्दर्य लुभाता जीवों को, मन काम वासना में भटके।
विषयों की आशा में फंसकर, कर्मों के फंदे में लटके॥
यह पुष्प श्रेष्ठ अनुपम सुरभित, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना रस की लोलुपता में, मन को व्याकुल कर देती हैं।
जब क्षुधा सताती प्राणी को, बुद्धि उसकी हर लेती है॥
यह सरस शुद्ध व्यंजन घृत के, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया है मोह का अंधियारा, उसमें अनादि से भरमाया।
बाहर में दीप जलाए कई, ना ज्ञान का दीपक प्रजलाया॥
यह दीप जलाकर रत्नमयी, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से नाता जोड़ा है, कर्मों ने हमको उलझाया।
हम फंसे भँवर में कर्मों के, निष्कर्ष भाव न मन भाया॥
यह धूप दशांगी अग्नि में, हम खेने हेतु लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल मन को तृप्त करें, मुक्ति फल की क्या बात अहा।
जो सिद्धि तुमने पाई है वह, पाना मेरा लक्ष्य रहा॥
श्रीफल आदि कई ताजे फल, हम यहाँ सिद्धि को लाए हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग वैभव को अपना कहकर, जीवन यह जग में उलझाया।
जब कर्म उदय में आता तो, न साथ कोई देने आया॥
यह अर्घ्य बनाया शुभ अनुपम, हम यहाँ चढ़ाने लाये हैं।
जिन सिद्ध गुणों की खुशबू का, आस्वादन पाने आए हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो षड्पञ्चाशदधिकद्विशत् गुणसंयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

256 गुणसहित सिद्धों का गुणगान

दोहा– दो सौ छप्पन अर्घ्य से, सिद्धों का गुणगान।
पुष्पाञ्जलि दे कर रहे, पाने सुगुण महान॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शम्भू छन्द)

फूल खिला सम्यक् श्रद्धा का मिथ्यातम का किया विनाश।
रहा चिरन्तन भव का कारण, किया पूर्णतः उसका नाश॥1॥

ॐ ह्रीं चिरन्तनसंसारकारण ज्ञाननिर्द्धूतोद्भूतकेवलज्ञानातिशयसंपन्नाय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन इन्द्रिय से मतिज्ञान हो, अविनिबोध है जिसका भेद।
सिद्ध शुद्ध गुण पाने वाले, हरते हैं इस जग का खेद॥2॥

ॐ ह्रीं अभिनिबोधवारकविनाशकाय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग श्रुत ज्ञान के धारी, ज्ञानावरणी कर्म विनाश।
सिद्ध शुद्ध गुण पाने वाले, करते आतम ज्ञान प्रकाश॥3॥

ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुतावरणकर्मविमुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि ज्ञान के भेद अनेकों, करते भेदाभेद विकास।
सिद्ध शुद्ध गुण पाने वाले, करते आतम ज्ञान प्रकाश॥4॥

ॐ ह्रीं असंख्यलोकभेदावधिज्ञानावरणविमुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भेद मनःपर्यय के हैं कई, आत्म सिद्धि का करें विकास।
सिद्ध शुद्ध गुण पाने वाले, करते आतम ज्ञान प्रकाश॥5॥

ॐ ह्रीं असंख्यप्रकारमनःपर्ययज्ञानावरणविमुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीन लोक त्रैकालिक वस्तु, करता केवलज्ञान प्रकाश।
सिद्ध शुद्ध गुण पाने वाले, करते हैं कर्मों का नाश॥6॥

ॐ ह्रीं निखिलरूपगुणपर्यायबोधककेवलज्ञानावरणविमुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी जग में, दर्शन गुण का करे विनाश।
सिद्ध प्रभु वह कर्म नाशकर, कीन्हें आतम ज्ञान प्रकाश॥7॥

ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणविनाशकाय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु दर्शनावरण कर्म ना, चक्षु से होने दे दर्श।
सिद्ध प्रभु वह कर्म विनाशी, पाए हैं अनुपम उत्कर्ष॥8॥

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण अचक्षु, करे अचक्षु दर्श विरोध।
सिद्ध शुद्ध वह कर्म विनाशे, पाए निज आतम का बोध॥9॥

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि दर्शनावरण कर्म से, अवधि दर्श न होवे प्राप्त।
सिद्ध प्रभु यह कर्म नाशकर, बन जाते हैं क्षण में आप्त॥10॥

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण नाशकर, दर्शन पाए प्रभु अनन्त।
केवल दर्शन पाने वाले, कर देते हैं भव का अन्त॥11॥

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा कर्म दर्शनावरणी, करता जीवों को बेहाल।
सिद्ध प्रभु वह कर्म विनाशे, पाए केवल दर्श विशाल॥12॥

ॐ ह्रीं निद्राकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रानिद्रा कर्मोदय में, नींद पे आवे नींद विशेष।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे, धारे स्वयं दिगम्बर भेष॥13॥

ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला कर्मोदय में निद्रा, का होता है मंद प्रभाव।
प्रचला कर्म दर्शनावरणी, नाश प्राप्त हो सिद्ध स्वभाव॥14॥

ॐ ह्रीं प्रचलाकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाथ पैर हिलते सोने में, मुख से भी बहती है लार।
प्रचला-प्रचला कर्म विनाशे, सिद्ध हुए तब भव से पार॥15॥

ॐ ह्रीं प्रचला-प्रचलाकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोते हुए कार्य करता कई, फिर भी रहता होश विहीन।
कर्म स्त्यानगृद्धि के नाशी, सिद्ध रहे निज में नित लीन॥16॥

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कर्म योग इन्द्रिय के द्वारा, वेदन होता न्यारा न्यारा।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे॥17॥

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता कर्म वेदनीय आवे, भोग सभी सुखकर नर पावे।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे॥18॥

ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति उदय में जिसके आवे, विषय भोग में अति दुःख पावे।
कर्म असाता प्रभु विनाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे॥19॥

ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद पीके होवें मतवाले, त्यों मोही जग भ्रमने वाले।
मोह नाश जिन शिवपद पाए, सुखानन्त का लाभ उठाए॥20॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों में श्रद्धा विपरीत, मिथ्या मोह की है ये रीत।
पंचभेद का किए विनाश, सिद्ध किए निज गुण में वास॥21॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्मप्रकृतिविनाशकाय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रथमोपसम सम्यक् जब जाय, सम्यक् मिथ्या दोनों पाय।
मिश्र मोह का किए विनाश, सिद्ध किए निज गुण में वास॥22॥

ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्वकर्मप्रकृतिरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दर्शन में चल मलादि दोष, समकित न होवे निर्दोष।
सम्यक् प्रकृति किए विनाश, सिद्ध किए निज गुण में वास॥23॥

ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अनन्तानुबन्धी क्रोध, उनके न हो सम्यक् बोध।
हों सम्यक् श्रद्धान् विहीन, सिद्ध कषायों से हैं हीन॥24॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीक्रोधकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अनन्त अनुबन्धी मान, उनके हो मिथ्या श्रद्धान।
हों सम्यक् श्रद्धान् विहीन, सिद्ध कषायों से हैं हीन॥25॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीमानकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया का अनुबन्धानन्त, मिथ्या से होवे अनुबन्ध।
हों सम्यक् श्रद्धान् विहीन, सिद्ध कषायों से हैं हीन॥26॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीमायाकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अनन्त अनुबन्धी लोभ, मिथ्या श्रद्धा से हो क्षोभ।
हों सम्यक् श्रद्धान् विहीन, सिद्ध कषायों से हैं हीन॥27॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीलोभकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध होय अप्रत्याख्यान, अणुव्रती न बने सुजान।
उपजे चरित मोह से खास, सिद्धों में न इसका वास॥28॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोधकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मान होय अप्रत्याख्यान, देशव्रती न बने सुजान।
उपजे चरित मोह से खास, सिद्धों में न इसका वास॥29॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माया हो अप्रत्याख्यान, अणुव्रत का न हो आदान।
उपजे चरित मोह से खास, सिद्धों में न इसका वास॥30॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाकषायविमुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लोभ होय अप्रत्याख्यान, देशव्रती न बने प्रधान।
उपजे चरित मोह से खास, सिद्धों में न इसका वास॥31॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभकषायविमुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तर्ज ...भाई रे...

प्रत्याख्यान कषायोदय में भाई रे, महाव्रती न बने कभी भी भाई रे।
चारित मोह से क्रोध उदय हो भाई रे, सिद्ध बने यह कर्मनाश के भाई रे॥32॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधकषायविमुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रत्याख्यान मान हो जाके भाई रे, संयम सकल न धारे प्राणी भाई रे।
चारित मोह से क्रोध उदय हो भाई रे, सिद्ध बने यह कर्मनाश के भाई रे॥33॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमानकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

माया प्रत्याख्यान उदय में भाई रे, मुनिव्रत धार सके न मानव भाई रे।
चारित मोह से हो कषाय दुःखदायी रे, सिद्ध बने यह कर्म नाश के भाई रे॥34॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायाकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रत्याख्यान कषायोदय में भाई रे, देशव्रतों को छोड़ सके न भाई रे।
चारित मोह से लोभ उदय हो भाई रे, सिद्ध बने यह कर्म नाश के भाई रे॥35॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

यथाख्यात चारित्र जगे न भाई रे, क्रोध संज्वलन होय उदय में भाई रे।
महाव्रती होने वाला हो भाई रे, सिद्ध बने यह दोष निवारी भाई रे॥36॥

ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान संज्वलन होय उदय में भाई रे, यथाख्यात न चरित जगे शिवदायी रे।
चारित मोह के कारण जानो भाई रे, सिद्ध बने यह कर्म नाशकर भाई रे॥37॥

ॐ ह्रीं संज्वलनमानकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय कषायोदय माया का भाई रे, महाव्रती बन करे साधना भाई रे।
यथाख्यात न प्रगटे चारित भाई रे, सिद्धश्री वह पाके हो शिवदायी रे॥38॥

ॐ ह्रीं संज्वलनमायाकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ संज्वलन रहे रंच न भाई रे, यथाख्यात प्रगटे चारित्र सुखदायी रे।
चारित मोह की महिमा जानो भाई रे, नाश कर्म यह सिद्ध बनो सुखदायी रे॥39॥

ॐ ह्रीं संज्वलनलोभकषायरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हास्य उदय में आवे जाके भाई रे, पर की हास्य उड़ावे वह दुःखदायी रे।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे भाई रे, अतः प्रकट कीन्हें जग में प्रभुताई रे॥40॥

ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर से प्रीति रति कहलावे भाई रे, रति लोक में है अतिशय दुःखदायी रे।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे भाई रे, अतः प्रकट कीन्हें जग में प्रभुताई रे॥41॥

ॐ ह्रीं रतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति कर्म से हो अप्रीति भाई रे, खेद हृदय जागे अतिशय दुःखदायी रे।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे भाई रे, अतः प्रकट कीन्हें जग में प्रभुताई रे॥42॥

ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग जाके हो जावे भाई रे, शोक उदय में आ दुःख देवे भाई रे।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे भाई रे, अतः प्रकट कीन्हें जग में प्रभुताई रे॥43॥

ॐ ह्रीं शोककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति भयानक रूप देख के भाई रे, तन मन भय से कम्पित होवे भाई रे।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे भाई रे, अतः प्रकट कीन्हें जग में प्रभुताई रे॥44॥

ॐ ह्रीं भयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के गुण अवगुण सम जाने भाई रे, कर्म जुगुप्सा उदय होय तव भाई रे।
सिद्ध प्रभु यह कर्म विनाशे भाई रे, अतः प्रकट कीन्हें जग में प्रभुताई रे॥45॥

ॐ ह्रीं जुगुप्साकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर से रमण किए सुख माने भाई रे, स्त्री वेदोदय से लज्जा पाई रे।
कर्मनाश की जानो यह प्रभुताई रे, सिद्ध श्री पावें जिनवर शिवदायी रे॥46॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारी रमण की इच्छा जागे भाई रे, नर वेदोदय से प्राणी के मन भाई रे।
कर्मनाश की जानो यह प्रभुताई रे, सिद्ध श्री पावें जिनवर शिवदायी रे॥47॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर-नारी से रमण करे जो भाई रे, वेद नपुंसक ताके जानो भाई रे।
कर्मनाश की जानो यह प्रभुताई रे, सिद्ध श्री पावें जिनवर शिवदायी रे॥48॥

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

सुर नर पशु गति भटकाए, नरकों के दुःख उठाए।
बध-बन्धन आदिक भारी, पाकर के रहे दुखारी॥
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !॥49॥

ॐ ह्रीं आयुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकों की कथा है न्यारी, बहु दुःख सहे हैं भारी।
बहु कर्म किए दुख पाए, भव-भव में सहते आए॥
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !॥50॥

ॐ ह्रीं नरकायुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा तृषा दुखदायी, बध बन्धन आदिक भाई।
बनके तिर्यञ्च सहे हैं, होके परतन्त्र रहे हैं॥
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !॥51॥

ॐ ह्रीं तिर्यचायुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों का वैभव पाया, भोगों में समय गँवाया।
आयु हो जावे पूरी, पर आशा रही अधूरी॥
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !॥52॥

ॐ ह्रीं देवायुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दीन हीन दुःख पाया, रोगों ने बहुत सताया।
संयोग वियोग से भारी, मानुष गति रही दुखारी॥
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !॥53॥

ॐ ह्रीं मनुष्यायुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

कर्मोदय से नाम कर्म के, नाना भेष बनाए हैं।
नरक गति में जाकर भगवन्, दुःख अनेकों पाए हैं॥
नरक गति जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥54॥

ॐ ह्रीं नरकगति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छेदन भेदन बध बन्धन कई, भूख-प्यास के दुःख सहे।
भार वहन की मायाचारी, बँधते खोटे कर्म रहे॥
पशु गति जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥55॥

ॐ ह्रीं तिर्यञ्च गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पञ्चेन्द्रिय के विषयों का सुख, पाया हमने बारम्बार।
सुख-दुख पाकर रहे भटकते, नहीं मिला हमको भव पार॥
मनुज गति है नाम कर्म शुभ, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥56॥

ॐ ह्रीं मनुष्य गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दिव्य सुखों को पाकर भी हम, तृप्त नहीं हो पाए हैं।
देवायु जब पूर्ण हुई तो, बार-बार पछताए हैं॥
देवगति शुभ नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥57॥

ॐ ह्रीं देव गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(गीता छन्द)

एक इन्द्री जीव जग में, प्राप्त जो करते सही।
एक इन्द्री जाति उनकी, जैन आगम में कही॥
एक इन्द्री जाति है यह, कर्म दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥58॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लोक में दो इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति दो इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥59॥

ॐ ह्रीं द्वि-इन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लोक में त्रय इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति तिय इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही॥

कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥60॥

ॐ ह्रीं त्रि-इन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

इन्द्रियाँ हैं चार जिनके, चार इन्द्री वह कहे।
चार इन्द्री जीव जग में, घोर दुखमय जो रहे॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥61॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लोक में सब इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं कभी।
जीव संज्ञी अरु असंज्ञी, वह कहे जाते सभी॥
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥62॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(चौपाई)

जो स्थूल देह को पावे, वह औदारिक तन कहलावे।
परमौदारिक जिनवर पाते, अन्त में छोड़ उसे भी जाते॥63॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अणिमादि ऋद्धि के धारी, रूप बनाते अतिशयकारी।
वैक्रियक तन प्राणी पाते, जिनवर को वह भी न भाते॥64॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मुनि के सिर से प्रगटित होवे, जिनपद छूके शंका खोवे।
आहारक यह देह कहावे, जिनवर को यह भी न भावे॥65॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन में जो कान्ति प्रगटावे, वह शरीर तैजस कहलावे।
भेद शुभाशुभ इसके गाये, जिनवर को यह भी न भाये॥66॥

ॐ ह्रीं तैजस शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आठों कर्म जहाँ मिल जावें, ये ही कार्माण देह बनावें।
उसका नाश किए जिन स्वामी, बने प्रभु जी अन्तर्यामी॥67॥

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(चाल–टप्पा)

हाथ–पैर दो कमर पीठ अरु, हृदय शीश जानो।
आठ अंग यह लघु उपांग कई, तन में पहिचानो॥
सभी यह आगम से जानो।
आंगोपांग औदारिक तन से, रहित सिद्ध मानो–सभी॥68॥

ॐ ह्रीं औदारिक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वृहद देह के हिस्से को ही, अंग सभी जानो।
कर्मोदय से मिले जीव को, ऐसा तुम मानो॥
सभी यह आगम से जानो।
आंगोपांग वैक्रियक तन से, रहित सिद्ध मानो–सभी॥69॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नाक कान उँगली आदि को, तुम उपांग जानो।
कर्मोदय से शुभम् जीव को, मिले सभी मानो॥
सभी यह आगम से जानो।
आंगोपांग आहारक तन से, रहित सिद्ध मानो–सभी॥70॥

ॐ ह्रीं आहारक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शिल्पकार सम तन की रचना, करता यह जानो।
नाम कर्म निर्माण कहा यह, भाई पहिचानो॥
सभी यह आगम से जानो।
दुःखकारी इस नाम कर्म से, रहित सिद्ध मानो–सभी॥71॥

ॐ ह्रीं निर्माण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

हो जोड़ ईंट गारा समान, बन्धन औदारिक वही जान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥72॥

ॐ ह्रीं औदारिकशरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वैक्रियक तन में कई भेष, है नाम कर्म बन्धन विशेष।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥73॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आहारक बन्धन है महान्, न होता है जो दृश्यमान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥74॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन में होवे जो कांतिमान, शुभ अशुभ रूप तैजस महान्।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥75॥

ॐ ह्रीं तैजस शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अब नामकर्म कार्माण जान, बन्धन कर्मों का यही मान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास॥76॥

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा

कहा छिद्र बिन देह को, नाम कर्म संघात।
औदारिक तन का किए, सिद्ध प्रभु भी घात॥77॥

ॐ ह्रीं औदारिकशरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नरक स्वर्ग में कर्म हो, वैक्रियक संघात।
सिद्ध प्रभु जी कर दिए, इसका क्षण में घात॥78॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आहारक शुभ देह में, आहारक संघात।
सिद्ध प्रभु जी कर दिए, नाम कर्म का घात॥79॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तैजस कांति देह में, देवे अपरम्पार।
नाम कर्म तेजस प्रभु, नाश हुए भव पार॥80॥

ॐ ह्रीं तैजस शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देह कार्माण को करे, छिद्र रहित संघात।
अष्ट कर्म का कर दिए, सिद्ध प्रभु जी घात॥81॥

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(छन्द : मोतियादाम)

बने कर्मोदय से आकार, देह का भाई विविध प्रकार।
रहे सुन्दर जो श्रेष्ठ महान, कहा वह सम चतु:संस्थान॥
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥82॥

ॐ ह्रीं समचतुस्र संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देह नीचे की पतली जान, रहे ऊपर स्थूल महान्।
कहा न्यग्रोध यही संस्थान, रहा जो बरगद पेड़ समान॥
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥83॥

ॐ ह्रीं न्यग्रोध परिमंडल संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देह ऊपर की पतली जान, बने नीचे स्थूल महान्।
कहा ऐसा स्वाती संस्थान, किया आगम में यही बखान॥
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥84॥

ॐ ह्रीं स्वाती संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पीठ में हो ऊँचा स्थान, बना कूबड़ हो बड़ा महान्।
कहा कुब्जक ये ही संस्थान, किया आगम में यही बखान॥
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥85॥

ॐ ह्रीं कुब्जक संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्राप्त बोना हो जिसे शरीर, रखे फिर भी मन में वह धीर।
कहाए वह बामन संस्थान, किया आगम में यही बखान॥
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥86॥

ॐ ह्रीं बामन संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रहे टेड़ा-मेड़ा आकार, देह का भाई विविध प्रकार।
इसे कहते हुण्डक संस्थान, किया आगम में यही बखान॥

हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास॥87॥

ॐ ह्रीं हुण्डक संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(वीर छंद)

हड्डी की मजबूती को ही, कहते हैं जिनवर संहनन।
वज्रमयी हड्डी कीलें हों, वज्र मयी होवे वेस्टन॥
वज्र वृषभ नाराच संहनन, पाकर हुए प्रभु अर्हन्।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥88॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हाड़ कील तो वज्रमयी हों, नहीं वज्र का हो वेस्टन।
मोक्ष नहीं जाते यह पाकर, वज्र नाराच कहा संहनन॥
संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥89॥

ॐ ह्रीं वज्रनाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हाड़ देह के वज्रमयी हों, कील वज्र की न वेस्टन।
नाम कर्म की बलिहारी है, यह नाराच कहा संहनन॥
रहित संहनन सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥90॥

ॐ ह्रीं नाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाड़ अर्द्ध कीलित हों तन के, अर्द्ध नाराच कहा संहनन।
कर्मोदय से नाम कर्म के, पाते प्राणी ऐसा तन॥
संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥91॥

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रहें हड्डियाँ कीलित तन में, कीलक कहलाए संहनन।
कीलक नाम कर्म से प्राणी, पाते हरदम ऐसा तन॥

रहित संहनन सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥92॥

ॐ ह्रीं कीलक संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

बँधी हुई हो नशें हड्डियाँ, कहलाता है ऐसा तन।
कहा सृपाटिक असंप्राप्ता, प्राणी का ऐसा संहनन॥
रहित संहनन सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन॥93॥

ॐ ह्रीं असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(सखी छन्द)

है नाम कर्म दुःखदायी, स्पर्श शीत हो भाई।
प्रभु सिद्ध कर्म के नाशी, चिद्रूपी ज्ञान प्रकाशी॥94॥

ॐ ह्रीं शीत स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श उष्ण भी जानो, यह भी दुःखदायी मानो।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, फिर आतम ज्ञान प्रकाशे॥95॥

ॐ ह्रीं उष्ण स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श लघु पहिचानो, आस्रव का हेतु मानो।
हैं सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी॥95॥

ॐ ह्रीं लघु स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श कहा है भारी, है कर्मों की बलिहारी।
जिन सिद्धों को हम ध्याएँ, उनके ही गुण को पाएँ॥96॥

ॐ ह्रीं गुरु स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श कठिन हो भाई, यह नाम कर्म दुखदायी।
होते हैं सिद्ध विनाशी, फिर बनते हैं अविनाशी॥97॥

ॐ ह्रीं कठिन स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्पर्श नरम सुखदायी, लगता लोगों को भाई।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, फिर आतम ज्ञान प्रकाशे॥98॥

ॐ ह्रीं नरम स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्पर्श रुक्ष भी गाया, जो नाम कर्म कहलाया।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, चिद्रूप अमल अविनाशी॥99॥

ॐ ह्रीं रुक्ष स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चिक्कड़ स्पर्श बखाना, यह जैनागम से माना।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, निज आतम ज्ञान प्रकाशे॥100॥

ॐ ह्रीं स्निग्ध स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(सोरठा छन्द)

पावें खट्टा स्वाद, नाम कर्म के उदय से।
नाश कर्म के बाद, बन जाते हैं सिद्ध जिन॥101॥

ॐ ह्रीं अम्ल रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावें मीठा स्वाद, नाम कर्म के उदय से।
रखना भाई याद, नाश किए मुक्ति मिले॥102॥

ॐ ह्रीं मिष्ठ रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटुक प्राप्त हो स्वाद, उदय कर्म यदि नाम हो।
होता है आह्लाद, सिद्धों का अतिशय विशद॥103॥

ॐ ह्रीं कटुक रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

स्वाद कषायला प्राप्त, नाम कर्म के उदय से।
बने नाश कर आप्त, पार होय संसार से॥104॥

ॐ ह्रीं कषायला रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तिक्त स्वाद के साथ, प्राणी जीवें लोक में।
बनें लोक के नाथ, नाम कर्म को नाश कर॥105॥

ॐ ह्रीं तिक्त रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पावे जीव सुगन्ध, नाम कर्म के उदय से।
माने कुछ आनन्द, सिद्ध हीन उससे रहे॥106॥

ॐ ह्रीं सुगन्ध नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाते हैं दुर्गन्ध, कर्मोदय से नाम के।
नाश किए प्रभु गंध, सिद्ध बने परमात्मा॥107॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्ध नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-टप्पा)

कर्मोदय से नाम कर्म के, श्याम रंग भाई।
इस जग के सब प्राणी पाते, जो है दुखदायी॥
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई॥108॥

ॐ ह्रीं श्याम वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नीले रंग में रागादि है, अतिशय दुखदाई।
कर्मोदय से नाम कर्म के, मिलता है भाई॥
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई॥109॥

ॐ ह्रीं नील वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्मोदय से नाम कर्म के, पीत रंग भाई।
प्राणी पाते हैं इस जग में, अतिशय दुखदायी॥
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई॥110॥

ॐ ह्रीं पीत वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लाल रंग में रागादि से, आस्रव हो भाई।
नाम कर्म के कारण पाते, प्राणी दुखदायी॥
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई॥111॥

ॐ ह्रीं लाल वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्वेत वर्ण की महिमा जग में, मुनियों ने गाई।
कारण रागादि आस्रव का, होवे दुखदायी॥
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाशकर, मुक्ति श्री पाई॥112॥

ॐ ह्रीं शुक्ल वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

मरण करें नर पशु लोक के, नरक गति जब जाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह की, आकृति प्राणी पाते हैं॥
यही नरक गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश॥113॥

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चतुर्गति के जीव मरण कर, पशु गति जब पाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह सम, आकृति में ही जाते हैं॥
यह तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश॥114॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगत्यानुपूर्वी नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चतुर्गति के जीव मरण कर, मानव गति जब पाते हैं।
पूर्व देह सम विग्रह गति की, आकृति में ही जाते हैं॥
यह मनुष्य गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश॥115॥

ॐ ह्रीं मनुष्य गत्यानुपूर्वी नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मरण करें नर पशु लोक में, देव गति जब पाते हैं।
पूर्व देह सम विग्रह गति के, आकृति में ही जाते हैं॥
यह कही देव गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश॥116॥

ॐ ह्रीं देव गत्यानुपूर्वी नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(तर्ज : नित देव मेरी...)

आक तूल सम नहीं हल्का, लोह सम भारी नहीं।
वह अगुरुलघु है कर्म भाई, जीव तन पावें कहीं॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥117॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघु नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

निज घात निज के अंग से हो, कर्म वह उपघात है।
अरिहन्त को यह नहीं होता, सिद्ध की क्या बात है॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥118॥

ॐ ह्रीं उपघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो घात पर का शस्त्र से या, अग्नि से विष से जहाँ।
परघात जानो कर्म यह तुम, चैन न मिलता वहाँ॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥119॥

ॐ ह्रीं परघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उष्ण किरणें सूर्य सम हैं, मूल में जो शीत हैं।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत हैं॥
कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥120॥

ॐ ह्रीं आतप नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रमा सम शीत किरणें, मूल में भी शीत हैं।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत हैं॥
कर्म है यह नाम उद्योत, तीव्र दुखदायी महा।
नाश कर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा॥121॥

ॐ ह्रीं उद्योत नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्छ्वास निःस्वास मिलता, कर्म के फल से अहा।
घन घात कर्मों का अनादि, से स्वयं हमने सहा॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥122॥

ॐ ह्रीं उच्छ्वास नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन हो आकाश में शुभ, गति शुभ विहायस् कही।
उदय से प्राणी जगत के, प्राप्त करते हैं सही॥

अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥123॥

ॐ ह्रीं प्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गमन प्राणी टेढा-मेढ़ा, कर्म के कारण सभी।
अशुभ विहायोगति जानो, कर्म बन्धन हो तभी॥
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन॥124॥

ॐ ह्रीं अप्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(शम्भू-छन्द)

जीव एक तन पाने वाला, एक रहे जिसका स्वामी।
नामकर्म प्रत्येक कहा यह, कहते हैं अन्तर्यामी॥
कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भावसहित करते गुणगान॥125॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

एक देह को पाने वाले, हैं अनेक जिसके स्वामी।
नामकर्म साधारण है यह, कहते जिन अन्तर्यामी॥
कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भावसहित करते गुणगान॥126॥

ॐ ह्रीं साधारण नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वि इन्द्रिय आदि जीव आगम, में कहे हैं त्रस सभी।
जो उदय से त्रस कर्म के फल, भोगते तन पा अभी॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥127॥

ॐ ह्रीं त्रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पृथ्वी आदि देह पाते, लोक में प्राणी अहा।
वह कर्मफल से रहे स्थिर, अतः स्थावर कहा॥

अब कर्म का हो नाश मेरा, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥128॥

ॐ ह्रीं स्थावर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव जो रोके रुके न, लोक में कोई कभी।
वह नाम कर्म कहे गये हैं, सूक्ष्म आगम में सभी॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥129॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्म नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव जो रोके रुके, स्थूल उनको जानिए।
कर्मोदय से नाम होते, सभी यह पहिचानिए॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥130॥

ॐ ह्रीं स्थूल नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूर्णता की शक्ति पावें, देह में अपनी अहा।
पर्याप्त है यह कर्म भाई, जैन आगम में कहा॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥131॥

ॐ ह्रीं पर्याप्त नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूर्णता की शक्ति अपनी, देह में पाते नहीं।
वे कर्मोदय से नाम के, अपर्याप्त कहलाते वही॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥132॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्त नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातु अरु उपधातु जिसकी, देह में स्थिर रहे।
वह नाम कर्म स्थिर कहा है, घात तन में कई सहे॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥133॥

ॐ ह्रीं स्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस देह में धातु तथा, उपधातु स्थिर न रहे।
कष्ट अस्थिर नाम से कई, जीव तन में भी सहे॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥134॥

ॐ ह्रीं अस्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से देह में, अवयव बने सुन्दर सभी।
शुभ कर्म भाई नाम है वह, पुण्य से मिलता कभी॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥135॥

ॐ ह्रीं शुभ नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस देह के अवयव सभी, सुन्दर नहीं बनते कभी।
वह कर्म जानो अशुभ भाई, लोक में अपना सभी॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥136॥

ॐ ह्रीं अशुभ नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव का तन देख करके, प्रीति करते हैं सभी।
वह कर्म भाई सुभग जानो, अप्रीति न धारें कभी॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥137॥

ॐ ह्रीं सुभग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणगान से भी जीव जग के, प्रीति न धारें कभी।
यह कर्म दुर्भग कहा भाई, सत्य यह मानो सभी॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥138॥

ॐ ह्रीं दुर्भग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी मधुर हो जीव की वह, कर्म सुस्वर जानिए।
हो कर्मोदय से प्राप्त भाई, सत्य यह पहिचानिए॥

अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥139॥

ॐ ह्रीं सुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी मधुर न जीव की हो, कर्म दुस्वर है कहा।
यह कर्मोदय से नाम के, प्राणी सदा पाता रहा॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥140॥

ॐ ह्रीं दुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो देह में शुभ कांति अनुपम, कर्म वह आदेय है।
संसार धारी प्राणियों को, कहा जो उपादेय है॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥141॥

ॐ ह्रीं आदेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हों वर्ण नख मुख रुक्ष सारे, देह में कांति नहीं।
अनादेय जानो कर्म यह तुम, श्रेष्ठ हो कोई नहीं॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥142॥

ॐ ह्रीं अनादेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणहीन का भी सुयश भारी, फैलता शुभ कर्म से।
यह यशः कीर्ति कर्म जानो, प्राप्त होता धर्म से॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥143॥

ॐ ह्रीं यशःकीर्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुणवान का भी सुयश भाई, लोक में होवे नहीं।
अयशः कीर्ति कर्मोदय से, जन्म ले कोई कहीं॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥144॥

ॐ ह्रीं अयशःकीर्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

केवली के द्वय चरण में, जीव सम्यक्त्वी अहा।
हो बन्ध तीर्थंकर प्रकृति का, शास्त्र में ऐसा कहा॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥145॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म है यह नाम भाई, बंध का आधार है।
दुःख पाता जीव जग में, नहीं जिसका पार है॥
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें॥146॥

ॐ ह्रीं सर्व नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

स्व-पर निन्दा और प्रशंसा, करते जो जग के प्राणी।
लघु वृत्ति से उच्च गोत्र हो, ऐसा कहती जिनवाणी॥
गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।147॥

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर निन्दा अरु आत्म प्रशंसा, करते जो जग के प्राणी।
नीच गोत्र का आस्रव करते, ऐसा कहती जिनवाणी॥
गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।148॥

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च नीच ये भेद गोत्र के, आगम में बतलाए हैं।
झूला की भाँति हम झूले, बहुतक कष्ट उठाए हैं॥
गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं॥149॥

ॐ ह्रीं उच्च-नीच गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- दाता देना चाहते, दे न पावें दान।
अन्तराय यह दान है, नाश किए भगवान॥150॥

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लेना चाहे लाभ जो, ले न पावे दान।
अन्तराय यह लाभ है, नाश किए भगवान॥151॥

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भोग भोगना चाहते, भोग सकें न भोग।
अन्तराय यह भोग है, मैटे प्रभु यह रोग॥152॥

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चाह रहे उपभोग कई, मिले नहीं उपभोग।
अन्तराय उपभोग भी, मैटे जिन यह रोग॥153॥

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्मोदय से वीर्य की, प्राणी करते हान।
यही वीर्य अन्तराय है, नाश किए भगवान॥154॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- पंच भेद बतलाए हैं, अन्तराय के खास।
आतम शक्ति हो प्रकट, होवें कर्म विनाश॥155॥

ॐ ह्रीं सर्व अन्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(चाल छन्द)

ज्ञानावरणादिक सारे, देते फल न्यारे-न्यारे।
आठों कर्मों के नाशी, हैं पूज्य सिद्ध शिव वासी॥156॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अड़तालीस एक सौ जानो, उत्तर सब भेद प्रमानो।
जिन सिद्ध कर्म के नाशी, हैं पूज्य सिद्ध शिव वासी॥157॥

ॐ ह्रीं एकशताष्टचत्वारिंशतकर्मप्रकृतिरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

परिणाम भेद कई जानो, संख्यात रूप पहिचानो।
सब वचन योग के नाशी, हैं सिद्ध पूज्य अविनाशी॥158॥

ॐ ह्रीं संख्यातकर्मरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं वचन भेद से भाई, परिणाम अधिक दुःखदायी।
जो असंख्यात बतलाए, सिद्धों ने सभी नशाए॥159॥

ॐ ह्रीं असंख्यातकर्मरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविभाग प्रतिच्छेद अनन्ता, गाये केवलि भगवन्ता।
उन सबके रहे विनाशी, जिन सिद्ध पूज्य अविनाशी॥160॥

ॐ ह्रीं अनन्तकर्मरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब भाग अनन्तानन्ता, वह नाश किए भगवन्ता।
जिन कर्म भेद के नाशी, हैं सिद्ध पूज्य अविनाशी॥161॥

ॐ ह्रीं अनन्तानन्तकर्मरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध स्वपद को पाए, आनन्द स्वभावी गाए।
हम पावन अर्घ्य चढ़ाते, पद सादर शीश झुकाते॥162॥

ॐ ह्रीं आनन्दस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द धर्म कहलाए, जिन शिव पदवी को पाए।
हम पावन अर्घ्य चढ़ाते, पद सादर शीश झुकाते॥163॥

ॐ ह्रीं आनन्दधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक छन्द)

परमानन्द धर्म के धारी, सर्व जगत में मंगलकारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी॥164॥

ॐ ह्रीं परमानन्दधर्मात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्य स्वभाव धारने वाले, हर्ष विषाद रहित जिन आले।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी॥165॥

ॐ ह्रीं साम्यस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्य स्वरूपी आप कहाए, अनुपम समता भाव जगाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी॥166॥

ॐ ह्रीं साम्यस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के धारी जानो, महिमा शाली अतिशय मानो।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणों मम विशद नमामी॥167॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त स्वरूपी गाए, भेद गुणी गुरु सहित कहाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥168॥
ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त धर्म के धारी जानो, भेदाभेद स्वरूपी मानो।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥169॥
ॐ ह्रीं अनन्तधर्मात्मिकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त धर्म स्वरूपी गाए, धर्म सभी जिन रूप बनाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥170॥
ॐ ह्रीं अनन्तधर्मस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम स्वभाव धारी कहलाए, निज स्वभाव में लीन कहाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥171॥
ॐ ह्रीं समस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं संतुष्ट स्वयं के ज्ञाता, भवि जीवों के आनन्द दाता।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥172॥
ॐ ह्रीं संतुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम सन्तोष धारने वाले, निज गुण के हैं जो रखवाले।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥173॥
ॐ ह्रीं समसंतोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध निरंजन समगुण धारी, कर्म कलंक रहित अविकारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥174॥
ॐ ह्रीं साम्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरावाध हैं सम स्थाई, फैली है जग में प्रभुताई।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥175॥
ॐ ह्रीं साम्यस्थायिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्याकृत्य साम्य गुणधारी, अचल रूप तिष्ठे मनहारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥176॥
ॐ ह्रीं साम्यकृत्याकृत्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य शरण से रहित कहाए, जिनकी शरण सभी जन पाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥177॥
ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनन्य गुण के हैं धारी, गुण हैं जिनके विस्मयकारी।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥178॥
ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनन्य प्रमाण कहलाए, धर्म स्वयं निज का प्रगटाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥179॥
ॐ ह्रीं अनन्यधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो परिणाम विमुक्त कहाए, जिनकी महिमा यह जग गाए।
आतम लाभ किए जिन स्वामी, तिन चरणोंमम विशद नमामी॥180॥
ॐ ह्रीं परिणामविमुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंगप्रयात)

प्रभु ब्रह्म स्वरूप निर्द्वन्द गाये, विशद ज्ञान ज्योति अकलंक पाए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥181॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ब्रह्म गुणधारी जग में कहाए, सुनकर के महिमा हम भक्ति को आए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥182॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ब्रह्म चेतन कहाते हैं स्वामी, करे भक्ति तो क्यों न हो मोक्षगामी।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥183॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मचेतनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शुद्ध स्वभाव जिनने उपाया, अतः सिद्धपद आपने स्वयं पाया।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥184॥
ॐ ह्रीं शुद्धस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शुद्ध पारणामिक भाव पाए, अतः आप सिद्धों में स्वयं जा समाये।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥185॥
ॐ ह्रीं शुद्धपारिणामिकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुद्धि रहित हैं जिन सिद्ध स्वामी, बताए प्रभु सिद्ध स्वरूप नामी।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥186॥
ॐ ह्रीं अशुद्धिरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रहित शुद्धाशुद्ध आप स्वयं ही कहाए, अनुभव स्वयं से स्वयं में ही पाए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥187॥
ॐ ह्रीं संख्यातकर्मरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु जी अनन्त दृग स्वरूपी कहाए, करम आप दर्शनावरणी नशाए।
विशद भाव से गीत सिद्धों के गाते, चरणों में उनके सर ये झुकाते॥188॥
ॐ ह्रीं अनन्तदृकस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

दृगानन्द स्वभाव अनन्ता, पाए हो तुम हे भगवन्ता।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥189॥
ॐ ह्रीं अनन्तदृगानन्दस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अनन्त दृगुत्पादक हे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥190॥
ॐ ह्रीं अनन्तदृगुत्पादकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो अनन्त ध्रुवयी कहलाते, ज्ञानादर्श स्वयं ध्रुव पाते।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥191॥
ॐ ह्रीं अनन्तध्रुवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अव्यय भाव आपने पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥192॥
ॐ ह्रीं अव्ययभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निलयानन्त कहाए स्वामी, शिवपथ गामी अन्तर्यामी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥193॥
ॐ ह्रीं अनन्तनिलयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम अनन्ताकार कहाए, निराकार फिर भी कहलाए।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥194॥
ॐ ह्रीं अनन्ताकाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त स्वभाव आपने पाया, नहीं अंत जिसका बतलाया।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥195॥
ॐ ह्रीं अनन्तस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चित चिन्मय स्वरूपी स्वामी, सभी बने तव पद अनुगामी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥196॥
ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध प्रभु चिन्मय चिद्रूपी, आप कहाए शुद्ध स्वरूपी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥197॥
ॐ ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन चिद्रूप धर्म के धारी, शुद्ध भाव पाए अविकारी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥198॥
ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वानुभवोपलब्धि में रमते, चरण शतेन्द्र भाव से नमते।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥199॥
ॐ ह्रीं स्वानुभवउपलब्धिरमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वानुभूति रत रहने वाले, निरावरण जो रहे निराले।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥200॥
ॐ ह्रीं स्वानुभूतिरताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परमामृत रत जो कहलाए, सभी अरस रस जिन्हें ना भाए।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥201॥
ॐ ह्रीं परमामृतरताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परमामृत तुष्टी के धारी, विष सम विषय तजे अविकारी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥202॥
ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज में परम प्रीति जो धारे, वे जिन हैं आराध्य हमारे।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥203॥
ॐ ह्रीं परमप्रीताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल्लभ परम योग के धारी, अक्षय निधि प्राप्त अनगारी।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥204॥

ॐ ह्रीं परमबल्लभयोगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अव्यक्त भाव शुभ धारे, जिनने कर्म शत्रु सब जारे।
अतः आपके हम गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥205॥

ॐ ह्रीं अव्यक्तभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल–टप्पा)

हैं एकत्व स्वरूपी अनुपम, सिद्ध प्रभु भाई।
जिनके गुण की तीन लोक में, फैली प्रभुताई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥206॥

ॐ ह्रीं एकत्वस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु एकत्व गुणों के धारी, कहलाए भाई।
तीन लोक में जिन सिद्धों ने, महिमा दिखलाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥207॥

ॐ ह्रीं एकत्वगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं एकत्व भाव के धारी, श्री जिन सुखदायी।
भवि जीवों ने अतः प्रभु की, शुभ महिमा गाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥208॥

ॐ ह्रीं एकत्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हैं द्वैत भाव के नाशी, शुभ मंगलदायी।
अतः सभी लोगों ने सिद्धों, की महिमा गाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥209॥

ॐ ह्रीं द्वैतभावविनाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध प्रभु शास्वत कहलाए, इस जग में भाई।
अव्यय अविनाशी इस जग में, भवि जन सुखदायी॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥210॥

ॐ ह्रीं शास्वताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्विकार निर्मल अविकारी, सिद्ध कहे भाई।
चित् प्रकाश शास्वत है जिनकी, शुभ मंगलदायी॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥211॥

ॐ ह्रीं शाश्वतप्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शास्वत उद्योत स्वरूपी, जिनकी प्रभुताई।
निरावरण दिनकर सम सोहें, परम सिद्ध भाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥212॥

ॐ ह्रीं शाश्वतउद्योताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शास्वत अमृत चन्द्र कहाए, जगे जन सुखदायी।
ज्ञानान्द सुधाकर अनुपम, ज्ञान ज्योति भाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥213॥

ॐ ह्रीं अमृतचन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे सिद्ध शास्वत अमूर्त जिन, अविनाशी भाई।
निराधार निर्द्वन्द अरूपी, सिद्ध दशा पाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥214॥

ॐ ह्रीं शाश्वतअमृतमूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सूक्ष्म जिन सिद्ध हमारे, दुःख हर्ता भाई।
जग में सर्व गुणों के धारी, जन–मन शुभदायी॥

सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥215॥
ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्मावकाश कहाए अनुपम, सिद्ध प्रभु भाई।
एकमेक कई सिद्ध समाये, त्रिभुवन सुखदायी॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥216॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म गुणों को पाने वाले, जग मंगलदायी।
वृहस्पति भी गुण गाने में, न समर्थ भाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥217॥
ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम रूप गुप्ति के धारी, कहलाए भाई।
द्वैत भाव को तजने वाले, निज के अनुयायी॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥218॥
ॐ ह्रीं परमरूपगुप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरवधि सुख में लीन रहें नित, जिनवर शिवदायी।
सर्व ऋद्धियाँ पाने वाले, सिद्ध श्री पाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥219॥
ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरवधि गुण पा नाश किए हैं, दुर्गुण दुःखदायी।
ध्यान लगाकर चेतन शक्ति, जिनने प्रगटाई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥220॥
ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरवधि निज स्वरूप प्राप्त कर, बने सिद्ध भाई।
आधि उपाधि सभी तन पाई, जग में प्रभुताई॥
सभी मिल पूजो हर्षाई।
नित्य निरंजन भव भय भंजक, सिद्ध कहे भाई॥221॥
ॐ ह्रीं निरवधिस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

स्वयं बोध पाके बने, अतुल ज्ञान के ईश।
सिद्ध प्रभु के पद युगल, झुका रहे हम शीश॥222॥
ॐ ह्रीं अतुलज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाए प्रभु अतुल सुख, दुःख से लिया विराम।
निज सुख पाने को विशद, शत-शत बार प्रणाम॥223॥
ॐ ह्रीं अतुलसुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतुल भाव पाके बने, निज स्वभाव के नाथ।
परम विशुद्धि हेतु हम, झुका रहे पद माथ॥224॥
ॐ ह्रीं अतुलभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सिद्ध जिनवर बने, अतुल गुणों के ईश।
अतः चरण में तव विशद, भक्त झुकाते शीश॥225॥
ॐ ह्रीं अतुलगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आपके गुणों का, फैला अतुल प्रकाश।
विशद गुणों के भाव से, भक्त बने सब दास॥226॥
ॐ ह्रीं अतुलप्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण में रहते मगन, अचल कहाए देव।
सदगुण पाने के लिए, पूजा करें सदैव॥227॥
ॐ ह्रीं आत्मवासजिनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल गुणों के कोष हैं, सिद्ध प्रभु भगवान।
निज गुण पाने के लिए, करते तव गुणगान॥228॥
ॐ ह्रीं अचलगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल स्वभावी बन गये, करके कर्म विनाश।
निज चैतन्य स्वरूप का, कीन्हा विशद प्रकाश॥229॥
ॐ ह्रीं अचलस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथिर देह स्वभाव तज, पाया अचल स्वरूप।
अतः चरण के दास बन, झुकते हैं शत् भूप॥230॥
ॐ ह्रीं अचलस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरालम्ब आलम्ब तज, स्वाश्रित बने जिनेश।
आतमावलम्बन के लिए, धरा दिगम्बर भेष॥231॥
ॐ ह्रीं निरालम्बाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहितावलम्बन आप हो, पृथ्वी पति जगदीश।
तव आलम्बन हेतु हम, झुका रहे पद शीश॥232॥
ॐ ह्रीं आलम्बरहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म लेप से हीन हैं, सिद्ध प्रभु भगवान।
कहलाए निर्लेप जिन, पावन परम महान॥233॥
ॐ ह्रीं निर्लेपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कषायों से रहित, निष्कषाए जिनदेव।
निष्कषाए बनने सभी, तव पद झुकें सदैव॥234॥
ॐ ह्रीं निष्कषायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे आत्म रति जिन प्रभु, आत्मश्रित गुणखान।
आतम हित के भाव से, करते हम गुणगान॥235॥
ॐ ह्रीं आत्मरतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप में लीन हो, बने गुप्त स्वरूप।
गुप्ति मारग मोक्ष का, गुप्ति है रस कूप॥236॥
ॐ ह्रीं स्वरूपगुप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध द्रव्यता प्राप्त कर, पाया शिव साम्राज्य।
मुक्ति वधू के कन्त बन, किया स्वयं पर राज्य॥237॥
ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह संसार असार तज, मुक्ति सदन के नाथ।
असंसार के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥238॥

ॐ ह्रीं असंसाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छन्द)

करके निज आतम में निवास, स्वानन्द किए निज गुण प्रकाश।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥239॥
ॐ ह्रीं स्वानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानन्द भाव पाए विशेष, जिन सिद्ध कर्म नाशे अशेष॥
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥240॥
ॐ ह्रीं स्वानन्दभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानन्द स्वरूपी जिनाधीश, सुर नर झुकते जिनपद ऋशीष।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥241॥
ॐ ह्रीं स्वानंदस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानन्द गुणों को प्रभु धार, जग जन को करते विभव पार।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥242॥
ॐ ह्रीं स्वानंदगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानन्द स्वयं संतोष धार, जग का वैभव छोड़े असार।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥243॥
ॐ ह्रीं स्वानंदसंतोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुद्ध भाव पर्यायवान, शुभ गुण गण के अतिशय निधान।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥244॥
ॐ ह्रीं शुद्धभावपर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने पाया स्वतंत्र धर्म, निज चेतन का जाना सुमर्म।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥245॥
ॐ ह्रीं स्वतंत्रधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम स्वभाव में हुए लीन, निर्दोष हुए कर कर्म क्षीण।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥246॥
ॐ ह्रीं आत्मस्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन परम सुचित् परिणाम धार, इस भव सागर से हुए पार।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥247॥

ॐ ह्रीं परमचित्परिणामाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने पाया चिद्रूप धर्म, वह हुए लोक में विगत कर्म।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥248॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिद्रूप गुणों के बने ईश, अतएव झुकाते चरण शीश।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥249॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन परम स्नातक हैं महान, तीनों लोकों में जो प्रधान।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥250॥

ॐ ह्रीं परमस्नातकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं स्नातक धर्मवान, जिनकी महिमा जग में महान।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥251॥

ॐ ह्रीं स्नातकधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहलाए सर्वावलोक, न रहा हृदय में जरा शोक।
तुम नित्य निरंजन भाव युक्त, हम करते पूजा दोष मुक्त॥252॥

ॐ ह्रीं सर्वावलोकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

लोकाग्र स्थित रहे जिनवर, ज्ञान दर्शन वान हैं।
शिवसुख पयो राशी महीधर, निज गुणों की खान है॥
जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप अरु फल साथ में।
कर जोर वन्दन कर रहे, ले अर्घ्य अपने हाथ में॥253॥

ॐ ह्रीं लोकाग्रस्थिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यापक हैं लोकालोक में, जो सद् गुणों की खान हैं।
आनन्द मय अनुपम अलौकिक, सिद्ध की पहचान हैं॥
जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप अरु फल साथ में।
कर जोर वन्दन कर रहे, ले अर्घ्य अपने हाथ में॥254॥

ॐ ह्रीं लोकालोकव्यापकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

अतिशय प्रभु आनन्दमय हैं, निज गुणों के कोष हैं।
है दोष का न लेश जिनके, परम जो निर्दोष हैं॥
जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप अरु फल साथ में।
कर जोर वन्दन कर रहे, ले अर्घ्य अपने हाथ में॥255॥

ॐ ह्रीं आनंदविधानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन्द पूरण जो कहाए, विशद ज्ञानी आप हैं।
जो जगत जन के लोक में भी, हरण हर संताप हैं॥
जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप अरु फल साथ में।
कर जोर वन्दन कर रहे, ले अर्घ्य अपने हाथ में॥256॥

ॐ ह्रीं आनंदपूर्णाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ छप्पन सिद्ध के गुण, का किया गुणगान हैं।
श्रेष्ठ उनसे प्राप्त हों गुण, जो गुणों की खान हैं॥
जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप अरु फल साथ में।
कर जोर वन्दन कर रहे, ले अर्घ्य अपने हाथ में॥257॥

ॐ ह्रीं षट्पंचाशतअधिकद्विशतगुणयुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्व.स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

काल अनादि जग भ्रमण, मैटा कर निज ध्यान।
रत्नत्रय धर आपने, पाया केवल ज्ञान॥
महिमा गाने को यहाँ, आये हम सब बाल।
तव गुण पाने के लिए, गाते हम जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

पर निमित्त व्यवहार त्याग कर, पाया निज का शुद्ध स्वरूप।
बिन कारण जग पालक हो तुम, वन्दन करते सुर-नर-भूप॥
पर सुख-दुःख कारण विनाश कर, पर के सुख-दुःख शक्ति धार।
नित नव जन्म रीति के नाशी, सर्व लोक व्यापी शुभकार॥1॥
लीला हास विलास नाशकर, निज स्वरूप में करें प्रकाश।
क्रिया-कलाप शयनाशन आदि, तजकर शिवपद कीन्हें वास॥

काम दाह भोगादि विरहित, निजानन्द निर्द्वन्द अनूप।
शुद्ध निरंजन अमल ज्ञानमय, अव्यावाध हुए चिद्रूप॥2॥
धर्म मर्म बन हन कुठार से, कीन्हा सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
वन अग्नि के हनन हेतु जल, निज शक्ति का किए विकाश॥
नभ की सीमा नहीं है कोई, नहीं काल का अन्त रहे।
सुगुण अनन्तानन्त आपके, अक्षय निधि भगवन्त कहे॥3॥
ज्ञान सूरि के मुख दृश से हो, सुधा जलधि आनन्द प्रवाह।
परम शांति की खान आप हैं, जिसकी नहीं है कोई थाह॥
आत्मलीन होके विकल्प का, किया पूर्णतः तुमने नाश।
स्वानुभूति में स्थित होकर, कीन्हा केवलज्ञान प्रकाश॥4॥
दर्शन ज्ञान गुण स्वाभाविक, कहे असाधारण जो स्वभाव।
राग-द्वेष आदि विभाव गुण, उनका कीन्हा पूर्ण अभाव॥
स्वाभाविक गुण पर्यायों को, पाया तुमने भली प्रकार।
स्पर्शादि पर गुण का भी, किया आपने है परिहार॥5॥
अव्यय अविनाशी अखण्ड पद, पाया तुमने मुक्ति धाम।
नाश किया संसार भ्रमण का, प्राप्त किया शिवपद विश्राम॥
गुण अनन्त प्रगटाए तुमने, किया कर्म का पूर्ण विनाश।
सुख अनन्त में रमण किए प्रभु, निज स्वभाव में कीन्हा वास॥6॥
भव्य जीव तव अर्चा करके, पाते सम्यक् दर्शन ज्ञान।
आत्म तत्त्व प्रगटाने वाले, गुण गाते हैं सर्व प्रधान॥
'विशद' भावना भाते हैं हम, तव चरणों पाएँ विश्राम।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम॥7॥

दोहा- महामंत्र गुणगान तव, नर जीवन का सार।
विघ्न विनाशक लोक में, सब गुण का दातार॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्पंचाशदधिकद्विशतदलोपरिस्थित श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक चूड़ामणि, आप त्रिलोकी नाथ।
चरण कमल में आपके, झुका रहे हम माथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सप्तम पूजा

स्थापना

बिन्दु समन्वित ऊर्ध्व अधो 'र', बीजाक्षर शुभ रहा हकार।
अकारादि स्वर युक्त कर्णिका, वर्ण युक्त वसुदल शुभकार॥
मंत्र अनाहत अग्रभाग में, घेरा ह्रीं किए मनहार।
सिद्ध चक्र का आह्वानन कर, पूजा करते मंगलकार॥
सुर नर मुनिवर सिद्ध यंत्र का, करते भाव सहित नित ध्यान।
सिंह हिरण को गरुड़ नाग को, यंत्र कर्म को रहा महान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्त सिद्धाधिपते ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अति अमल शीतल नीर प्रासुक, कलश में भर लाए हैं।
हम रोग त्रय जन्मादि अपने, नाश करने आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह परम सुरभित मलय चन्दन, श्रेष्ठ घिसकर लाए हैं।
भवताप का संताप हरने, हम प्रभु पद आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धवल अक्षत गरम जल से, श्रेष्ठ धोकर लाए हैं।
हम श्रेष्ठ अक्षय सौख्य पाने, जिन शरण में आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम भक्ति की शुभ गंध में रंग, पुष्प अनुपम लाए हैं।
अति सबल है यह काम शत्रु, को नशाने आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भक्ति रस से युक्त व्यंजन, हम चढ़ाने लाए हैं।
है क्षुधा व्याधि अति पुरानी, नाश करने आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्ज्ञान के शुभ दीप जगमग, हम जलाकर लाए हैं।
मिथ्यात्व का तम सघन फैला, वह नशाने आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब सुतप अग्नि में करम की, धूप खेने लाए हैं।
चैतन्य चिन्मय रूप अपना, प्रकट करने आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन भक्ति का फल प्राप्त करने, फल चढ़ाने लाए हैं।
है मोक्ष फल अक्षय मनोहर, वही पाने आए हैं॥
प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण जो, तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व आदि वसु गुणों का, अर्घ्य हम यह लाए हैं।
अनुपम अलौकिक सुपद अतिशय, अनर्घ पाने आए हैं॥

प्रभु अष्ट कर्मों से रहित, निर्दोष निर्मल सिद्ध हैं।
हम पूजते उनके चरण, जो तीन लोक प्रसिद्ध हैं॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने द्वादशाधिकपञ्चशत गुणसंयुक्ताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(512 गुण सहित सिद्धों के अर्घ्य)

दोहा- अष्ट कर्म को नष्ट कर, हुए सिद्ध भगवान।
पुष्पाञ्जलि कर हम यहाँ, करते हैं गुणगान॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छंद डालर)

कर्म घातिया जिनने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
दिव्य देशना जिनने भाई, भवि जीवों को दी शिवदायी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में पूज्य कहाए, सुर-नर-मुनि जिनके गुण गाए।
जन्मोत्सव जिनका शुभकारी, जन-जन को है मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान स्वरूपी, श्री अरिहंत रहे चिद्रूपी।
मिथ्यातम को हरने वाले, चेतनता के हैं रखवाले॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हच्चिद्रूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-चिद्रूप गुणों के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
निज चिद्रूप सुगुण प्रभु पाए, वह गुण पाने प्रभु पद आए॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हचिद्रूपगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नशाए, केवल ज्ञान भान प्रगटाए।
भव्यों में सद्ज्ञान जगाए, अतः सभी प्रभु पद सिर नाए॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्माधर्म के फल को देखे, ज्यों का त्यों निज गुण से लेखे।
ज्ञाता दृष्टा अतः कहाए, अतः सभी गुण तुमरे गाए॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महाबल तुमसे हारा, कहीं मिला न उसे सहारा।
लोकालोक तुमने प्रगटाया, शुभ अरहंत सुपद को पाया॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण नशाया, केवल दर्शन गुण प्रगटाया।
युगपद लोकालोक विलोके, योगों की चंचलता रोके॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घट-पटादि सब द्रव्य प्रकाशे, सब प्रत्यक्ष रवि सम भासे।
अर्हत् ज्ञान भान प्रगटाए, विशद ज्ञान के कोष कहाए॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शयनासन भोजन बिन स्वामी, देह दीप्ति पाते प्रभु नामी।
परम वीर्य गुण पाने वाले, चेतन तत्त्व के हैं रखवाले॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य तत्त्व के भेद बखाने, संशय रहित प्रभु ने जाने।
अर्हत् सम्यक् गुण के धारी, पूज्य हुए जग मंगलकारी॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सम्यक्त्वगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान सलिल से लोभ नशाया, शुद्ध स्वरूप साथ प्रगटाया।
अर्हत् शौच गुणों के धारी, पूज्य हुए जग मंगलकारी॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हत्शौचगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नय प्रमाण श्रुतज्ञान प्रकाशे, द्वादशांग जिनवाणी भासे।
अर्हत् द्वादशांग के धारी, पूज्य हुए जग मंगलकारी॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपत मन इन्द्रिय बिन गाये, सर्व चराचर द्रव्य बताये।
अर्हत् भिन्न बोध के स्वामी, पूज्य हुए जग अन्तर्यामी॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भिन्नबोधकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभव का कुछ अंश बताए, दिव्य ध्वनि में प्रभु प्रगटाए।
अर्हत् श्रुतावधि के स्वामी, पूज्य हुए जग अन्तर्यामी॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हत्श्रुतावधिगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमावधि सर्वावधि पाए, क्रमशः केवल ज्ञान जगाए।
अर्हत् अवधिज्ञान के धारी, पूज्य हुए जग अन्तर्यामी॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हद्अवधिगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, बने बाद प्रभु केवलज्ञानी।
अर्हत् शुद्ध ज्ञान के धारी, पूज्य हुए जग अन्तर्यामी॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छुद्धमनःपर्ययभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहमहातम जो विनशाए, अतिशय केवल ज्ञान उपाये।
अर्हत् केवल ज्ञान के स्वामी, पूज्य हुए जग अन्तर्यामी॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहवान सब रहे विरूपी, अर्हत् केवलज्ञान स्वरूपी।
सर्वोत्तम यह रूप बताया, तीन लोक में पूज्य कहाया॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विरोधी पर जय पाए, केवल दर्शन प्रभु प्रगटाए।
सर्वोत्तम यह रूप बताया, तीन लोक में पूज्य कहाया॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : जोगीरासा)

कर्म आवरण नाश किए प्रभु, केवल ज्ञान जगाए।
भवि जीवों को शिव दर्शायक, जगत पूज्यता पाए॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम भवदधि पार हुए प्रभु, बल अनन्त प्रगटाए।
अर्हत् केवल वीर्य वली वन, शिवपुर धाम बनाए॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर विघ्न विनाशक हैं जो, तीन लोक शुभकारी।
मंगलमय अर्हन्त सर्वदा, जग जन मंगलकारी॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु दर्शन आदि नाशें, क्षायिक मंगलकारी।
अर्हत मंगल दर्शन पाए, अनुपम अति शुभकारी॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर संशय नाश किए प्रभु, विशद ज्ञान के धारी।
अर्हत् मंगल ज्ञान जगाए, भविजन मंगलकारी॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग जरामय आदि रहित प्रभु, अतुल वली जिन स्वामी।
अर्हत् वीर्य वली मंगलमय, बने मोक्षपद गामी॥26॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकान्त युत श्रुत के द्वारा, सर्व तत्त्व प्रगटाए।
द्वादशांग मंगलमय वाणी, जिन अर्हन्त बताए॥27॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलद्वादशांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रत्यक्ष अनुमान सुवाचित, सुमति ज्ञान के धारी।
अभिनिबोध अर्हत् मंगलमय, पूज्य रहे शुभकारी॥28॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलअभिन्नबोधकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नय विकल्प श्रुत अंग पक्ष के, त्यागी हैं जिन स्वामी।
ज्ञाता दृष्टा अर्हत् मंगल, ज्ञानी अन्तर्यामी॥29॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलश्रुतात्मकजिनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशावधि परमा-सर्वावधि, पाये पद अरहंता।
अवधिज्ञान अर्हन्मंगलमय, कहे प्रभु भगवन्ता॥30॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलावधिज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, केवलज्ञान उपाए।
भवि जीवों को शिव दर्शायक, अर्हन् मंगल गाए॥31॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलमनःपर्ययज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपत द्रव्य चराचर भासी, केवल ज्ञान प्रकाशे।
मंगल केवलज्ञानी अर्हत्, कर्म घातिया नाशे॥32॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन निराबाध शुभ, निरावरण शुभकारी।
केवलज्ञान स्वरूपी अर्हन्, जग में मंगलकारी॥33॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन गुण का नाश आवरण, क्षायिक दर्शन पाए।
केवल दर्शन पाने वाले, अर्हन् मंगल गाए॥34॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

ज्ञानावरण नाशकर स्वामी, क्षायिक ज्ञान उपाए।
अर्हन् केवलज्ञानी अनुपम, मंगलमय कहलाए॥35॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल रूप महा मंगलमय, जिन अर्हन्त उपाए।
जिन अर्हन्त सिद्धपद पाये, गुण उनके हम गाए॥36॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम जिन शुद्ध स्वरूपी, परमानन्दी गाए।
जिन अरहंत रहे मंगलमय, मंगल धर्म उपाए॥37॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल धर्म स्वरूपी, इस जग में कहलाए।
अविनाशी अविकार परम पद, परम सिद्ध जिन पाए॥38॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलधर्मस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न विनाशक सब विभाव मय, उत्तम मंगल गाए।
अर्हत् मंगल शिवपुर वासी, सर्वोत्तम कहलाए॥39॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलउत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम कहलाए, लोक शिखर के वासी।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, आतम तत्त्व प्रकाशी॥40॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोधक छन्द)

लोकाश्रित जो गुण बतलाए, वह विभावमय सारे गाए।
अर्हत् लोकोत्तम गुणधारी, तिन पद में है ढोक हमारी॥41॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी मिथ्या ज्ञान बताए, अज्ञानी प्राणी सब पाए।
हैं अर्हत् लोकोत्तम ज्ञानी, जिनके पद पूजे सब प्राणी॥42॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक दर्शन जो प्रगटाए, वह अर्हन्त प्रभु कहलाए।
लोकोत्तम दर्शन के धारी, अर्हत् पद में ढ़ोक हमारी॥43॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म वली ने सभी हराए, उसे नाश अरहंत कहाए।
अर्हत् लोकोत्तम बलधारी, जिनके पद में ढ़ोक हमारी॥44॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षातीत ज्ञान प्रगटाए, अर्हत् लोकोत्तम कहलाए।
अभिनिवोध आदि गुणधारी, अर्हत् पद में ढ़ोक हमारी॥45॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअभिनिबोधकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परमावधि ज्ञान के धारी, हुए केवली मंगलकारी।
अवधिज्ञान लोकोत्तम पाए, अर्हत् लोक पूज्य कहलाए॥46॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअवधिज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञान मनःपर्यय जिन पाए, फिर निज केवलज्ञान जगाए।
लोकोत्तम मनःपर्यय ज्ञानी, अर्हत् के पद पूजें प्राणी॥47॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज का निज में ज्ञान जगाए, केवलज्ञानी वह कहलाए।
केवलज्ञान स्वरूपी जानो, अर्हत् लोकोत्तम पहिचानो॥48॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वोत्तम तिहुँ लोक प्रकाशी, केवलज्ञान कहा सुख राशी।
लोकोत्तम जिन केवलज्ञानी, अर्हत् पद पूजें सब ज्ञानी॥49॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम केवल पर्यायी, अर्हत् सिद्धों के अनुयायी।
जिनकी महिमा जग से न्यारी, जिनके पद में ढ़ोक हमारी॥50॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य असाधारण गुणधारी, अर्हत् लोकोत्तम उपकारी।
केवलज्ञान स्वरूपी स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी॥51॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम कैवल्य स्वरूपी, अर्हत् लोकोत्तम निजरूपी।
लोकालोक चराचर ज्ञानी, पद पूजे जग के सब प्राणी॥52॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम कैवल्य स्वरूपी, अर्हत् बने सिद्ध अनुरूपी।
जिनकी महिमा गाने वाले, प्राणी जग में रहे निराले॥53॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अर्हत् लोकोत्तम कहलाए, ध्रुव भावों से सहित बताए।
लोकालोक चराचर ज्ञानी, पद पूजे जग के सब प्राणी॥54॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमध्रुवभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अर्हत् लोकोत्तम कहलाए, भाव स्वयं के निज में पाए।
लोकालोक चराचर ज्ञानी, पद पूजे जग के सब प्राणी॥55॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्थिर भाव स्वयं प्रगटाए, अर्हत् लोकोत्तम कहलाए।
लोकालोक चराचर ज्ञानी, पद पूजे जग के सब प्राणी॥56॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो भी अर्हत् शरण में जावें, वे अपने सौभाग्य जगावें।
लोकालोक चराचर जाने, निज स्वरूप को वह पहिचाने॥57॥
ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अर्हत् शरण स्वरूपी प्राणी, की वाणी जग में कल्याणी।
लोकालोक चराचर जाने, निज स्वरूप को वह पहिचाने॥58॥
ॐ ह्रीं अर्हच्छरणरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अर्हत् के गुण गाने वाले, जिनकी शरण को पाने वाले।
लोकालोक चराचर जाने, निज स्वरूप को वह पहिचाने॥59॥
ॐ ह्रीं अर्हद्गुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मुक्ति केवलज्ञानी पावें, पहले केवलज्ञान उपावें।
जिनकी शरण में जो भी आवें, वे अपने सौभाग्य जगावें॥60॥
ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(डालर छन्द)

अर्हत् दर्शन शरणा पावें, वह शिवपथ पर बढ़ते जावें।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥61॥
ॐ ह्रीं अर्हद्दर्शनशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् शरण वीर्य कहलावें, वे भव वन में न भटकावें।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥62॥

ॐ ह्रीं अर्हद्वीर्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् द्वादशांग के धारी, श्रुतगण शरणागत मनहारी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥63॥

ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगश्रुतशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् अभिनिवोध के धारी, शरण प्राप्त कर बने पुजारी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥64॥

ॐ ह्रीं अर्हदअभिनिबोधकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् श्रुत शरणाय कहाए, अविनाशी पदवी को पाए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥65॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छ्रुतशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् अवधि बोध को पाए, अतः शरण में हम भी आए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥66॥

ॐ ह्रीं अर्हदवधिबोधशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मनःपर्यय श्रुत पाए, शरण मनीषी जग के आए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥67॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्ययशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल शरणा पाए, शिव रमणी के नाथ कहाए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥68॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल शरण स्वरूपी, द्रव्य जाने रूपी अनरूपी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥69॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलशरणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल धर्म उपाए, शरण प्राप्त करने हम आए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥70॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलधर्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल गुण के धारी, शरण प्राप्त करते अनगारी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥71॥

ॐ ह्रीं अर्हत्केवलगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मंगल गुण के स्वामी, शरण प्राप्त हो हे अनुगामी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥72॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मंगल से ज्ञान जगाए, शरणागत बनने सब आए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥73॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलज्ञानशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मंगल दर्शन पाए, अतः शरण में हम भी आए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥74॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलदर्शनशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मंगल बोधि जगाए, शरणागत जिन पद में आए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥75॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलबोधशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मंगल जग के स्वामी, केवल शरणा जग में नामी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥76॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलकेवलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम कहलाए, शरणा में पूजा को आए।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥77॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम गुणधारी, शरण पाए होवे अनगारी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥78॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम जिन स्वामी, वीर्यवान शरणागत नामी।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥79॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम गुण पाए, वीर्यवान शरणागत गाये।
चरण-शरण पाने हम आये, पावन अर्घ्य बनाकर लाए॥80॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पायत्त छन्द)

अर्हत् लोकोत्तम गाए, जो द्वादशांग श्रुत पाए।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥81॥

ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम जानो, अविनिवोध श्रुत मानो।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥82॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअभिनिबोधकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम गाए, जो अवधि ज्ञान शुभ पाए।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥83॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअवधिशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम कारी, मनःपर्यय के हैं धारी।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥84॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तममनःपर्ययशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥85॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम जानो, पाए विभूति शुभ मानो।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥86॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमविभूतिप्रधानशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम गाए, जो धर्म विभूति पाए।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥87॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमविभूतिधर्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम गाए, जो अनन्त चतुष्टय पाए।
है शरण श्रेष्ठ शुभकारी, इस जग में मंगलकारी॥88॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअनन्तचतुष्टयशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् अनन्त गुणधारी, हैं जग में मंगलकारी।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥89॥

ॐ ह्रीं अर्हदनन्तगुणचतुष्टाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् निज ज्ञान जगाए, जग जिन्हें स्वयंभू गाए।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥90॥

ॐ ह्रीं अर्हन्निजज्ञानस्वयंभुवे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् दस अतिशय धारी, जनमत पाए मनहारी।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥91॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दशअतिशय स्वयंभुवे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् दशातिशय पाये, जब केवलज्ञान उपाए।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥92॥

ॐ ह्रीं अर्हद्दशघातिक्षयज अतिशयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह अतिशय शुभ पाए, अर्हन्त प्रभु कहलाए।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥93॥

ॐ ह्रीं अर्हद्देवकृतचतुर्दशअतिशयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय के धारी, अर्हन्त बने शुभकारी।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥94॥

ॐ ह्रीं अर्हच्चतुस्त्रिंशत्अतिशयविराजमानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् ज्ञानी अविकारी, जो हैं अनन्त गुणधारी।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥95॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानानंदगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् ध्यानी कहलाए, जो ध्येयानन्त प्रगटाए।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥96॥

ॐ ह्रीं अर्हद्ध्यानानन्तध्येयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् अनन्त गुण पाए, शास्वत निज गुण प्रगटाए।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥97॥

ॐ ह्रीं अर्हदनंतगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सम्यक् तपधारी, हैं गुणानन्त अविकारी।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥98॥

ॐ ह्रीं अर्हत्तपअनन्तगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् परमातम गाए, निज आतम शक्ति जगाए।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥99॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् स्वरूपी जानो, जो श्रेष्ठ गुप्ति युत मानो।
जो श्रेष्ठ चतुष्टय पाए, अतिशय ज्ञानी कहलाए॥100॥

ॐ ह्रीं अर्हद्गुप्तस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

जो निज आतम को ध्याये, वह सिद्ध सुपद को पाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥101॥

ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज स्वरूप को पाए, वह सिद्ध स्वरूपी गाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥102॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वाश्रित गुण प्रगटाए, वह सिद्ध गुणी कहलाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥103॥

ॐ ह्रीं सिद्धगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सिद्ध ज्ञान के धारी, अशरीरी मंगलकारी।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥104॥

ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्रव्य लखें अविकारी, जिन सिद्ध दर्श गुणधारी।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥105॥

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध शुद्ध सम्यक्त्वी, अनुपम जो कहे मनस्वी।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥106॥

ॐ ह्रीं सिद्धशुद्धसम्यक्त्वेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध निरंजन गाए, अविकारी निज पद पाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥107॥

ॐ ह्रीं सिद्धनिरंजनेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्धाचल पद पाए, शिवपुर में धाम बनाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥108॥

ॐ ह्रीं सिद्धअचलपदप्राप्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन संख्यातीत पद पाए, शुभ सिद्ध शिवालय गाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥109॥

ॐ ह्रीं संख्यातीतसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो असंख्यात गुण पाए, फिर सिद्धश्री को पाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥110॥

ॐ ह्रीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सिद्ध अनन्त निराले, निज गुण में रमने वाले।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥111॥

ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जल में सिद्धी पाए, जल सिद्ध श्रेष्ठ कहलाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥112॥

ॐ ह्रीं जलसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन नगर गुफादि वाले, हैं स्थल सिद्ध निराले।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥113॥

ॐ ह्रीं स्थलसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में जो सिद्धि पाए, वह गगन सिद्ध कहलाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥114॥

ॐ ह्रीं गगनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर समुद्घात शिव पाए, वह सिद्ध स्वयंभू गाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥115॥

ॐ ह्रीं समुद्घातसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन समुद्घात शिव पाए, निज के गुण सिद्ध जगाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥116॥

ॐ ह्रीं असमुद्घातसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अतिशय रहित कहाए, साधारण सिद्ध कहाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥117॥

ॐ ह्रीं साधारणसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण विशेष प्रगटाए, असाधारण सिद्ध कहाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥118॥

ॐ ह्रीं असाधारणसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कल्याणक शुभ पाए, तीर्थंकर सिद्ध कहाए।
हम सिद्ध गुणों को गाते, पद सादर शीश झुकाते॥119॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छन्द)

जिन तीर्थंकर के अन्तराल, में सिद्ध हुए ज्ञानी त्रिकाल।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥120॥

ॐ ह्रीं तीर्थंकरअंतरसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्टावगाहन प्राप्त सिद्ध, जो पूज्य रहे जग में प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥121॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्टअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यम अवगाहन प्राप्त सिद्ध, निष्कर्म रहे जग में प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥122॥

ॐ ह्रीं मध्यमअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं जघन्यावगाहन प्राप्त सिद्ध, अविकारी अनुपम जग प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥123॥

ॐ ह्रीं जघन्यअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन त्रिजग लोकवर्ति प्रसिद्ध, सुर नर से पूजित कहे सिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥124॥

ॐ ह्रीं त्रिजगलोकसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षड् विध परिणत जिन काल सिद्ध, जो अष्ट गुणों से हैं प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥125॥

ॐ ह्रीं षट्विधिकालसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग सिद्ध जानो विशेष, जो सिद्ध हुए बनके जिनेश।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥126॥

ॐ ह्रीं उपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर निरुपसर्ग जानो महान, हैं सिद्ध प्रभु जग में प्रधान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥127॥

ॐ ह्रीं निरूपसर्गसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर्द्वीपों से हुए सिद्ध, आगम का वर्णन है प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥128॥

ॐ ह्रीं द्वीपसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं उदधि सिद्ध जग में प्रधान, उनकी महिमा भी है महान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥129॥

ॐ ह्रीं उदधिसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्थित आसन को सिद्ध धार, जग पूज्य हुए हैं निराकार।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥130॥

ॐ ह्रीं स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पर्यंकासन हुए सिद्ध, उनकी महिमा जग में प्रसिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥131॥

ॐ ह्रीं पर्यंकासनसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं सिद्ध पुरुष वेदी महान, जो सुख-शांति के हैं निधान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥132॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध क्षपक श्रेणी प्रधान, पाके पाए सिद्धी महान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥133॥

ॐ ह्रीं क्षायिकश्रेणीसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो एक समय में हुए सिद्ध, न कर्म उन्हें कर सके विद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥134॥
ॐ ह्रीं एकसमयसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्विसमय सिद्ध गाये जिनेश, जिनने धारा निर्ग्रन्थ भेष।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥135॥
ॐ ह्रीं द्विसमयसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
त्रिसमय सिद्ध जानो महान, जिनका हम करते यहाँ ध्यान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥136॥
ॐ ह्रीं त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो हैं त्रिकाल जग में प्रसिद्ध, वह तीन लोक में पूज्य सिद्ध।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥137॥
ॐ ह्रीं त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
त्रैलोक सिद्ध जग में महान, उनकी हम पूजा करें आन।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥138॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सिद्ध कहे मंगल प्रधान, जिनकी महिमा अतिशय महान।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥139॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सिद्ध रहे मंगल स्वरूप, पद वन्दन करते सतत् भूप।
उनको हम पूजें विनत भाल, कट जाए मेरा कर्म जाल॥140॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलरूपेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

सिद्ध सुमंगल ज्ञान के, धारी जिन भगवान।
जिन पद की पूजा करूँ, शुभ भावों से आन॥141॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलज्ञानेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल दर्शन सिद्ध जिन, पाए मंगल रूप।
जिन पूजा कर मैं यहाँ, पाऊँ जिन स्वरूप॥142॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलदर्शनेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सुमंगल वीर्य जिन, पाए अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरण, पाने भव से पार॥143॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलवीर्येभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल सम्यकता लहें, सिद्धश्री के नाथ।
जिन गुण पाने के लिए, चरण झुकाते माथ॥144॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसम्यक्त्वेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल अवगाहन प्रभु, पाए सिद्ध महान।
जिन गुण की पूजा करें, पाने केवल ज्ञान॥145॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअवगाहनेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल सूक्ष्मत्व के धनी, रहे सिद्ध भगवान।
जिनकी महिमा का यहाँ, करते हम गुणगान॥146॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलसूक्ष्मत्वेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल सिद्ध अगुरुलघु, गुण यह रहा विशेष।
यह गुण पाने में प्रभु, नाशूँ कर्म अशेष॥147॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअगुरुलघुभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल अव्यावाध गुण, सिद्धों का यह खास।
प्रगटाते हैं ध्यान कर, करने कर्म विनाश॥148॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअव्यावाधेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगलाष्टक गुण सिद्ध के, अतिशय कहे महान।
हम भी वह गुण पा सकें, अतः करें गुणगान॥149॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाष्टगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्ट रूप मंगल कहे, अविकारी जिन सिद्ध।
अविकारी सत् रूप हैं, जिनवर जगत् प्रसिद्ध॥150॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअष्टस्वरूपेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री सिद्ध मंगल महा, कीन्हें अष्ट प्रकाश।
भव्य जीव अतएव सब, बने चरण के दास॥151॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलअष्टप्रकाशकेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध मंगल प्रगट, कीन्हें आतम धर्म।
नस जावें मेरे सभी, घाति अघाति कर्म॥152॥
ॐ ह्रीं सिद्धमंगलधर्मेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम गुण प्राप्त हैं, सिद्ध अनन्तानन्त।
पूजा करते हम यहाँ, पाने भव का अन्त॥153॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम श्री सिद्ध हैं, तीन लोक के ईश।
आत्म सिद्धि के हेतु हम, चरण झुकाते शीश॥154॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सिद्धों को प्राप्त है, लोकोत्तम स्वरूप।
विशद ज्ञान पाके हुए, निरावरण निज रूप॥155॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रगटाए हैं सिद्ध जिन, निज लोकोत्तम ज्ञान।
गुण पाने जिन सिद्ध के, करते यहाँ विधान॥156॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम दर्शन प्रभु, प्रगटाए जिन सिद्ध।
पावन परमेष्ठी बने, अनुपम जगत प्रसिद्ध॥157॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध वीर्यधारी हुए, लोकोत्तम शुभकार।
पूजा करते हम यहाँ, जिनपद बारम्बार॥158॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छंद)

लोकोत्तम शरणाय अतिशय सिद्ध कहाए, जिन गुण पाने हेतु प्राणी तुमको ध्याये।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥159॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध शरण को पाए सिद्धों में मिल जाए, निज स्वरूप को पाए भव से मुक्ति पाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥160॥
ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सुदर्शन पाय तीनों लोक प्रकाशे, चरण-शरण में जाय सारे कर्म विनाशे।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥161॥
ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध ज्ञान शरणाय होती अनुपम भाई, भव्यों ने त्रियकाल पाके मुक्ति पाई।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥162॥
ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध वीर्य शरणाय पाते जो भी प्राणी, कर्म घातिया नाश बनते केवल ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥163॥
ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध शरण सम्यक्त्व पाके जीव जगाते, तन चेतन का भेद अन्तर में प्रगटाते।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥164॥
ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्धानन्त शरणाय पाने को हम आए, विशद भाव के साथ हमने जिनगुण गाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥165॥
ॐ ह्रीं सिद्धअनन्तशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध अनन्तानन्त जग में शरण कहाए, करके उनका ध्यान सिद्धों में मिल जाय।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥166॥
ॐ ह्रीं सिद्धअनन्तानन्तशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शरण सिद्ध त्रिकाल पाते हैं जो प्राणी, बनते हैं वह सिद्ध कहती ये जिनवाणी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥167॥
ॐ ह्रीं सिद्धत्रिकालशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री सिद्ध त्रिलोक अनुपम शरण कहाए, शरणागत पद आन केवल रवि प्रगटाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥168॥
ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध श्रेष्ठ शरणाय जिनने भी शुभ पाई, जिन गुण की मकरन्द उनने भी प्रगटाई।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥169॥
ॐ ह्रीं सिद्धअसंख्यातलोकशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध ध्रौव्य गुणवान अतिशय शरण कहाए, भव्य जीव कर ध्यान क्षायिक दर्शन पाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥170॥
ॐ ह्रीं सिद्धध्रौव्यगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री सिद्ध उत्पाद गुण की शरण निराली, भवि जीवों के नन्तगुण प्रगटाने वाली।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥171॥
ॐ ह्रीं सिद्धउत्पादगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध साम्य गुणवान शरण जिनने भी पाई, गुण प्रगटाके आप पाए हैं प्रभुताई।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥172॥
ॐ ह्रीं सिद्धसाम्यगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध स्वच्छ गुणवान अनुपम शरण कहाए, अन्दर कोई दोष जिनके न रह पाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥173॥
ॐ ह्रीं सिद्धस्वच्छगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वस्थित गुण शरणाय पाने वाले प्राणी, सिद्धों का कर ध्यान बनते सिद्ध नमामी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥174॥
ॐ ह्रीं सिद्धस्वस्थितगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुण समाधि शरणाय सिद्धों की जो पावें, ते पावें शिव वास भव में ना भटकावें।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥175॥
ॐ ह्रीं सिद्धसमाधिगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्धाव्यक्त गुणवान शरणा अनुपम गाई, होते हैं वह सिद्ध बनते जो अनुयायी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥176॥
ॐ ह्रीं सिद्धाव्यक्तगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध कहे गुणवान जिनकी शरण निराली, भवि जीवों को शीघ्र मुक्ति देने वाली।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥177॥
ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुण स्वरूप जिन सिद्ध अनुपम हैं अविकारी, जिन गुण पाते जीव बनते जो अविनाशी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥178॥
ॐ ह्रीं सिद्धगुणागुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमात्म स्वरूप जिनवर सिद्ध कहाए, चरण-शरण के भक्त क्षण में मुक्ति पाए।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥179॥
ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्धाखण्ड स्वरूप सिद्ध शिला के वासी, निज में रहते लीन केवलज्ञान प्रकाशी।
अष्ट द्रव्य के थाल पूजा को हम लाए, शिव पद दो हे नाथ ! चरणों शीश झुकाए॥180॥
ॐ ह्रीं सिद्धाखण्डस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रोटक छन्द)

जिन सिद्ध चिदानन्दी गाए, स्वरूप स्वयं ही प्रगटाए।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥181॥
ॐ ह्रीं सिद्धचिदानंदस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सिद्ध सहज आनन्द धरें, भवि जीवों में आनन्द करें।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥182॥
ॐ ह्रीं सिद्धसहजानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सिद्धाछेद स्वरूपी बने, निज ध्यान किए सब कर्म हने।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥183॥
ॐ ह्रीं सिद्धाछेद्यरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनवर सुभेद गुणी कहिए, पर पद तज के निज पद लहिए।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥184॥
ॐ ह्रीं सिद्धाभेदगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सिद्ध सु अनुपम गुण लहिए, भवि जीव शरण को ही गहिए।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥185॥
ॐ ह्रीं सिद्धानुपमगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सिद्ध सु अमृत तत्त्व कहे, भवि जीव शरण में बोध लहे।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥186॥
ॐ ह्रीं सिद्धामृतवत्त्वाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुश्रुत पाए जिन सिद्ध अहा, जिन मुखते श्रुत का स्रोत वहा।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥187॥
ॐ ह्रीं सिद्धश्रुतप्राप्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध सुकेवल प्राप्त किए, भवि जीवों को उपदेश दिए।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥188॥

ॐ ह्रीं सिद्धकेवलप्राप्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकार निराकार सिद्ध कहे, पर्याय द्रव्य स्वरूप रहे।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥189॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाकारनिराकारगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन निरालम्ब आलम्ब तजे, स्वाश्रित गुण से जिन सिद्ध सजे।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥190॥

ॐ ह्रीं सिद्धनिरालंबाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कलंक कहे जिन सिद्ध अहा, जिनके नहि कोई कलंक रहा।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥191॥

ॐ ह्रीं सिद्धनिष्कलंकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम सम्पन्न जिन्हें कहिए, जिन सिद्ध शरण नित ही लहिए।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥192॥

ॐ ह्रीं सिद्धतेजःसंपन्नाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध आत्म सम्पन्न कहे, निज आतम गुण में लीन रहे।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥193॥

ॐ ह्रीं सिद्धात्मसंपन्नाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध सुगर्भ सुवास किए, प्रभु सिद्ध शिला अवकाश लिए।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥194॥

ॐ ह्रीं सिद्धागर्भवासाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी संतर्पक सिद्ध कहे, बाह्यभ्यन्तरश्री से युक्त रहे।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥195॥

ॐ ह्रीं सिद्धलक्ष्मीसंतर्पकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धान्त अकारक सिद्ध कहे, निजआतम अन्तर लीन रहे।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥196॥

ॐ ह्रीं सिद्धान्तराकाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध सार रस आप महा, तुम गुण रस सम रस और कहाँ।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥197॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाररसाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सिद्ध शिखर मण्डन अनूप, जिन प्रकट किए निज का स्वरूप।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥198॥

ॐ ह्रीं सिद्धशिखरमण्डनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक अग्र कीन्हा निवास, जिन आतम का करके प्रकाश।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥199॥

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकाग्रनिवासिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वरूप गुप्त जिन सिद्ध अहा, स्वरूप गुप्त तव रूप कहा।
अतएव सभी शरणागत हैं, उनके गुण मन से गावत हैं॥200॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपगुप्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द मोतियादाम)

ऋषभ आदि चितधार जिनेश, बने सूरि निजरूप विशेष।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ॥201॥

ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वभाव निजातम अन्तर लीन, बने सूरि गुण ज्ञान प्रवीण।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ॥202॥

ॐ ह्रीं सूरिगुप्तेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजातम श्रीयुत ज्ञान जगाय, बने सूरि स्वरूप गुणाय।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ॥203॥

ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुप्तेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिहुँ जग श्री जिन के पद ध्याय, लहे सूरि सम्यक्त्व गुणाय।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ॥204॥

ॐ ह्रीं सूरिसम्यक्त्वगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन सूरि ज्ञान गुणाय, जिनाम्बुज में भवि शीश झुकाय।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ॥205॥

ॐ ह्रीं सूरिज्ञानगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर सूरि सुदर्शन पाय, करें गुणगान सुभव्य जिनाय।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥206॥
ॐ ह्रीं सूरिदर्शनगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तजे जिन सूरि जगत व्यापार, सुवीर्य गुणी जग अपरम्पार।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥207॥
ॐ ह्रीं सूरिवीर्यगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रहे सूरि गुण छत्तिस वान, नसे घाति सव कर्म प्रधान।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥208॥
ॐ ह्रीं सूरिषट्त्रिंशद्गुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पालते सूरि पञ्चाचार, मुनि होते हैं जो अनगार।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥209॥
ॐ ह्रीं सूरिपञ्चाचारगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री जिन सूरि सुद्रव्य गुणाय, निजातम के गुण में रम जाय।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥210॥
ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लहें सूरि निज की पर्याय, सुद्रव्य सुगुण निज के प्रगटाय।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥211॥
ॐ ह्रीं सूरिपर्यायगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रहे जिन सूरि सुमंगल रूप, स्वयं प्रगटाए शुद्ध स्वरूप।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥212॥
ॐ ह्रीं सूरिमंगलेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लहे जिन सूरि सुमंगल ज्ञान, बने जग में जिनराज प्रधान।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥213॥
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानमंगलेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बने लोकोत्तम गुण के कोष, रहे सूरी निरुपम निर्दोष।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥214॥
ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम सूरी सुज्ञान प्रधान, सुज्ञान रहा निज जीव प्रमाण।
भजे हम आनन्द से मुनिनाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥215॥
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानलोकोत्तमेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने जिन सूरि सुदर्शवान, किए अन्तर में भेद विज्ञान।
भजे हम आनन्द से जिननाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥216॥
ॐ ह्रीं सूरिदर्शनलोकोत्तमेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जगा अन्तर में वीर्य महान, सुशुद्ध सुवीर्य सुचेतन वान।
भजे हम आनन्द से जिननाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥217॥
ॐ ह्रीं सूरिवीर्यलोकोत्तमेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रगट कर सूरि सु केवल धर्म, नशाए निज बलतें दुष्कर्म।
भजे हम आनन्द से जिननाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥218॥
ॐ ह्रीं सूरिकेवलधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तपें द्वादश तप सूरि महान, करें निज गुण से निज का ध्यान।
भजे हम आनन्द से जिननाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥219॥
ॐ ह्रीं सूरितप्तेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री जिन सूरि परम तप धार, रहे बनके जग में अनगार।
भजे हम आनन्द से जिननाथ, धरें चरणाम्बुज में निज माथ ॥220॥
ॐ ह्रीं सूरिपरमतपेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

घोर तपो गुण सूरी पावें, कर्म निर्जरा कर शिव जावें।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥221॥
ॐ ह्रीं सूरितपोघोरगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
घोर पराक्रम गुण के धारी, सूरी होते मंगलकारी।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥222॥
ॐ ह्रीं सूरिघोरगुणपराक्रमेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाए, सर्व ऋद्धियों में शुभ गाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥223॥
ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिऋषिभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि योग धारने वाले, अनुपम योगी रहे निराले।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥224॥
ॐ ह्रीं सूरिसुयोगेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि ध्यान करें शुभकारी, करे साधना विस्मयकारी।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥225॥
ॐ ह्रीं सूरिध्यानेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पञ्चाचार धारने वाले, सूरी धाता रहे निराले।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥226॥
ॐ ह्रीं सूरिधातृभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मोक्ष मार्ग के पात्र कहाए, सूरी अनुपम यह गुण पाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥227॥
ॐ ह्रीं सूरिपात्रेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि गुण है शरण निराली, निज के गुण प्रगटाने वाली।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥228॥
ॐ ह्रीं सूरिगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि धर्म शरण गुणधारी, मंगलमय जानो मनहारी।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥229॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्मगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि शरण हरण दुःखहारी, शांति प्रदायक अतिशयकारी।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥230॥
ॐ ह्रीं सूरिशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शरण स्वरूप सूरि कहलाए, कर्म कालिमा पूर्ण नशाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥231॥
ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्म स्वरूप शरण मनहारी, सूरी रहे धर्म के धारी।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥232॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्मस्वरूपशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि ज्ञान स्वरूप कहाए, विशद ज्ञान निज का प्रगटाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥233॥
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि सौख्य स्वरूपी गाए, शिव सुख पाने संयम पाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥234॥
ॐ ह्रीं सूरिसुखस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निरावर्ण दर्शन प्रगटाए, सूरि निज स्वरूपी गाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥235॥
ॐ ह्रीं सूरिदर्शनस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरी वीर्य स्वरूपी गाए, मोहादि रिपु नाश कराए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥236॥
ॐ ह्रीं सूरिवीर्यस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि मंगल शरण कहाए, मंगलमय निज गुण प्रगटाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥237॥
ॐ ह्रीं सूरिमंगलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि धर्म शरण मनहारी, भवि जीवों को मंगलकारी।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥238॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि सुतप शरण कहलाए, कर्म निर्जरा अतिशय पाए।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥239॥
ॐ ह्रीं सूरितपशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि ध्यान शरण के धारी, वीतराग धारी अनगारी।
सूरि सिद्ध सुपद को पाए, जिनके पद हम शीश झुकाए॥240॥
ॐ ह्रीं सूरिध्यानशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

जिन सूरी अतिशयकारी, हैं सिद्ध शरण मनहारी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी॥241॥
ॐ ह्रीं सूरिसिद्धशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सूरि मंगलकारी, त्रैलोक्य शरण शुभकारी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी॥242॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी त्रिकाल बतलाए, जो श्रेष्ठ शरण कहलाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥243॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिकालशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सूरी हैं शुभकारी, तीनों जग मंगलकारी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥244॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मंगल शरण कहाए, त्रिलोक सूरि जिन गाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥245॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंगलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलोत्तम शरण निराले, सूरि त्रिजग के आले।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥246॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मङ्गलोत्तमशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि त्रिजगत सुखारी, मंगल शरणाय हमारी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥247॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मङ्गलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि त्रिजग में गाए, मण्डन शरणा शुभ गाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥248॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमंडनशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि ऋद्धि के धारी, मण्डन शरणा शुभकारी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥249॥
ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिमण्डनशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि शुभ मंत्र स्वरूपी, जग में अनुपम अनरूपी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥250॥
ॐ ह्रीं सूरिमंत्रस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मंत्र गुणों के धारी, सूरि हैं अतिशय कारी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥251॥
ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी धर्माय कहाए, जिन पद शरणागत आए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥252॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी चैतन्य स्वरूपी, गुण चेतन के अनुरूपी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥253॥
ॐ ह्रीं सूरिचैतन्यस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चिदानन्द कहलाए, सूरी बन मुक्ति पाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥254॥
ॐ ह्रीं सूरिचिदानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञानानन्द कहाए, सूरी पद अनुपम पाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥255॥
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी सम भाव बनाए, फिर मुक्ति वधू को पाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥256॥
ॐ ह्रीं सूरिसमभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन गुणानन्द तप धारी, सूरि जग मंगलकारी।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥257॥
ॐ ह्रीं सूरितपोगुणानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वरूप तपो गुण पाए, सूरि शिव पद प्रगटाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥258॥
ॐ ह्रीं सूरितपोगुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि हंसाय कहाए, जग के सुख मन न भाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥259॥
ॐ ह्रीं सूरिहंसाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन हंस गुणाए कहाए, सूरी जिन पदवी पाए।
जिन सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी ॥260॥
ॐ ह्रीं सूरिहंसगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोदक छंद)

सूरि मंत्र गुणानन्द पाए, जाप करें निज कर्म नशाएँ।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥261॥

ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धानन्द सूरि गुणधारी, परमोत्तम जग के अनगारी।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥262॥

ॐ ह्रीं सूरिसिद्धानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि अमृतचन्द कहाए, मिथ्यातम हर अमर कराए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥263॥

ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि सुधा चन्द्र गुण पाए, शांत स्वरूप स्वयं प्रगटाय।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥264॥

ॐ ह्रीं सूरिसुधाचंद्रस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि सुधागुण निज प्रगटाए, अजर अमर पदवी जिन पाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥265॥

ॐ ह्रीं सूरिसुधागुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि सुधाध्वनि गुँजाए, सप्त स्वरों में आप समाय।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥266॥

ॐ ह्रीं सूरिसुधाध्वनये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत ध्वनि स्वरूप कहाए, सूरि निज में निज गुण पाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥267॥

ॐ ह्रीं सूरिअमृतध्वनिसुरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि द्रव्य कहे मनहारी, शाश्वत सिद्ध सुमंगल कारी।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥268॥

ॐ ह्रीं सूरिद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण द्रव्याय सूरि कहलाए, निज पर्याय भेद बिन पाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥269॥

ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर्याय सूरि प्रगटाए, द्रव्य गुणों युत शाश्वत गाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥270॥

ॐ ह्रीं सूरिपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि द्रव्य स्वरूप बखाने, दर्श किए भवि मन हर्षाने।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥271॥

ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि गुण स्वरूप निराले, स्व-पर के दुःख हरने वाले।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥272॥

ॐ ह्रीं सूरिगुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर्याय स्वरूप कहाए, सूरि यह गुण निज में पाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥273॥

ॐ ह्रीं सूरिपर्यायस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि गुणोत्पादक जिन स्वामी, गुण ग्राहक जिन अन्तर्यामी।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥274॥

ॐ ह्रीं सूरिगुणोत्पादाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणोत्पाद ध्रुव सूरि पाए, तज विभाव स्वभाव जगाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥275॥

ॐ ह्रीं सूरिध्रुवगुणोत्पादाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणोत्पाद व्यय सूरि पाए, आतम का स्वभाव जगाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥276॥

ॐ ह्रीं सूरिव्ययगुणोत्पादाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी जीव तत्त्व प्रगटाए, सब तत्त्वों से न्यारे गाए।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥277॥

ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि जीव तत्त्व गुणधारी, विशद ज्ञानधारी अनगारी।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए॥278॥

ॐ ह्रीं सूरिजीवतत्त्वगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि निज स्वभाव सु धारे, स्वयं तरे भवि जन भी तारे।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए ॥279॥
ॐ ह्रीं सूरिनिजस्वभावधारकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आश्रव नाश सूरि जिन कीन्हें, कर्म निरोध पूर्ण कर दीन्हें।
सूरि भये निज ज्ञान जगाए, शिव नगरी के स्वामी गाए ॥280॥
ॐ ह्रीं सूरिआस्रवविनाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

बन्ध तत्त्व के नाशी, जग में सूरि गाए, बाह्याभ्यंतर कर्माश्रव, का रोध कराए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥281॥
ॐ ह्रीं सूरिबंधतत्त्वविनाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि संवर तत्त्व सहित, जग में कहलाए, करके आश्रव रोध, स्वयं में थिरता पाए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥282॥
ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरी संवर तत्त्व स्वरूपी, अनुपम गाए, निज स्वरूप में लीन, कर्म का रोध कराए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥283॥
ॐ ह्रीं सूरिसंवरतत्त्वस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरी संवर गुण के धारी, हैं अविकारी, शिवपथ के राही हैं, अति जो विस्मयकारी।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥284॥
ॐ ह्रीं सूरिसंवरगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि संवर धर्म युक्त, जग मंगलकारी, जिनकी महिमा कही, जगत में अतिशयकारी।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥285॥
ॐ ह्रीं सूरिसंवरधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि निर्जरा तत्त्व, धारने वाले गाये, सम्यक् तप कर अपने, सारे कर्म नशाए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥286॥
ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्त्वाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि निर्जरा तत्त्व, स्वरूपी रहे निराले, अविकारी हो निज में, जो रत रहने वाले।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥287॥
ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरातत्त्वस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी निर्जरा गुण स्वरूपी, जग में गाये, द्वादश तप कर जिनने, अपने कर्म खपाये।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥288॥
ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरागुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरी निर्जरा धर्म स्वरूपी, मंगलकारी, उभय परिग्रह रहित कहे, मुनिवर अनगारी।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥289॥
ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराधर्मस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि निर्जरा प्राप्त आप, अनुबन्ध कहाए, समय-समय गुण श्रेणि, निर्जरा आप कराए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥290॥
ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरानुबंधाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि निर्जरा स्वरूपी, जिन अतिशय कारी, सर्व संग से रहित, हुए तव मंगलकारी।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥291॥
ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरास्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि निर्जरा कर प्रतीत, निज गुण प्रगटाए, सर्व कर्म का नाश किए, जिन सिद्ध कहाए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥292॥
ॐ ह्रीं सूरिनिर्जराप्रतीताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि मोक्ष को पाने वाले, हैं शुभकारी, सर्व कर्म से रहित हुए, जिनवर अविकारी।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥293॥
ॐ ह्रीं सूरिमोक्षाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि बन्ध का छेदन करके, मोक्ष सिधाए, द्रव्य भाव से मुक्ति, पाके सिद्ध कहाए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥294॥
ॐ ह्रीं सूरिबन्धमोक्षाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि मोक्ष स्वरूपी, अनुपम गुण के धारी, सर्व कर्म से रहित हुए, जिनवर अविकारी।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥295॥
ॐ ह्रीं सूरिमोक्षस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि मोक्ष गुणों के धारी, जग में गाए, तज विभाव स्वभाव, स्वयं अपने प्रगटाए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥296॥
ॐ ह्रीं सूरिमोक्षगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि मोक्ष अनुबन्ध, प्राप्त शुभ करने वाले, सुख अनन्त के धारी, भव दुःख हरने वाले।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥297॥
ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुबंधाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूरि मोक्ष में निज तन, जैसी आकृति पाए, ज्ञानानन्द प्रकाश अचल, निज का प्रगटाए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥298॥
ॐ ह्रीं सूरिमोक्षानुप्रकाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज स्वरूप में लीन, मुक्त सूरि कहलाए, सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित, कर यह पद पाए।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥299॥
ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुप्तये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज परमात्म स्वरूप, सूरि प्रगटाने वाले, निजानन्द स्वाधीन निराकुल संत निराले।
मुक्ति के हैं मूल, कर्म के नाशन हारी, सूरी करुणाधार जगत, जन के उपकारी॥300॥
ॐ ह्रीं सूरिपरमात्मस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रेखता छंद)

संपूरण ज्ञान तुम पाया, निजातम बोध उपजाया।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥301॥
ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप हो मोक्ष पथगामी, बने सिद्धों के अनुगामी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥302॥
ॐ ह्रीं पाठकमोक्षमण्डनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुणी हो ज्ञान के धारी, भव्य जीवों के मनहारी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥303॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप हो ज्ञान स्वरूपी, बनाते शुद्र चिद्रूपी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥304॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणस्वरूपेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अखण्डित द्रव्य के धारी, अचल हो आप अविकारी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥305॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध गुण शुद्ध पर्यायी, बने सिद्धों के अनुयायी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥306॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणपर्ययेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप गुण द्रव्य के धारी, निरन्जन श्रेष्ठ शुभकारी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥307॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य स्वरूप तुम पाए, आप सत् रूप कहलाए।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥308॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य पर्याय के धारी, दिखाते मार्ग शिवकारी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥309॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पर्याय स्वरूप कहलाए, पूर्ण श्रुत आप जो पाए।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥310॥
ॐ ह्रीं पाठकपर्यायस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जगत में आप हो मंगल, ज्ञान देते हैं जो पल-पल।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥311॥
ॐ ह्रीं पाठकमंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मंगल गुण आप जो पाए, प्रत्यक्ष ये लोक दिखलाए।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥312॥
ॐ ह्रीं पाठकमंगलगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वरूपी आप गुण मंगल, हरण हारे करम दल-दल
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥313॥
ॐ ह्रीं पाठकमंगलगुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य मंगल स्वरूपी जिन, रहे जो सब विभावों विन।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥314॥
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल पर्याय के धारी, नित्य कहलाए अविकारी।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥315॥

ॐ ह्रीं पाठकमंगलपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य पर्याय मंगल हे !, हरण हारे अमंगल हे !
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥316॥

ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यमंगलपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय द्रव्य गुण पाये, और पर्याय कहलाए।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥317॥

ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यगुणपर्यायमंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल स्वरूप जो पाया, अतः ये जग शरण आया।
उपाध्याय आप हो स्वामी, देशना आपकी नामी॥318॥

ॐ ह्रीं पाठकस्वरूपमंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

पाठक मंगलोत्तम गुण, शुभ अपने प्रगटाए, निर्विकल्प आनन्द श्रेष्ठ, अनुभूति पाए।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥319॥

ॐ ह्रीं पाठकमंगलोत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक गुण लोकोत्तम, अपने शुभ प्रगटाए, जग जीवों को हितकारी, जो मार्ग दिखाए।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥320॥

ॐ ह्रीं पाठकगुणलोकोत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक द्रव्य लोकोत्तम होते, जग अविकारी, श्रुतज्ञान पाते आकर के, अतिशयकारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥321॥

ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यलोकोत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक सम्यक् ज्ञान स्वयं, अपना प्रगटाते, देते सम्यक् ज्ञान आप, ज्ञानी कहलाते।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥322॥

ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक ज्ञान लोकोत्तम पाए, अनुपम अविकारी, होकर के निर्ग्रन्थ, स्वयं बनते अनगारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥323॥

ॐ ह्रीं पाठकज्ञानलोकोत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक दर्शन सम्यक, पाए मंगलकारी, भेद रहित युगपद, दर्शाए जग मनहारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥324॥

ॐ ह्रीं पाठकदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन लोकोत्तम पाठक, साधु प्रगटाए, निरावाध निर्द्वन्द ज्ञान, के स्वामी गाए।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥325॥

ॐ ह्रीं पाठकदर्शनलोकोत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए दर्शन स्वरूपी, पाठक अनगारी, द्रव्य तत्त्व उपदेश करें, पावन मनहारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥326॥

ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन मुनि पाठक होते, सम्यक्त्व स्वरूपी, देते हैं सद्ज्ञान श्रेष्ठ, आगम अनुरूपी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥327॥

ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण सम्यक्त्व स्वरूपी, पाठक अनुपम गाए, मुक्ति पथ के नेता, आप स्वयं कहलाए।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥328॥

ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वगुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक वीर्य वान कहलाए, आतम ज्ञानी, वाणी सर्व हिताए कही, जग में कल्याणी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥329॥

ॐ ह्रीं पाठकवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक वीर्य गुणों के, पाने वाले जानो, रत्नत्रय को पावें, स्व-शक्ति पहिचानो।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥330॥

ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक वीर्य पर्याय प्राप्त कर, शिव सुख पाते, करके सत् पुरुषार्थ मार्ग, पर बढ़ते जाते।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥331॥

ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक वीर्य द्रव्य धारी, अनुपम अविकारी, द्रव्य भाव गुण पाने वाले, मंगल कारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले॥332॥

ॐ ह्रीं पाठकवीर्यद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण पर्याय वीर्य धारी, पाठक कहलाए, ज्ञान सुधामृत के दानी, इस जग में गाए।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥333॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यगुणपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ दर्शन पर्याय प्राप्त, पाठक अनगारी, सम्यक् दर्शन धारी की, महिमा अतिभारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥334॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ दर्शन पर्याय स्वरूपी, पाठक गाए, जिन दर्शन कर निज दर्शन, अपना प्रगटाए।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥335॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनपर्यायस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक ज्ञान द्रव्य को, पाकर निज को ध्याते, ज्ञान ध्यान तप द्वारा, निज के गुण प्रगटाते॥
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥336॥
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक शरण लोक में, अनुपम जानो भाई, पूजा करके भक्त, प्राप्त करते प्रभुताई॥
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥337॥
ॐ ह्रीं पाठकशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शरणभूत गुण पाठक पाते, शुभ अविकारी, परमेष्ठी कहलाते जग में, मंगलकारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥338॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शरण ज्ञान गुण पाने वाले, पाठक जानो, ज्ञान ध्यान तप के धारी, शुभकारी मानो।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥339॥
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक दर्शन शरण भूत, मुनिवर शुभकारी, सम्यक् श्रद्धावान कहाए, मंगलकारी।
शिष्यों का अज्ञान, महातम हरने वाले, उपाध्याय परमेष्ठी, ज्ञानी रहे निराले ॥340॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(माला छंद)

ज्ञानी निज का भेद किए हैं, तन का चेतन से।
पाठक दर्श स्वरूपी गाए, पूजें हम मन से॥

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से ॥341॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज सम्यक्त्व शरण को पाए, हैं जो बचपन से।
प्रभु आतम का बोध जगाके, छूटे बन्धन से॥
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से ॥342॥
ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उपाध्याय सम्यक्त्व स्वरूपी, होते तन मन से।
भेद ज्ञान प्रगटाने वाले, छूटें बन्धन से॥
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से ॥343॥
ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक वीर्य शरण के धारी, ध्यान करें तन से।
भेद ज्ञान कर राग छोड़ते, अपना कण-कण से॥
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से ॥344॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक वीर्य शरण स्वरूपी, तजें राग तन से।
कर्म शृंखला काट स्वयं ही, छूटे भव वन से॥
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से ॥345॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यस्वरूपशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक वीर्य शरण के धारी, निज परमातम से।
नाता जोड़ रहे हैं अपना, मुक्ति हेतु तन से॥
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से ॥346॥
ॐ ह्रीं पाठकवीर्यपरमात्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग की शरण प्राप्त हो, हमको गुरुजन से।
भेद ज्ञान प्रगटाएँ हम भी, अपने इस तन से।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से।।347।।

ॐ ह्रीं पाठकद्वादशांगशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक दश पूर्वांग प्राप्त कर, ज्ञान धरें मन से।
अतः पूज्य होते हैं मुनिवर, सारे भविजन से।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, हों विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से।।348।।

ॐ ह्रीं पाठकदशपूर्वांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूर्वांगों के धारी, मंगलमय तन से।
पूजा करें शरण में आके, भक्त सभी मन से।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से।।349।।

ॐ ह्रीं पाठकचतुर्दशपूर्वांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचारांग श्रेष्ठ युत धारी, सजते संयम से।
कर्म श्रृंखला जो अनादि की, छूटे बन्धन से।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, हो विरक्त धन से।
शरण लिये दर्शन स्वरूप की, पुजते जन-जन से।।350।।

ॐ ह्रीं पाठकआचारांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

शंकादि दोषों को टार, पाठक पाए ज्ञानाचार।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।351।।

ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाचाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाचार में रहते लीन, पाठक साधु ज्ञान प्रवीण।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।352।।

ॐ ह्रीं पाठकतपाचाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक रत्नत्रय को धार, करते कर्मों का संहार।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।353।।

ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय जो पाए शुद्ध, पाठक निज में हुए विशुद्ध।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।354।।

ॐ ह्रीं पाठकरत्नत्रयसहायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंसार ध्रुव धारी आप, पाठक हरते जग संताप।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।355।।

ॐ ह्रीं पाठकध्रुवासंसाराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक हैं एकत्व स्वरूप, चलते आगम के अनुरूप।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।356।।

ॐ ह्रीं पाठकएकत्वस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक सम्यक् चारित्र धार, करते कर्मों का संहार।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।357।।

ॐ ह्रीं पाठकएकत्वगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण एकत्व धारकर आप, पाठक हरें सभी संताप।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।358।।

ॐ ह्रीं पाठकएकत्वपरमात्मने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मेकत्व आपका मूल, दूर करें तत्त्वों की भूल।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।359।।

ॐ ह्रीं पाठकएकत्वधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक चेतनता को पाय, धर्मेकत्व रहे प्रगटाय।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।360।।

ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचेतनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय एकत्व स्वरूप, करते ध्यान चेतना रूप।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार।।361।।

ॐ ह्रीं पाठकएकत्वचेतनस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक करें द्रव्य का ध्यान, हो एकत्व एकान्त स्थान।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥362॥
ॐ ह्रीं पाठकएकत्वद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक चिदानन्द स्वरूप, ध्याते निज चेतन चिद्रूप।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥363॥
ॐ ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक सिद्ध रहे अविकार, साधक जग में मंगलकार।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥364॥
ॐ ह्रीं पाठकसिद्धसाधकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋद्धि पूर्ण रहे अविकार, पाठक श्रेष्ठ गुणों को धार।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥365॥
ॐ ह्रीं पाठकऋद्धिपूर्णाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक का निर्ग्रन्थ स्वरूप, पद में झुकते सुर नर भूप।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥366॥
ॐ ह्रीं पाठकनिर्ग्रन्थाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाए पाठक अर्थ विधान, प्रकटावें चेतन का ज्ञान।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥367॥
ॐ ह्रीं पाठकार्थविधानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अननुबन्ध पाठक संसार, परिग्रह त्याग बनें अनगार।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥368॥
ॐ ह्रीं पाठकसंसारानुबन्धाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक पाए सम्यक् ज्ञान, करते हैं स्वपर कल्याण।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥369॥
ॐ ह्रीं पाठककल्याणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक गुण पाए कल्याण, करें प्राप्त आगम का ज्ञान।
करते आतम का उद्धार, तन मन से होके अविकार॥370॥
ॐ ह्रीं पाठककल्याणगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द त्रोटक)

पाठक कल्याण स्वरूप कहे, निज के गुण में नित लीन रहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥371॥
ॐ ह्रीं पाठककल्याणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक कल्याण सुद्रव्य गहे, निज ज्ञान स्वभावी श्रेष्ठ कहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥372॥
ॐ ह्रीं पाठककल्याणद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक शुभ तत्त्व गुणाय रहे, जिन द्वादशांग का ज्ञान लहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥373॥
ॐ ह्रीं पाठकतत्त्वगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक चिद्रूप स्वभाव धरें, निज आतम का कल्याण करें।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥374॥
ॐ ह्रीं पाठकचिद्रूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक चेतन चिद्रूप कहे, निज चेतन गुण में लीन रहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥375॥
ॐ ह्रीं पाठकचेतनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक निज चेतन गुणधारी, अन्यत्व रूप सद्गुण धारी।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥376॥
ॐ ह्रीं पाठकचेतनागुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक शुभ ज्योति प्रकाश धरें, नित सम्यक् रूप प्रकाश करें।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥377॥
ॐ ह्रीं पाठकज्योतिप्रकाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक दर्शन चैतन्य कहे, अवलोकी तीनों लोक रहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥378॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनचैतनायै नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक शुभ चेतन ज्ञान लहे, पर वस्तु से अति भिन्न रहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये॥379॥
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानचेतनायै नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चिदानन्द मय जीव कहे, गुण लक्षण पर्यायवान रहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में पाठक सब कर्म क्षये।।380।।

ॐ ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल वीर्य सुचेतन वान अहा, पाठक का निज स्वरूप कहा।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।381।।

ॐ ह्रीं पाठकवीर्यचेतनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक सब जीवन हेतु अरे, शरणा कहलाए पूर्ण खरे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।382।।

ॐ ह्रीं पाठकसकलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य शरण पद आन गहें, पाठक निज का स्वभाव लहें।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।383।।

ॐ ह्रीं पाठकत्रैलोक्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक त्रैकाल शरण गाये, जग जीवन हेतु कहलाए।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।384।।

ॐ ह्रीं पाठकत्रिकालशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक त्रिमंगल शरण कहे, तीनों कालों में श्रेष्ठ रहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।385।।

ॐ ह्रीं पाठकत्रिमंगलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक शुभ लोक शरण जानो, हितकारी जन-जन के मानो।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।386।।

ॐ ह्रीं पाठकलोकशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक आश्रव अवेदाय कहे, सर्वाश्रव से जो हीन रहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।387।।

ॐ ह्रीं पाठकाश्रवावेदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक आश्रव विनशाय रहे, आश्रव से आप विहीन कहे।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।388।।

ॐ ह्रीं पाठकास्रवविनाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक अनुपम उपदेशक है, आश्रव उपदेश सुछेदक है।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।389।।

ॐ ह्रीं पाठकास्रवोपदेशछेदकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक निज बन्ध का अन्त करें, निज चेतन के सब दोष हरें।
निजरूप सुधारस लीन भये, क्षण में अपने सब कर्म क्षये।।390।।

ॐ ह्रीं पाठकबंधमुक्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

पाठक बन्ध विमुक्त, कहलाये इस लोक में।
विशद ज्ञान संयुक्त, ज्ञान दान देते अहा।।391।।

ॐ ह्रीं पाठकबन्धान्तकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक संवर वान, कर्मों का संवर करें।
पाके सम्यक ज्ञान, शिव पद पाने बढ़ चले।।392।।

ॐ ह्रीं पाठकसंवराय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे संवर स्वरूप, पाठक अविकारी परम।
आन झुकें शत् भूप, निर्ग्रन्थों के पद युगल।।393।।

ॐ ह्रीं पाठकसंवरस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर कारण आप, रत्नत्रय पालें स्वयं।
पाठक करते ध्यान, निज आतम का भाव से।।394।।

ॐ ह्रीं पाठकसंवरकारणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं निर्जर स्वरूप, द्वादश तप तपते अहा।
चेतन मय चिद्रूप, चित् का नित चिन्तन करें।।395।।

ॐ ह्रीं पाठकनिर्जरास्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छेदक हे कन्दर्प ! पाठक अविनाशी विशद।
हरने वाले दर्प, मिथ्यावादी जीव का।।396।।

ॐ ह्रीं पाठककन्दर्पछेदकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक कर्म विशेष, विस्फोटक कहलाए हैं।
रहे कोई न शेष, अविनाशी जिनवर बने।।397।।

ॐ ह्रीं पाठककर्मविस्फोटकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक मोक्ष महान, पाते कर्म विनाश कर।
पाते केवल ज्ञान, दिव्य ध्वनि देते विशद॥398॥
ॐ ह्रीं पाठकमोक्षाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाठक मोक्ष स्वरूप, कहलाय इस लोक में।
ज्ञानी बने अनूप, निज आतम का ध्यान कर॥399॥
ॐ ह्रीं पाठकमोक्षस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आतम रत हो ध्यान, करते निज का भाव से।
पूर्ण रूप श्रुत ज्ञान, प्रगटाते हैं जो अहा॥400॥
ॐ ह्रीं पाठकात्मरतये नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द) (बड़ी चौपाई) (लोल तरंग छन्द)

सम्यक् रत्नत्रय जो धारे, सर्व साधु निर्ग्रन्थ हमारे।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥401॥
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मूल तथा उत्तर गुण पालें, सर्व साधु गुण स्वयं सम्हाले।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥402॥
ॐ ह्रीं सर्वसाधुगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुण स्वरूप साधु सब गाये, शिव पथ के राही कहलाए।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥403॥
ॐ ह्रीं सर्वसाधुगुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य स्वरूप साधु सब ध्याते, सम्यक् श्रद्धा स्वयं जगाते।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥404॥
ॐ ह्रीं सर्वसाधुद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्वसाधु हैं गुण के धारी, द्रव्य स्वरूप रहे अविकारी।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥405॥
ॐ ह्रीं साधुगुणद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु ज्ञान जगाने वाले, भेद ज्ञान प्रगटाने वाले।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥406॥
ॐ ह्रीं साधुज्ञानगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु दर्शन गुण प्रगटाते, भेदाभेद रूप झलकाते।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥407॥
ॐ ह्रीं साधुदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु द्रव्य भाव के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥408॥
ॐ ह्रीं साधुद्रव्यभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु द्रव्य स्वरूपी गाए, भेद ज्ञान कर निज को ध्याये।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥409॥
ॐ ह्रीं साधुद्रव्यस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु वीर्यवान कहलाते, उत्तम वीर्य स्वयं प्रगटाते।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥410॥
ॐ ह्रीं साधुवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ पर्याय द्रव्य के धारी, साधु हैं जग में शुभकारी।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥411॥
ॐ ह्रीं साधुद्रव्यपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु द्रव्य सुगुण पर्यायी, सिद्धों के हैं जो अनुयायी।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥412॥
ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणपर्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्व साधु मंगल कहलाते, स्वपर के सब पाप नशाते।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥413॥
ॐ ह्रीं साधुमंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सर्व साधु मंगल स्वरूपी, चिदानन्द चेतन चिद्रूपी।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥414॥
ॐ ह्रीं साधुमंगलस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु मंगल शरण कहाए, जग जीवों में अनुपम गाए।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥415॥
ॐ ह्रीं साधुमंगलशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु मंगल दर्शन पाते, निराकार वस्तु दर्शाते।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥416॥
ॐ ह्रीं साधुमंगलदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु मंगल ज्ञान जगाए, भेद जानकर निज गुण पाए।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥417॥
ॐ ह्रीं साधुमंगलज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु मंगल ज्ञान जगाए, भेद जानकर निज गुण पाए।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥418॥
ॐ ह्रीं साधुज्ञानगुणमंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु वीर्य मंगल कहलाए, संयम तप कर कर्म नशाए।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥419॥
ॐ ह्रीं साधुवीर्यमंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु वीर्य मंगल स्वरूपी, ध्यान करें निज गुण अनुरूपी।
विषयाशा के हैं जो त्यागी, मोक्षमार्ग के शुभ अनुरागी॥420॥
ॐ ह्रीं साधुवीर्यमंगलस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ (शम्भू छन्द)

साधु वीर्य परम मंगलमय, करते निज आतम का ध्यान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥421॥
ॐ ह्रीं साधुवीर्यपरममंगलाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु वीर्य द्रव्य के धारी, बल प्रगटाते अपरम्पार।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयकार॥422॥
ॐ ह्रीं साधुवीर्यद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु लोकोत्तम अविकारी, सर्व जहाँ में रहे महान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥423॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु लोकोत्तम गुण पाते, सब जीवों में सर्व प्रधान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥424॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लोकोत्तम गुण पाके, निज स्वरूप का करते ध्यान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥425॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु लोकोत्तम कहलाए, द्रव्य गुणों के शुभ भण्डार।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥426॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य स्वरूपी लोकोत्तम शुभ, साधु कहलाये गुणवान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥427॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमद्रव्यस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
साधु लोकोत्तम शुभ ज्ञानी, अतिशय कारी आभावान
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥428॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम शुभ ज्ञान स्वरूपी, साधु होते महिमावान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥429॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम दर्शन के धारी, साधु जग में रहे प्रधान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥430॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम सुज्ञान सुदर्शन, साधु होते गुण की खान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥431॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमज्ञानदर्शनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
लोकोत्तम शुभ धर्म प्राप्त कर, साधु करते निज उत्थान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥432॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्म स्वरूप साधु लोकोत्तम, चेतन का करते रसपान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥433॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमधर्मस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लोकोत्तम कहलाए, वीर्य वान इस जग की शान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥434॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य स्वरूपी लोकोत्तम शुभ, संयम का करते सम्मान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥435॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमवीर्यस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम अतिशय के धारी, साधु करें कर्म की हान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥436॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमातिशयाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म ज्ञानमय लोकोत्तम हैं, साधु की अतिशय पहिचान।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशयवान॥437॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म ज्ञान स्वरूपी अनुपम, लोकोत्तम साधु शुभकार।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशय मनहार॥438॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लोकोत्तम जिन गाए, शिव पथ के राही अनगार।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशय मनहार॥439॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमजिनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण सम्पन्न साधु लोकोत्तम, ज्ञानी होते हैं अविकार।
रत्नत्रय को पाने वाले, तप करते हैं अतिशय मनहार॥440॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणसम्पन्नाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष्णुपद छन्द

साधु पुरुष लोकोत्तम गाए, जग में शुभकारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥441॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमपुरुषाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम है शरण साधु की, जग मंगलकारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥442॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम गुण शरण साधु हैं, अति विस्मयकारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥443॥
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमगुणशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य शरण गुण साधु पाए, भविजन हितकारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥444॥
ॐ ह्रीं साधुगुणद्रव्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु दर्शन शरण पाए हैं, बन के अनगारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥445॥
ॐ ह्रीं साधुदर्शनशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु ज्ञान शरण पाए हैं, शुभ अतिशयकारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥446॥
ॐ ह्रीं साधुज्ञानशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु आत्म शरण रत रहते, बने ब्रह्मचारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥447॥
ॐ ह्रीं साधुआत्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श स्वरूपी साधु जानों, शिव के अधिकारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥448॥
ॐ ह्रीं साधुदर्शनस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं परमात्म शरण साधु जन, सद्गुण के धारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥449॥
ॐ ह्रीं साधुपरमात्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहें निजात्म शरण साधु जन, अतिशय मनहारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥450॥
ॐ ह्रीं साधुनिजात्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु वीर्य शरण को धारे, बन के अवतारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥451॥
ॐ ह्रीं साधुवीर्यशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वीर्यात्म शरण पाते हैं, साधु गुणधारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥452॥
ॐ ह्रीं साधुवीर्यात्मशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी अलंकृत साधु जानो, वीतराग धारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥453॥
ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीअलंकृताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं साधु लक्ष्मी प्रणीत शुभ, जग जन हितकारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥454॥
ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीप्रणीताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लक्ष्मी रूप कहे हैं, आगम अनुसारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥455॥
ॐ ह्रीं साधुलक्ष्मीरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु हैं ध्रुव धाम निराले, संयम के धारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥456॥
ॐ ह्रीं साधुध्रुवाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु गुण ध्रुव पाने वाले, होते मनहारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥457॥
ॐ ह्रीं साधुगुणध्रुवाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य सुगुण ध्रुव पाने वाले, साधु मनहारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥458॥
ॐ ह्रीं साधुद्रव्यगुणध्रुवाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु द्रव्योत्पाद वान हैं, भव-भव दुःखहारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥459॥
ॐ ह्रीं साधुद्रव्योत्पादाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य व्यायि है साधु अनुपम, महिमा के धारी।
मुक्ति पथ की करें साधना, होके अविकारी॥460॥
ॐ ह्रीं साधुद्रव्यव्ययाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : जोगीरासा)

साधु जीव गुण पाने वाले, हैं अतिशय धारी।
मोक्ष मार्ग के अनुपम राही, जग में मंगलकारी॥461॥
ॐ ह्रीं साधुजीवाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु चेतन गुण पाते हैं, जानन देखन हारी।
भेद ज्ञान प्रगटाने वाले, की महिमा है न्यारी॥462॥
ॐ ह्रीं साधुजीवगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु चेतन कहे लोक में, रत्नत्रय के धारी।
चेतन गुणमय कहे गये जो, जग में मंगलकारी॥463॥
ॐ ह्रीं साधुचेतनगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं साधु चैतन्य स्वरूपी, अनुपम विस्मयकारी।
यह गुण पाने हेतु चरण में, अतिशय ढ़ोक हमारी॥464॥
ॐ ह्रीं साधुचेतनस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु हैं चेतन गुणधारी, सम्यक् ज्ञान प्रकाशी।
संवर और निर्जरा करते, सब कर्मों के नाशी॥465॥
ॐ ह्रीं साधुचेतनाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं साधु परमात्म प्रकाशी, शिव पद पाने वाले।
नित्य निरंजन गुण के धारी, निज गुण रहे सम्हाले॥466॥
ॐ ह्रीं साधुपरमात्मप्रकाशाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु ज्योति प्रदीप्त करें शुभ, निज ज्योति प्रगटाते।
करते हैं पुरुषार्थ निरन्तर, मोक्ष महल को पाते॥467॥
ॐ ह्रीं साधुज्योतिस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु दर्शन ज्योति प्रदीपित, करने वाले गाये।
युगपत लोकालोक ज्ञान में, जिनवर शुभ प्रगटाए॥468॥
ॐ ह्रीं साधुज्योतिप्रदीपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु दर्शन ज्योति का शुभ, अनुपम प्रदीप भाई।
युगपत लोकालोक प्रकाशी, जिनवर महिमा गाई॥469॥
ॐ ह्रीं साधुदर्शनज्योतिप्रदीपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु ज्ञान ज्योति प्रगटाते, हैं शुभ अतिशयकारी।
स्वपर प्रकाशी अतिशय ज्ञानी, जग में मंगलकारी॥470॥

ॐ ह्रीं साधुज्ञानज्योतिप्रदीपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु आत्म ज्योति प्रगटाते, हैं संयम के धारी।
संवर और निर्जरा करते, हो करके अविकारी॥471॥

ॐ ह्रीं साधुआत्मज्योतिषे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु अतिशय शरण कहाए, तीन लोक में भाई।
सारे जग में प्रभु की महिमा, फैल रही अधिकाई॥472॥

ॐ ह्रीं साधुशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु सर्व शरण कहलाय, जग में मंगलकारी।
तीन लोकवर्ति जीवों के, हैं साधु उपकारी॥473॥

ॐ ह्रीं साधुसर्वशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लोक शरण मंगलमय, जीवों के हितकारी।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, आतम ब्रह्म विहारी॥474॥

ॐ ह्रीं साधुलोकशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोक शरण साधु हैं, लोकालोक प्रकाशी।
शिव पदवी को पाने वाले, गुण अनन्त की राशि॥475॥

ॐ ह्रीं साधुत्रिलोकशरणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु संसारोच्छेदक हैं, जग दुःख हरने वाले।
भव्यों को शिवमार्ग दिखाते, मंगल करने वाले॥476॥

ॐ ह्रीं साधुसंसारछेदकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व साधु एकत्व ध्यान के, धारी जग में गाए।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, साधु संत कहाए॥477॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व साधु एकत्व गुणों को, पाकर ध्यान लगाते।
रत्नत्रय गुण पाने वाले शिव, नगरी को जाते॥478॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं साधु एकत्व गुणों के, धारी अतिशयकारी।
निज आतम का ध्यान लगाते, होकर के अविकारी॥479॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु हैं एकत्व स्वरूपी, निज में रमने वाले।
ज्ञान ध्यान तप के धारी शुभ, जग में रहे निराले॥480॥

ॐ ह्रीं साधुएकत्वस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छन्द)

साधु परम ब्रह्म के धारी, आगम में गाए।
मोक्ष महल के अनुपम नेता, साधु कहलाए॥481॥

ॐ ह्रीं साधुपरमब्रह्मणे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु परम स्याद्वादी शुभ, कहे गये भाई।
नय सापेक्ष कथन की चर्चा, इनसे ही पाई॥482॥

ॐ ह्रीं साधुपरमस्याद्वादाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु शुद्ध ब्रह्म के धारी, अनुपम कहलाए।
निज आतम का ध्यान लगाकर, निज गुण प्रगटाए॥483॥

ॐ ह्रीं साधुशुद्धब्रह्मणे नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु परमागम के ज्ञाता, ज्ञान किए होवें।
सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, मिथ्या मति खोवें॥484॥

ॐ ह्रीं साधुपरमागमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ जिनागम के शुभ ज्ञाता, साधु कहलावें।
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि पा, ज्ञानी बन जावें॥485॥

ॐ ह्रीं साधुजिनागमाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थानेक जानने वाले, हैं साधु भाई।
सर्व जहाँ में फैल रही शुभ, उनकी प्रभुताई॥486॥

ॐ ह्रीं साधुअनेकार्थाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु शौच धर्म के धारी, मंगलमय गाये।
अन्तर बाह्य श्रेष्ठ निर्मलता, अतिशय जो पाये॥487॥

ॐ ह्रीं साधुशौचाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ शुचित्व गुणों के धारी, जग में शुभकारी।
राग-द्वेष मल मोह रहित शुभ, होते अविकारी॥488॥

ॐ ह्रीं साधुशुचित्वगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन हैं निर्मल पवित्र शुभ, साधु मनहारी।
कर्मरूप मल गालन करते, हैं संयम धारी॥489॥

ॐ ह्रीं साधुपवित्राय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विमुक्त साधु बन्धन से, कर्मों के भाई।
जल में कमल समान साधु, की महिमा बतलाई॥490॥

ॐ ह्रीं साधुविमुक्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धन मुक्त साधु हैं अनुपम, शुद्ध भाव धारी।
जिन शासन में अतः कहे वह, मुनिवर अनगारी॥491॥

ॐ ह्रीं साधुबन्धमुक्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्ध और प्रतिबन्ध रहित तुम, साधु को जानो।
संगारम्भ रहित अविकारी, मंगलमय मानो॥492॥

ॐ ह्रीं साधुबन्धप्रतिबन्धकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर कारण रहित साधु की, महिमा है न्यारी।
संयम तप के धारी अनुपम, होते शिवकारी॥493॥

ॐ ह्रीं साधुसंवरकारणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम निर्जरा द्रव्य स्वरूपी, साधु कहलाए।
उत्तम तप को तपने वाले, शिव पदवी पाए॥494॥

ॐ ह्रीं साधुनिर्जराद्रव्याय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा के निमित्त शुभ, साधु जन गाए।
गुण अनन्त जो कर्म निर्जरा, करके शिव पाए॥495॥

ॐ ह्रीं साधुनिर्जराविमलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु निर्जरा गुण के धारी, कहलाए भाई।
मुक्ति हेतु करें साधना, हृदय हर्षाई॥496॥

ॐ ह्रीं साधुनिर्जरागुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं निमित्त से मुक्त साधु जन, इस भव के सारे।
जल में कमल भिन्न रहता ज्यों, रहते त्यों न्यारे॥497॥

ॐ ह्रीं साधुनिमित्तमुक्ताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु बोध धर्म के धारी, आगम में गाए।
संशय रहित मोह तम नाशक, ज्ञानी कहलाए॥498॥

ॐ ह्रीं साधुबोधधर्माय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आल्हा छन्द)

साधु बोध गुणी कहलाए, आगम में अनुपम अविकार।
संशय मोह रहित अविकारी, होते जग में मंगलकार॥499॥

ॐ ह्रीं साधुबोधगुणाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु सुगति भाव के धारी, अविनाशी होते अविराम।
रत्नत्रय के साधक पाते, अल्प समय में ही शिवधाम॥500॥

ॐ ह्रीं साधुसुगतिभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु परम गति भावों को, पाने वाले रहे महान।
जन्म मरण की अकट शृंखला, नाश करें करके निज ध्यान॥501॥

ॐ ह्रीं साधुपरमगतिभावाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विभाव से रहित साधु जन, रागादि से रहित विशेष।
निर्विकार निर्ग्रन्थ स्वरूपी, धारण किए दिगम्बर भेष॥502॥

ॐ ह्रीं साधुविभावरहिताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं साधु स्वभाव स्वरूपी, शिव पथ के नेता अविकार।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र चरण में, शीश झुकाते बारम्बार॥503॥

ॐ ह्रीं साधुस्वभावमहिताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु मोक्ष स्वरूपी गाए, गुण अनन्त के अनुपम कोष।
रत्नत्रय का पालन करते, 'विशद' भाव से जो निर्दोष ॥504॥

ॐ ह्रीं साधुमोक्षस्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु परमानन्द स्वरूपी, निज स्वभाव में रहते लीन।
सम्यक् रीति करें साधना, करते जो कर्मों को क्षीण ॥505॥

ॐ ह्रीं साधुपरमानंदाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अर्हत् स्वरूपी साधु, कहलाते हैं अपरम्पार।
कर्म शत्रु के हर्ता हैं जो, तीन लोक में मंगलकार ॥506॥

ॐ ह्रीं साधुअर्हत्स्वरूपाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु कहे सिद्ध परमेष्ठी, शुभ नैगम नय के अनुसार।
करें साधना सिद्ध सुपद की, सम्यक् तप कर अपरम्पार ॥507॥

ॐ ह्रीं साधुसिद्धपरमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि प्रकाशी साधु उत्तम, सम्यक् ज्ञानी शुभ अभिराम।
भेदाभेद ज्ञान प्रगटाते, पाने वाले जो शिव धाम ॥508॥

ॐ ह्रीं साधुसूरिप्रकाशिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु उपाध्याय गुण धारी, ज्ञान ध्यान का करें विकास।
स्वपर सुहित के हेतु साधना, करके करते धर्म प्रकाश ॥509॥

ॐ ह्रीं साधूपाध्यायाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु परमेष्ठी रूप।
भेदाभेद ज्ञान के द्वारा, लखते हैं आतम स्वरूप ॥510॥

ॐ ह्रीं साधुअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु आत्म निरत रह करके, करते आतम कल्याण।
त्रस स्थावर आदि प्राणी, का भी करते हैं जो त्राण ॥511॥

ॐ ह्रीं साधुआत्मरताय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु रत्नत्रयात्म।
गुण अनन्त के धारी बनते, निज गुण पाकर के परमात्म ॥512॥

ॐ ह्रीं साधुअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुरत्नत्रयात्कम अनन्तगुणेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम शुभकार।
चरण कमल में 'विशद' भाव, से वंदन करते बारम्बार ॥513॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशाधिकपंचशतगुणयुतसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परम परमेष्ठी गुरु के, नाम विशेषण रहे महान।
तीन लोक में मंगलकारी, कारण भक्ति के बलवान ॥512॥

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

जयमाला

दोहा– हम सामर्थ्य विहीन हैं, कहने को वाचाल।
श्री जिन सिद्धों की यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(छन्द : पद्धड़ि)

तुमने करण त्रय हृदय धार, मिथ्यात्व मल्ल पर कर प्रहार।
संशय विमोह विभ्रम विनाश, सम्यक्त्व रवि कीन्हा प्रकाश॥
तन–चेतन का कर भेद ज्ञान, प्रगटाई आतम रुचि प्रधान।
जग विभव विभाव असार जान, स्वातम सुख को ही नित्य मान॥
अतिशय अनुपम चारित्र धार, तन मन से होके निर्विकार।
धारण करके निर्ग्रन्थ रूप, होके एकाग्र ध्याया स्वरूप॥
द्वय बीस परीषह जो प्रधान, उपसर्ग आदि सहके महान।
धारण कर गुप्ति समीति योग, चिन्तन अनुप्रेक्षा कर मनोग॥
तुम मोह शत्रु पर कर प्रहार, संवर कीन्हा नाना प्रकार।
तप अनशन आदि बाह्य धार, अपनी इच्छाओं को सम्हार॥
छह अभ्यंतर तप कर महान, निज शुद्धातम का किया ध्यान।
एकाकी निर्भय निःसहाय, एकान्त ध्यान का कर उपाय॥

कर्मों का संवर किये नाथ, अविपाक निर्जरा किए साथ।
अनन्तानुबन्धी चउ कषाय, विसंयोजन का कीन्हा उपाय॥
फिर क्षायिक श्रेणी आप धार, घाती कर्मों पर कर प्रहार।
चारों कर्मों का कर विनाश, कैवल्य ज्ञान कीन्हा प्रकाश॥
नव केवल लब्धि आप धार, नर भव का पाए श्रेष्ठ सार।
कर सूक्ष्म प्रतिपाती सुध्यान, चारों अघातिया कर समान॥
अन्तर्मुहूर्त में धार योग, बन जाते हैं केवलि अयोग।
करके अघातिया कर्म नाश, शिवपुर में कीन्हें आप वास॥
फिर प्रगटाए निज का स्वरूप, आनन्द प्राप्त कीन्हें अनूप।
अक्षय अनन्त निज सुगुण धार, अविनाशी गुण पाए अपार॥
शुभ स्वाश्रित सुख पाए विशेष, निज गुण प्रगटाए हे जिनेश।
त्रय लोक शरण अघहर महान, हे नाथ आप गुण के निधान॥
हे महातीर्थ ! मंगल स्वरूप, तुम सर्वोत्तम जग में अनूप।
तुम समयसार के मूल ज्ञेय, है सर्व तत्त्व में उपादेय॥
संसार महासागर अपार, भवि जीवों को आनन्द कार।
हे भवसागर ! में तरणहार, निज में रहते हो निराकार॥
हे पूज्यपाद ! तव चरण राज, हैं भव सागर में तरण जहाज।
हे सिद्ध प्रभु ! हे निराधार !, तव पद में वंदन बार-बार॥

(घत्ता छन्द)

हे लोक प्रकाशी, शिवपुर वासी, अविनाशी पद में वंदन।
हे जिन सन्यासी, ज्ञान प्रकाशी, कर्म विनाशी अभिनन्दन॥

ॐ ह्रीं द्वादशाधिक पञ्चशत दलोपरि स्थित सिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- द्रव्य भाव नो कर्म, रहित सिद्ध भगवान हैं।
पाए हैं जिन धर्म, चरण वंदना कर रहे॥

इत्याशीर्वादः

1024 गुणसहित श्री सिद्धपूजा

स्थापना

ऊर्ध्व अधो शुभ रेफ बिन्दु युत, ह बीजाक्षर है मनहार।
सर्व अकारादि से संयुत, श्रेष्ठ कर्णिका मंगलकार॥
वर्ग सहित वसु दल अम्बुज के, तत्त्ववान संधि शुभकार।
अग्र भाग में मंत्र अनाहत, शोभित होता अतिशयकार॥
पुनः अन्त में ह्रीं वेढ़ता, ध्याते सुर नर नाग प्रधान।
केहरि सम पूजन निर्मित है, सिद्ध चक्र का है आह्वान॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्त सिद्धादिपते ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे प्रभु ! नीर प्रासुक शुभम् लाए हैं, धार त्रय देने को हम शरण आए हैं।
जन्म मृत्यु जरा रोग का नाश हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संग केसर के चन्दन घिसा लाए हैं, चर्चने जिन प्रभु के चरण आए हैं।
ताप संसार का अब मेरा नाश हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल तन्दुल के अनुपम भराए अहा, लक्ष्य अक्षय सुपद पाना मेरा रहा।
भ्रमण संसार का अब मेरा नाश हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ उपवन के सुरभित कुसुम ये महाँ, हम चढ़ाने को लाए प्रभु पद यहाँ।
काम का रोग मेरा लगा नाश हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह घृतादि के व्यंजन बनाके सभी, हम चढ़ाने को लाए हैं ताजे अभी।
अब क्षुधा रोग का पूर्णतः नाश हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमगाते हुए दीप यह लाए हैं, मोह तम नाश करने को हम आए हैं।
श्रेष्ठ स्वपद मिले जिसके विश्वास हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेते दशांगी अहा, कर्म का भार सदियों से हमने सहा।
आठ कर्मों का हे नाथ ! अब नाश हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ ताजे सरस फल विशद ये महाँ, प्रभु के पद कमल में चढ़ाते यहाँ।
भव भ्रमण से मेरा भी तो अवकाश हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य आठों द्रव्यों का बनाके प्रभो !, हम चढ़ाते चरण में शुभम् ये विभो !।
अब निज गुण का हमको भी आभास हो, सिद्ध पूजा का फल सिद्धपुर वास हो॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणसंयुक्ताय सिद्धादिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1024 गुणसहित सिद्ध पूजा

(गीता छन्द)

जो उभय लक्ष्मी प्राप्त हैं वह, कहे प्रभु 'श्रीमान' हैं।
जो ज्ञान दर्शन वीर्य सुख, पाये अनन्त महान हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥1॥

ॐ ह्रीं श्री **श्रीमते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने अलौकिक ज्ञान, प्रगटाया स्वयं के ध्यान से।
वह 'स्वयंभू' हमको स्वयंभू, बना दें निज ज्ञान से॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥2॥

ॐ ह्रीं श्री **स्वयंभुवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म घन बन दिव्य वाणी, की सतत् वर्षा करें।
वे 'वृषभ' जिनवर हम सभी के, धर्म अन्तर में भरें॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥3॥

ॐ ह्रीं श्री **वृषभाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शं-सौख्य भवहारी रहे जो, श्रेष्ठ वह 'सम्भव' कहे।
वह शांत मूर्ति सुख प्रदाता, लोक में अनुपम रहे॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥4॥

ॐ ह्रीं श्री **शंभवाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभु' परम आनन्दकारी, आप हो हे जिन प्रभो !
हैं दिव्य सुख इन्द्रिय रहित जो, प्राप्त हमको हों विभो !॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥5॥

ॐ ह्रीं श्री **शंभवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुद्ध आतम में निरत हो, 'आत्मभू' कहलाए हैं।
हम आत्मभू बनने प्रभु तव, चरण युग में आए हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥6॥

ॐ ह्रीं श्री **आत्मभुवे** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह लोक सारा है प्रकाशित, 'स्वयंप्रभ' की प्रभा से।
इस लोक में जो द्रव्य सारे, वह दमकते विभा से॥

वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥7॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वयंप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! तुम हो प्रभु सबके, 'प्रभव' तुम कहलाए हो।
परिपूर्ण हो तुम भक्त जन के, श्रेष्ठ मन में भाए हो॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥8॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रभवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु श्रेष्ठ परमानन्द सुख के 'भोक्ता' कहलाए हैं।
वे ज्ञान दृग सुख वीर्य अनुपम, नन्त चतुष्ट्य पाए हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥9॥
ॐ ह्रीं श्री **भोक्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व के सब भूप चरणों, भक्त बनकर आए हैं।
'विश्वभू' अतएव जिनवर, लोक में कहलाए हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥10॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वभुवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपुनर्भव' हैं प्रभु जी, भव-भ्रमण से मुक्त हैं।
अरिहन्त हैं सर्वज्ञ प्रभु जी, सर्वसुख संयुक्त हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥11॥
ॐ ह्रीं श्री **अपुनर्भवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वात्मान' विश्व को जो, निज के सदृश जानते।
शुद्ध-चेतन चित्त सबका, आप सबको मानते॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥12॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वात्मानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'विश्वलोकेश' कहते, विश्व में जो श्रेष्ठ हैं।
विशद गुण के ईश हैं जो, ज्ञानधारी ज्येष्ठ हैं॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥13॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वलोकेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वतश्चक्षु' कहाए, विश्व में सद्ज्ञान से।
जो चक्षु केवल दर्श पाए, आत्मा के ध्यान से॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥14॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वतश्चक्षुषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षर' प्रभु न क्षरण होता, आपके गुण का कभी।
अक्ष इन्द्रियवश किए हैं, स्वयं ही अपनी सभी॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥15॥
ॐ ह्रीं श्री **अक्षराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविद्' हैं ज्ञान रश्मि, विश्व में प्रगटित हुए।
प्रभु चराचर जगत ज्ञाता, को लखे प्रमुदित हुए॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥16॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविद्येश' कहे प्रभु जी, ज्ञान के धारी अहा।
ज्ञान का अनुपम उजाला, लोक में फैला रहा॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥17॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वविद्येशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वयोनि' विश्व में, उत्पाद के कारण रहे।
तत्त्व के उपदेश कर्ता, जगत तारक जो कहे॥

वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥18॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वयोनये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनश्वर' प्रभु तुम ही, विश्व नश्वर यह रहा।
द्रव्य गुण पर्याय से, तुमको अनश्वर ही कहा॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥19॥

ॐ ह्रीं श्री **अनश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वदृश्वा' आप हो प्रभु, देखते क्षण में सभी।
देखने में द्रव्य कोई, नहीं जो आवे कभी॥
वे सर्वदर्शी देव जग में, श्रेष्ठ हैं तारण-तरण।
उनके विशद चरणों में करते, हम सदा शत्-शत् नमन॥20॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वदृश्वने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मंगलकारी हैं 'विभु', जग में तारणहार।
समवशरण में राजते, करते भव से पार॥21॥

ॐ ह्रीं श्री **विभवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धाता' चऊ गति के सभी, जीव लगाते पार।
सर्व प्राणियों के रहे, जग में पालनहार॥22॥

ॐ ह्रीं श्री **धात्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के स्वामी प्रभु, कहलाते 'विश्वेश'।
हित-मित-प्रिय जग जीव को, देते हैं उपदेश॥23॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विश्वलोचन', कहे, जग के नेत्र समान।
हित उपदेशक हो प्रभु, कौन करे गुणगान॥24॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वलोचनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विश्वव्यापी' प्रभो !, कण-कण रहा निवास।
अनुपम तीनों लोक में, फैला ज्ञान प्रकाश॥25॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वव्यापिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विधु' आप हो लोक में, कर्त्ता कर्म विधान।
भव्य जीव करते सदा, भाव सहित गुणगान॥26॥

ॐ ह्रीं श्री **विधवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेधा' हो प्रभु धर्म के, सुख के हेतु नाथ।
कर्त्ता मुक्ति मार्ग के, चरण झुकाएँ माथ॥27॥

ॐ ह्रीं श्री **वेधसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वत' हो प्रभु लोक में, शाश्वत है शुभ नाम।
शाश्वत कर दो भक्त को, करते चरण प्रणाम॥28॥

ॐ ह्रीं श्री **शाश्वताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वतोमुख' रहे, दीखे मुख चऊ ओर।
दर्शन करके भक्त जन, होते भाव विभोर॥29॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वतोमुखाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विश्वकर्मा' प्रभो !, दिया कर्म उपदेश।
असि मसि कृषि वाणिज्य अरु, शिल्प कला संदेश॥30॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वकर्मणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्येष्ठ' तुम हो प्रभो !, सर्व श्रेष्ठ है ज्ञान।
बड़ा नहीं कोइ लोक में, तुम सम और समान॥31॥

ॐ ह्रीं श्री **जगज्ज्येष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वमूर्ति' है नाम तव, झुकता सारा लोक।
तव दर्शन करके सभी, मैटें भव का रोग॥32॥

ॐ ह्रीं श्री **विश्वमूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संघ चतुर्विध के प्रभु !, रहे 'जिनेश्वर' आप।
पूजा अर्चा कर सभी, धोते अपने पाप॥33॥

ॐ ह्रीं श्री **जिनेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा 'विश्वदृक्' आपका, आगम में शुभ नाम।
द्रव्य सभी अवलोकते, तुमको करें प्रणाम॥34॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वदृशे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो ! 'विश्वभूतेश' तुम, प्राणी मात्र के ईश।
भव्य जीव सब भाव से, झुका रहे हैं शीश॥35॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वभूतेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'विश्वज्योति' कहते तुम्हें, जग में ज्ञानी लोग।
विशद ज्ञान दर्शाए तव, सारा लोकालोक॥36॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहीं 'अनीश्वर' आप सम, जग में सर्वप्रधान।
ईश्वर सबके हो परम, मंगलमयी महान॥37॥
ॐ ह्रीं श्री **अनीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'जिन' कहलाए हो प्रभो, जीते कर्म कलंक।
इन्द्रिय मन को जीतकर, हुए आप अकलंक॥38॥
ॐ ह्रीं श्री **जिनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मारी को जीतकर, पाया 'जिष्णु' नाम।
शासन है जयशील तव, चरणों करें प्रणाम॥39॥
ॐ ह्रीं श्री **जिष्णवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अमेयात्म' तुम हो प्रभो, गुण का नहीं है पार।
नहीं जान पावे कोई, महिमा अपरम्पार॥40॥
ॐ ह्रीं श्री **अमेयात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

'विश्वरीश' है नाम तुम्हारा, चरणों झुकता है जग सारा।
इस जग के तुम ईश कहाते, चरणों में सब शीश झुकाते॥41॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वरीशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'जगतपति' कहलाते स्वामी, तुम हो प्रभु जी अन्तर्यामी।
भवि जीवों के तुम हो त्राता, तुम हो जग में भाग्य विधाता॥42॥
ॐ ह्रीं श्री **जगत्पतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनन्तजित्' तुम कहलाए, लोकालोक के स्वामी गाए।
महिमा रही आपकी न्यारी, सर्वजगत में मंगलकारी॥43॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्तजिते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अचिन्त्यात्मा' आप कहाए, तव गुण चिन्तन में न आए।
तुम सम कोई और नहीं है, सारे जग में और कहीं है॥44॥
ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भव्यबन्धु' जग में कहलाए, भव्यों को भव पार लगाए।
जो रत्नत्रय योग्य रहे हैं, तव चरणों के भक्त कहे हैं॥45॥
ॐ ह्रीं श्री **भव्यबंधवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम सम कोई 'अबन्धन' नाहीं, जग में तीन लोक के माहीं।
सारे बन्धन आप नशाए, अतः अबन्धन तुम कहलाए॥46॥
ॐ ह्रीं श्री **अबंधनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पुरुष 'युगादी' तुमको कहते, तुमरे शासन में जो रहते।
युग के आदी में तुम आये, अतः 'युगादी पुरुष' कहाए॥47॥
ॐ ह्रीं श्री **युगादिपुरुषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'ब्रह्मा' तुमको कहते प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
तुमने केवल ज्ञान जगाया, ब्रह्मा पदवी को तव पाया॥48॥
ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पञ्चब्रह्ममय' तुम कहलाए, पाँचों ज्ञान आपने पाए।
परमेष्ठी जो पाँच कहे हैं, तुममें पाँचों रूप रहे हैं॥49॥
ॐ ह्रीं श्री **पञ्चब्रह्मामयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'शिव' सर्वानन्दमयी हो, अपने सारे दोष क्षयी हो।
तुम निर्वाण मोक्ष पद पाए, शिवपुरवासी आप कहाए॥50॥
ॐ ह्रीं श्री **शिवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाम आपका 'पर' भी आता, जीवों पर करुणा को गाता।
अपना सभी आपको माने, फिर भी तुमको जग निज जाने॥51॥
ॐ ह्रीं श्री **पराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' नाम आपका गाया, तुम सम और कोई न पाया।
सर्व जहाँ से पर तुम रहते, परतर अतः आपको कहते ॥52॥
ॐ ह्रीं श्री **परतराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे जिन आप 'सूक्ष्म' कहलाते, इन्द्रिय विषयों में न आते।
आप अतीन्द्रिय हो सद्ज्ञानी, ऐसा कहती है जिनवाणी ॥53॥
ॐ ह्रीं श्री **सूक्ष्माय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'परमेष्ठी' जिन आप कहाए, आप परम पदवी को पाए।
पाँचों पद के तुम अधिकारी, फिर भी बने आप अविकारी ॥54॥
ॐ ह्रीं श्री **परमेष्ठिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन को कहा 'सनातन' भाई, प्रभु ने शाश्वत पदवी पाई।
विद्यमान शासन में रहते, अतः सनातन जिन को कहते ॥55॥
ॐ ह्रीं श्री **सनातनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वयं ज्ञान की ज्योति जलाई, तीर्थंकर की पदवी पाई।
'स्वयंज्योति' अतएव कहाए, जग को रोशन करने आए ॥56॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वयंज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ आप 'अज' भी कहलाए, उत्पत्ति न फिर से पाए।
महिमा जान सका न कोई, ज्ञानी जग में होवे सोई ॥57॥
ॐ ह्रीं श्री **अजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो 'अजन्मा' आप कहाते, जन्म आप फिर से न पाते।
गर्भ जन्म के मैटन हारे, नाश करो प्रभु रोग हमारे ॥58॥
ॐ ह्रीं श्री **अजन्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परम ब्रह्म को प्रभु प्रगटाए, 'ब्रह्मयोनि' अतएव कहाए।
बने आप तब केवलज्ञानी, ऐसा कहती माँ जिनवाणी ॥59॥
ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मयोनये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
योनि में उत्पाद नहीं है, लख चौरासी यहाँ कही हैं।
अतः 'अयोनिज' आप कहाए, विस्मयकारी महिमा पाए ॥60॥
ॐ ह्रीं श्री **अयोनिजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

जय 'मोहारी' विजयीश नमो, जय ऋषियों के आधीश नमो।
जय जगतपति जगदीश नमो, जय 'मोहारी पति' ईश नमो ॥61॥
ॐ ह्रीं श्री **मोहारिविजयने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जय 'मोहमल्लजेता' महान्, जय जन्म-मृत्यु की किए हान।
जय सर्व लोक के आप मीत, जय कर्म शत्रु सब लिए जीत ॥62॥
ॐ ह्रीं श्री **मोहमल्लजेताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जय 'धर्मचक्रधारी' मुनीश, चरणों तव झुकते शताधीश।
तुम जैन धर्म के हुए नाथ, तव चरणों में झुक रहा माथ ॥63॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मचक्रिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ ! 'दयाध्वज' आप नाम, तव चरणों में करते प्रणाम।
अदया का है न जहाँ लेश, हैं लोक पूज्य अनुपम जिनेश ॥64॥
ॐ ह्रीं श्री **दयाध्वजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'प्रशान्तारि' तुमको प्रणाम, हे ज्ञानधारि तुमको प्रणाम।
हे मोहजयी ! तुमको प्रणाम, हे कर्मक्षयी ! तुमको प्रणाम ॥65॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रशांतारये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'अनन्तात्मा' है प्रणाम, हे परमात्मा पद में प्रणाम।
हे शिवगामी तुमको प्रणाम, हे अविनाशी ! तुमको प्रणाम ॥66॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्तात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'योगी' तुमको मम प्रणाम, हे योगजयी जिनवर प्रणाम।
हे कामजयी ! तुमको प्रणाम, हे महामुनि ! तुमको प्रणाम ॥67॥
ॐ ह्रीं श्री **योगिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'योगीश्वरार्चित' तुम्हें नमन, हे कर्मारिवर्जित ! तुम्हें नमन।
हे त्रिभुवनपति ! है तुम्हें नमन, हे अभिवनयोगी ! तुम्हें नमन ॥68॥
ॐ ह्रीं श्री **योगीश्वरार्चिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जय 'ब्रह्माविद्' ब्रह्माणपति, जय ब्रह्म स्वरूपी वृहस्पति।
जय-जय ब्रह्माविद ब्रह्मरूप, तुमने पाया निज का स्वरूप ॥69॥
ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्माविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' प्रभो !, हे ब्रह्मलोक ! के नाथ विभो।
हे महामुनि ! हे श्रेष्ठयति !, हे ब्रह्मस्वभावी ! ब्रह्मपति॥70॥
ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मतत्त्वज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'ब्रह्मोद्याविद्' तुम्हें नमन, हे ब्रह्मविदाम्बर ! तुम्हें नमन।
हे जिन विद्यापति ! तुम्हें नमन, हे शाश्वतसन्मति तुम्हें नमन॥71॥
ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मोद्याविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'यतीश्वर' कहलाए, जो ईश्वर बन जग में आए।
प्रभु रत्नत्रय में यत्न किए, अतएव ज्ञान के जले दिए॥72॥
ॐ ह्रीं श्री **यतीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुद्ध' आपका नाम अहा, रागादि का न काम रहा।
जो निर्मल हैं अति अविकारी, चैतन्य रूप गुण के धारी॥73॥
ॐ ह्रीं श्री **शुद्धाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'बुद्ध' आप सम्पूर्ण कहे, वस्तु स्वरूप को जान रहे।
प्रभु पूर्ण सुबुद्धि के धारी, तुम हो चेतन चिन्मयधारी॥74॥
ॐ ह्रीं श्री **बुद्धाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'प्रबुद्धात्मा' कहलाए, आतम में आतम को पाए।
वह प्रभु ज्ञान से जगमगते, प्रभु सहस्र रश्मि जैसे लगते॥75॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रबुद्धात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धार्थ' आपका श्रेष्ठ नाम, तुमको जग करता है प्रणाम।
कर लिए प्रयोजन सभी सिद्ध, अतएव हुए जग में प्रसिद्ध॥76॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धार्थाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'सिद्धशासन' प्रणाम, तुम कहलाते प्रभु मोक्ष धाम।
है शासन सबका हितकारी, इस सारे जग का उपकारी॥77॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सिद्ध कहाते हो स्वामी, तुम तीन लोक में हो नामी।
तुम मुक्ति पथ के हो गामी, तुम जग में हो अन्तर्यामी॥78॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको 'सिद्धान्तविद्' कहते है, जो तव चरणों में रहते हैं।
प्रभु द्वादशांग के हो ज्ञाता, अतएव कहे जग के त्राता॥79॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धान्तविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ध्येय आपका श्रेष्ठ अहा, अतएव आपको 'ध्येय' कहा।
तुम ध्येय ज्ञेय सबके ज्ञाता, अतएव तुम्हें जग सिर नाता॥80॥
ॐ ह्रीं श्री **ध्येयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'सिद्धसाध्य' कर लिए हैं सारे, कोई शेष न रहे तुम्हारे।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥81॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसाध्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'जगद्धित' तुम कहलाए, जग का हित करने को आए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥82॥
ॐ ह्रीं श्री **जगद्धिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहिष्णु' आप कहाए, उत्तम क्षमा धर्म को पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥83॥
ॐ ह्रीं श्री **सहिष्णवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युत' हो तुम च्युत न होते, निज स्वभाव को कभी न खोते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥84॥
ॐ ह्रीं श्री **अच्युताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अनन्त' कहलाए स्वामी, गुण अनन्त पाए प्रभु नामी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥85॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णु' की प्रभा निराली, तुम सम न कोइ शक्तिशाली।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥86॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रभविष्णवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवोद्भव' आप कहाए, अन्तिम भव प्रभुजी तुम पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥87॥
ॐ ह्रीं श्री **भवोद्भवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'प्रभुष्णु' कहते भाई, तुमने सारी विद्या पाई।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥88॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रभुष्णवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अजर' तुम्हें न जरा सताए, कोई रोग पास न आए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥89॥
ॐ ह्रीं श्री **अजराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ 'अजर्य' शुभ नाम को पाए, तुमरे गुण इस जग ने गाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥90॥
ॐ ह्रीं श्री **अजर्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'भ्राजिष्णु' सब तुमको कहते, तव भक्ति में ही रत रहते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥91॥
ॐ ह्रीं श्री **भ्राजिष्णवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'धीश्वर' हो प्रभु केवलज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥92॥
ॐ ह्रीं श्री **धीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अव्यय' व्यय न होंय तुम्हारे, गुण तुमने जो पाए सारे।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥93॥
ॐ ह्रीं श्री **अव्ययाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'विभावसु' तुम हो तमहारी, महिमा रही जगत् से न्यारी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥94॥
ॐ ह्रीं श्री **विभावसवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'असंभूष्णू' प्रभु तुम कहलाए, जन्म-जरा से मुक्ति पाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥95॥
ॐ ह्रीं श्री **असम्भूष्णवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'स्वयंभूष्णू' नाम तुम्हारा, स्वयंसिद्ध हो जग को तारा।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥96॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वयंभूष्णवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको नाथ 'पुरातन' कहते, तुम प्राचीन सदा ही रहते।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥97॥
ॐ ह्रीं श्री **पुरातनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'परमात्मा' अतिशय के धारी, भक्त बनी यह दुनियाँ सारी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥98॥
ॐ ह्रीं श्री **परमात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'परमज्योति' ज्योतिर्मय ज्ञानी, सर्व सृष्टि तुमने पहिचानी।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥99॥
ॐ ह्रीं श्री **परमज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीन लोक की प्रभुता पाए, 'त्रिजगत् परमेश्वर' कहलाए।
अतः आपके हम गुण गाते, चरणों में हम शीश झुकाते॥100॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगत्परमेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज - सुन भाई रे...)

प्रभु को 'दिव्यभाषापति' जानो भाई रे !, अष्टादश भाषा के ज्ञाता भाई रे !
सप्त शतक लघु भाषा जाने भाई रे, ज्ञान ज्योति जिन प्रभु ने शुभ प्रगटाई रे !॥101॥
ॐ ह्रीं श्री **दिव्यभाषापतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'दिव्य' नाम प्रभु का शुभ जानो भाई रे !, महादिव्यता श्री जिनवर ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥102॥
ॐ ह्रीं श्री **दिव्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहते 'पूतवाक्' जिनवर को भाई रे !, वाक् पवित्रता श्री जिनवर ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥103॥
ॐ ह्रीं श्री **पूतवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'पूतशासन' कहलाते भाई रे !, है पवित्र जिनवर का शासन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥104॥
ॐ ह्रीं श्री **पूतशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पूतात्मा' कहते जिनवर को भाई रे !, पूत आत्मा जिनवर की शुभ भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥105॥
ॐ ह्रीं श्री **पूतात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परंज्योति' है नाम प्रभु का भाई रे !, परंज्योति अन्तर में शुभ प्रगटाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥106॥
ॐ ह्रीं श्री **परमज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माध्यक्ष' कहाते हैं जिन भाई रे !, दश धर्मों की सत्ता प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥107॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्माध्यक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रसिद्ध शुभ नाम 'दमीश्वर' भाई रे !, इन्द्रिय जय की शक्ति प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥108॥
ॐ ह्रीं श्री **दमीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीपति' की पदवी प्रभु ने शुभ पाई रे !, श्रीपति कहलाते हैं श्री जिन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥109॥
ॐ ह्रीं श्री **श्रीपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'भगवान' आप इस जग में भाई रे !, ज्ञान और ऐश्वर्य पूर्णता पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥110॥
ॐ ह्रीं श्री **भगवते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हत्' कहते हैं जिनवर को भाई रे !, इन्द्रादिकृत पूजा प्रभु ने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥111॥
ॐ ह्रीं श्री **अर्हते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रज से सहित 'अरज' हैं जिन प्रभु भाई रे !, कर्म घातिया नाश किए प्रभु भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥112॥
ॐ ह्रीं श्री **अरजसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विरज' नाम प्रभुवर ने पाया भाई रे !, कर्म धूलि को आप नशाते भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥113॥
ॐ ह्रीं श्री **विरजसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुचि' आपने शुचिता अनुपम पाई रे !, विशद आत्म शक्ति जिन प्रभु प्रगटाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥114॥
ॐ ह्रीं श्री **शुचये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'तीर्थकृत' पदवी पाए भाई रे !, द्वादशांग के श्रुत कर्त्ता जिन भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥115॥
ॐ ह्रीं श्री **तीर्थकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया 'केवल' ज्ञान आपने भाई रे !, मोह आवरण विघ्न नाशता भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥116॥
ॐ ह्रीं श्री **केवलिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी कहें 'ईशान' आपको भाई रे !, सर्व लोक की प्रभुता तुमने पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥117॥
ॐ ह्रीं श्री **ईशानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूजार्ह' कहाते हैं जिनवर सुखदायी रे !, श्रेष्ठ अर्चनायोग्य लोक में भाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥118॥
ॐ ह्रीं श्री **पूजार्हाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्नातक' हैं प्रभु इस जग में भाई रे !, कर्म कलंक पंकता पूर्ण नसाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥119॥
ॐ ह्रीं श्री **स्नातकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मलादि हीन 'अमल' हैं भाई रे !, निर्मलता प्रभु पूर्ण रूप से पाई रे !
करते हैं गुणगान सभी मिल भाई रे !, श्रेष्ठ लोक में है प्रभु की प्रभुताई रे !॥120॥
ॐ ह्रीं श्री **अमलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

'अनन्तदीप्त' जिन नाथ कहाए, ज्ञान दीप्ति जग में फैलाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥121॥
ॐ ह्रीं श्री **अनंतदीप्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानात्मा' जिनवर को कहते, विशद ज्ञान में सदा विचरते।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥122॥
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'स्वयंबुद्ध' कहलाए, स्वयं आप ही बोध जगाए।
सहस सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥123॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वयंबुद्धाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रजापति' कहलाए स्वामी, सर्व प्रजा है तव अनुगामी।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥124॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रजापतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुक्त' आपने मुक्ति पाई, कर्म श्रृंखला पूर्ण नसाई।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥125॥
ॐ ह्रीं श्री **मुक्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शक्त' सहन परिषह करते हैं, उपसर्गों से न डरते हैं।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥126॥
ॐ ह्रीं श्री **शक्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराबाध' बाधा परिहारी, हो उपसर्ग रहित अविकारी।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥127॥
ॐ ह्रीं श्री **निराबाधाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कल' कल से हीन कहाए, ज्ञान कला में प्रभुता पाए।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥128॥
ॐ ह्रीं श्री **निष्कलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेश्वर' त्रिभुवन के स्वामी, जग के त्राता अन्तर्यामी।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥129॥
ॐ ह्रीं श्री **भुवनेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्जन रहित 'निरंजन' जानो, कर्माञ्जिन न जिन के मानो।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥130॥
ॐ ह्रीं श्री **निरंजनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्योति' जिनवर कहलाए, केवलज्ञान ज्योति को पाए।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥131॥
ॐ ह्रीं श्री **जगज्ज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुक्तोक्ती' नाम पुकारा, पूर्वापर अविरोधी प्यारा।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥132॥
ॐ ह्रीं श्री **निरुक्तोक्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'निरामय' आमय हीना, रहे हमेशा आप नवीना।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥133॥
ॐ ह्रीं श्री **निरामयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचलस्थिति' न चलते भाई, निज में अचल रहे स्थाई।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥134॥
ॐ ह्रीं श्री **अचलस्थितये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षोभ्य' न क्षोभ तिहारे, मोह क्षोभ नाशे प्रभु सारे।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥135॥
ॐ ह्रीं श्री **अक्षोभ्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कूटस्थ' कहाए भाई, सिद्ध शिला पर स्थिति पाई।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥136॥
ॐ ह्रीं श्री **कूटस्थाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थाणु' सम स्थित गाये, लोक शिखर के नाथ कहाए।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥137॥
ॐ ह्रीं श्री **स्थाणवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षय' हैं क्षय न होते, ज्ञानानन्त कभी न खोते।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥138॥
ॐ ह्रीं श्री **अक्षयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को आप 'अग्रणी' जानो, सारे जग से आगे मानो।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥139॥
ॐ ह्रीं श्री **अग्रणये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'ग्रामिणी' आप कहाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।
सहस्र सूर्य सम कान्ती धारी, जिन चरणों में ढोक हमारी॥140॥
ॐ ह्रीं श्री **ग्रामणये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

बने 'नेता' प्रभु जी अविकार, दिखाया जग को मुक्ति द्वार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥141॥
ॐ ह्रीं श्री **नेत्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणेता' हो आगम के नाथ, झुका तव चरणों मेरा माथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥142॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रणेत्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'न्यायशास्त्रवित्' आप, करें हम नाम मंत्र का जाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥143॥
ॐ ह्रीं श्री **न्यायशास्त्रविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का नाम 'शास्ता' जान, दिए जग को उपदेश महान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥144॥
ॐ ह्रीं श्री **शास्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'धर्मपति' भगवान, प्रभु हैं श्रेष्ठ धर्म की खान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥145॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिए जो 'धर्म' का शुभ उपदेश, नाम पाए प्रभु धर्म विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥146॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्म्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'धर्मात्मा' हो तुम एक, विधर्मी प्राणी कई अनेक।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥147॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे हैं 'धर्मतीर्थकृत' देव, किए जो धर्म प्रवर्तन एव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥148॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मतीर्थकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते हैं 'वृषध्वज' जिनराज, लगाए प्रभु धर्म का ताज।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥149॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषध्वजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कहलाते हैं 'वृषाधीश', धर्म के धारी श्रेष्ठ ऋशीष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥150॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषाधीश** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन्हें 'वृषकेतु' कहते लोग, धर्म ध्वज का पाते संयोग।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥151॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषकेतवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषायुध' कहलाते जिन आप, नाश करते हो सारे पाप।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥152॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषायुधाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने 'वृष' पाया शुभ नाम, धर्म के धारी तुम्हें प्रणाम।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥153॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम 'वृषपति' श्रेष्ठ महान, धर्मधारी तुम रहे प्रधान।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥154॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'भर्त्ता' हो जग के नाथ, भव्य जीवों का देते साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥155॥
ॐ ह्रीं श्री **भर्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'वृषभांक' जिनेश, बैल है जिनका चिन्ह विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥156॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषभांकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाये 'वृषभोद्भव' जिनदेव, प्रवर्तन करते आप सदैव।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥157॥
ॐ ह्रीं श्री **वृषोद्भवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यनाभि' कहलाते नाथ, रत्न वृष्टि हो गर्भ के साथ।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥158॥
ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यनाभये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए हैं 'भूतात्म' जिनेश, आत्म का कीन्हे ध्यान विशेष।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥159॥
ॐ ह्रीं श्री **भूतात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर हैं 'भूभृत्' अविकार, करें सारे जग का उद्धार।
चरण हम पूजें बारम्बार, करो अब हमको भव से पार॥160॥
ॐ ह्रीं श्री **भूभृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द सार)

जिन्हें 'भूतभावन' कहते हैं, जीवों के हितकारी।
हाथ जोड़ हम वन्दन करते, जो हैं करुणाधारी॥161॥
ॐ ह्रीं श्री **भूतभावनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभव' मुक्ति में कारण जानो, भवि जीवों के भाई।
सुख-शांति के दाता जग में, प्रभु की है प्रभुताई॥162॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रभवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव से हुए मुक्त हे जिनवर, अतः 'विभव' कहलाए।
भव विशिष्ट पाकर हम भगवन, मुक्ति पाने आए॥163॥
ॐ ह्रीं श्री **विभवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'भास्वान' ज्ञान के सूरज, ज्ञान दीप्ति के धारी।
लोकालोक प्रकाशित करते, मंगलमय अविकारी॥164॥
ॐ ह्रीं श्री **भास्वते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यय उत्पाद ध्रौव्य मय जिनवर, 'भव' संज्ञा को पाए।
जो विभाव परिणमन नाशकर, शास्वत भव को पाए॥165॥
ॐ ह्रीं श्री **भवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् स्वरूप निज 'भाव' स्वभावी, परम भाव प्रगटाए।
भाव पारिणामिक प्रभु पाकर, सारे भाव नशाए॥166॥
ॐ ह्रीं श्री **भावाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भवान्तक' कहे गये हैं, सर्व भवों के नाशी।
पश्चम भव को पाने वाले, केवल ज्ञान प्रकाशी॥167॥
ॐ ह्रीं श्री **भवान्तकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हिरण्यगर्भ' कहलाए जिनवर, स्वर्ण कान्ति के धारी।
गर्भ समय में वृष्टि करते, इन्द्र हर्षते भारी॥168॥
ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यगर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ समय में श्री के धारी, श्री जिन 'गरभ' कहाते।
शत् इन्द्रों से अतः जिनेश्वर, अतिशय पूजे जाते॥169॥
ॐ ह्रीं श्री **गर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु महान भव पाने वाले, 'प्रभूतविभव' कहलाए।
तीन लोक की छोड़ सम्पदा, शाश्वत सुख उपजाए॥170॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रभूतविभवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का अन्त किया है प्रभु ने, अतः 'अभव' कहलाए।
तव चरणों में भव्य जीव कई, अभव सम्पदा पाए॥171॥
ॐ ह्रीं श्री **अभवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! 'स्वयंप्रभु' आप लोक में, हो महिमा के धारी।
सर्व लोक की सर्व सम्पदा, चरण झुके आ सारी॥172॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वयंप्रभवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम शक्ति प्रगटाकर, 'प्रभूतात्म' कहलाए।
शाश्वत सुख चैतन्य स्वरूपी, स्वयं आप ही पाए॥173॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रभूतात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूतनाथ' हैं सर्व जगत् में, सब जीवों के स्वामी।
ऋषि मुनि गणधर अनगारी, बनते तव अनुगामी॥174॥
ॐ ह्रीं श्री **भूतनाथाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगतत्प्रभु' हो सर्व जगत् में, सब जीवों के स्वामी।
सौख्य प्रदाता हैं जन-जन के, अतिशय अन्तर्यामी॥175॥
ॐ ह्रीं श्री **जगत्प्रभवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वादि' तुमने इस युग में, धर्म प्रवर्तन कीन्हा।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े स्वयं भी, भव्यों को पथ दीन्हा॥176॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वादये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सर्वदृक' ! हो अविनाशी, सबको देखन हारे।
द्रव्य मूर्तामूर्त रहे जो, सर्व झलकते सारे॥177॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वदृशे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सार्व' आप कहलाए जिनवर, सर्व जगत के स्वामी।
सबका हित करने वाले हो, हे मुक्ति पथ गामी॥178॥
ॐ ह्रीं श्री **सार्वाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'सर्वज्ञ' जगत के ज्ञाता, तुमने सब कुछ जाना।
द्रव्य और गुण पर्यायों को, ज्यों का त्यों पहिचाना॥179॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्ही 'सर्वदर्शन' कहलाए, सर्व मतों के ज्ञाता।
कुमत विनाशी सुमत प्रकाशी, इस जग के हो त्राता॥180॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वदर्शनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'सर्वात्म' जगत हितकारी, सब झलके सृष्टि सारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥181॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'सर्वलोकेश' कहाए, सबका हित करने आए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥182॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आप 'सर्वविद्' गाये, क्षण में सब कुछ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥183॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'सर्वलोकजितस्वामी', तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥184॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकजिते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'सुगति' आपने पाई, जो सिद्ध गति कहलाई।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥185॥
ॐ ह्रीं श्री **सुगतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'सुश्रुत' प्रभु कहलाए, सुश्रुत की गंग बहाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥186॥
ॐ ह्रीं श्री **सुश्रुताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत्' हो सुनने वाले, ज्ञानी जग के रखवाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥187॥
ॐ ह्रीं श्री **सुश्रुते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु हैं 'सुवाक्' के धारी, हैं वचन श्रेष्ठ गुणकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥188॥
ॐ ह्रीं श्री **सुवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु जगत गुरु हे 'सूरि', तुम विद्या पाए पूरी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥189॥
ॐ ह्रीं श्री **सूरये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञाता, प्रभु तीन लोक विख्याता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥190॥
ॐ ह्रीं श्री **बहुश्रुताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'विश्रुत' त्रिभुवन के ज्ञानी, आगम है तव श्रुत वाणी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥191॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्रुताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'विश्वतःपाद' जिन गाये, प्रभु लोक पूज्यता पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥192॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वतःपादाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'विश्वशीर्ष' कहलाए, शिवपुर में धाम बनाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥193॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वशीर्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'शुचिश्रवा' हो स्वामी, हो ज्ञानी अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥194॥
ॐ ह्रीं श्री **शुचिश्रवसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो 'सहस्रशीर्ष' शुभ गाये, प्रभु सुख अनन्त उपजाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥195॥
ॐ ह्रीं श्री **सहस्त्रशीर्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेत्रज्ञ' तुम्हें कहते हैं, प्रभु सर्व क्षेत्र रहते हैं।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥196॥
ॐ ह्रीं श्री **क्षेत्रज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्राक्ष' कहलाए, जो सब पदार्थ दर्शाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥197॥
ॐ ह्रीं श्री **सहस्राक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'सहस्रपात' जिन स्वामी, हो वीर बली जग नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥198॥
ॐ ह्रीं श्री **सहस्रपदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भूतभव्यभवद्भर्त्ता', त्रैकालिक सुख के कर्त्ता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥199॥
ॐ ह्रीं श्री **भूतभव्यभवद्भर्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विश्वविद्यामहेश्वर', तुम हो इस जग के ईश्वर।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥200॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वविद्यामहेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छन्द)

प्रभु 'स्थविष्ठ' कहलाए, अतिशय पूजा को पाए।
शुभ नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥201॥
ॐ ह्रीं श्री **स्थविष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम 'स्थविर' जानो, सिद्धों में स्थिर मानो।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, हम शाश्वत सुख उपजाएँ॥202॥
ॐ ह्रीं श्री **स्थविराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्येष्ठ' सभी के दाता, तुम बने सभी के त्राता।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥203॥
ॐ ह्रीं श्री **ज्येष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रष्ठ' कहाते स्वामी, यह जग है तव अनुगामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥204॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रेष्ठ' ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥205॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रेष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'वरिष्ठधी' नामी, हे प्रखर बुद्धि के स्वामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥206॥
ॐ ह्रीं श्री **वरिष्ठधिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेष्ठ' आपको कहते, क्योंकि स्थिर हो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥207॥
ॐ ह्रीं श्री **स्थेष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'गरिष्ठ' हे ज्ञानी, प्रभु वीतराग विज्ञानी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥208॥
ॐ ह्रीं श्री **गरिष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंहिष्ठ' नाम प्रभु पाये, तव रूप अनेकों गाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥209॥
ॐ ह्रीं श्री **बंहिष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'श्रेष्ठ' गुणों के धारी, तव दुनियाँ बनी पुजारी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥210॥
ॐ ह्रीं श्री **श्रेष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव नाम 'अणिष्ठ' बखाना, यह सर्व चराचर जाना।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥211॥
ॐ ह्रीं श्री **अणिष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको 'गरिष्ठगी' कहते, निज गौरव में जो रहते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥212॥
ॐ ह्रीं श्री **गरिष्ठगिरे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वभृज' स्वामी, भव नाश किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी॥213॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वभृषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'विश्वसृज' स्वामी, कई सृजन किए जग नामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥214॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वसृजे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' के पद में आते, सुर नर मुनि शीश झुकाते।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥215॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। *(विश्वभुट् भी नाम आता है।)*

जिनदेव 'विश्वभुक्' गाये, जग के रक्षक कहलाए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥216॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वभुजे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विश्वनायक' कहलाए, नीति का ज्ञान कराए।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥217॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वनायकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो प्रभु जग 'विश्वाशी', हे मोक्षपुरी के वासी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥218॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वासिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'विश्वरूपात्मा', कहलाते हो परमात्मा।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥219॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वरूपात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'विश्वजित' स्वामी, भव विजयी अन्तर्यामी।
हे नाम मंत्र के धारी, त्रैलोक्य पति अनगारी ॥220॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वजिते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

'विजितान्तक' आप कहे स्वामी, तुमने सब कर्म नशाए हैं।
जग में जितने भी मल्ल कहे, सब शरणागत बन आए हैं॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥221॥
ॐ ह्रीं श्री **विजितांतकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभव' आपका भव अनुपम, जिसकी महिमा का पार नहीं।
भव पार भक्ति कर हो जाते, प्राणी न भटकें और कहीं॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥222॥
ॐ ह्रीं श्री **विभवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विभय' आपके आगे भय, आने से भी भय खाते हैं।
जो चरण शरण को पा लेते, वह भी निर्भय हो जाते हैं॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥223॥
ॐ ह्रीं श्री **विभयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे कर्मजयी जिन 'वीर' प्रभो !, तुमने सब कर्म हराए हैं।
की विजय प्राप्त है कर्मों पर, जो शरणागत बन आये हैं॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥224॥
ॐ ह्रीं श्री **वीराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'विशोक' शुभ नाम आपका, शोक सभी हरने वाले।
भवि जीवों के रक्षक अनुपम, अनुपम हो प्रभु रखवाले॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥225॥
ॐ ह्रीं श्री **विशोकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजर' वृद्ध न होते स्वामी, आप जगाते केवलज्ञान।
पुण्य पुरुष बनकर हरते हो, भवि जीवों का तुम अज्ञान॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥226॥
ॐ ह्रीं श्री **विजराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजरन' हो तुम जीर्ण न होते, रहते तीनों काल समान।
परमानन्द सुखों में रत हो, पाये वीतराग विज्ञान॥

तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥227॥

ॐ ह्रीं श्री **अजरते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विराग' तुम राग रहित हो, नहीं राग का नाम निशान।
वीतराग विज्ञानी होकर, बने ज्ञान के कोष महान॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥228॥

ॐ ह्रीं श्री **विरागाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विरत' आप हो जग भोगों से, योगी बनकर कीन्हा ध्यान।
वीतरागता धारण करके, बने आप अर्हत् भगवान॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥229॥

ॐ ह्रीं श्री **विरताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'असंग' परिग्रह के त्यागी, बने आप अविकारी संत।
निज स्वभाव में लीन हुए तब, ज्ञानी बने आप अरहंत॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥230॥

ॐ ह्रीं श्री **असंगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'विविक्त' विषयों के त्यागी, निज स्वभाव को पाया है।
कर्म श्रृंखला नाश प्रभु ने, केवल ज्ञान जगाया है॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥231॥

ॐ ह्रीं श्री **विविक्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'वीतमत्सर' कहते हैं, जग में जो हैं ज्ञानी जीव।
भक्ति भाव से अर्चा करके, पुण्य कमाते भव्य अतीव॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥232॥

ॐ ह्रीं श्री **वीतमत्सराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विनेयजनताबन्धु' तुम, करते हो जग का कल्याण।
मोक्ष मार्ग की शिक्षा देकर, कर देते हो उनका त्राण॥
तव नाममंत्र की माला ही, भव रोग नशाने वाली है।
तीनों लोकों में जिन भक्ति, होती कुछ अजब निराली है॥233॥

ॐ ह्रीं श्री **विनेयजनताबंधवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

'विलीनाशेषकल्मष' प्रभु जी कहे गये, कर्म लगे थे सभी वह आपने क्षये।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥234॥

ॐ ह्रीं श्री **विलीनाशेषकल्मषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करके 'वियोग' कर्म का स्वतंत्र हो गये, संदेश इस जगत को तुमने दिए नए।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥235॥

ॐ ह्रीं श्री **वियोगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों से हीन हो गये हैं 'योगविद' सभी, शुभ योग नहीं धार सके नाथ हम कभी।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥236॥

ॐ ह्रीं श्री **योगविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ज्ञान पूर्ण हो 'विद्वान' कहाए, अतएव ज्ञान पाने तव द्वार हम आए।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥237॥

ॐ ह्रीं श्री **विदुषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहते 'विधाता' आपको प्राणी सभी यहाँ, हो धर्म सृष्टि के कर्ता लोक में महाँ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥238॥

ॐ ह्रीं श्री **विधात्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग को विधि बताई है श्रेष्ठतम अहा, अतएव 'सुविधि' नाम प्रभु आपका रहा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥239॥

ॐ ह्रीं श्री **सुविधये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया है ज्ञान केवल तुमने 'सुधी' यहाँ, अतएव चरण आपके यह पूजता जहाँ।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥240॥

ॐ ह्रीं श्री **सुधिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'क्षांतिभाक्' जग में सबसे महान् हो, प्रभु शांत रूप क्षांति के तुम निधान हो।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥241॥
ॐ ह्रीं श्री **क्षांतिभाजे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ 'पृथ्वीमूर्ति' तुमको कहा गया, तुम लोकवर्ती जीवों पर धारते दया।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥242॥
ॐ ह्रीं श्री **पृथ्वीमूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'शांतिभाक्' ! तुमने संदेश जो दिया, जीवों ने मार्ग पावन उससे ग्रहण किया।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥243॥
ॐ ह्रीं श्री **शांतिभाजे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सलिलात्मक' प्रभु जी शुभ नाम पाए हैं, जल के समान शीतल प्रभु जी कहाए हैं।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥244॥
ॐ ह्रीं श्री **सलिलात्मकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'वायुमूर्ति' ! तुम तो वायु समान हो, भक्तों के आप जग में जीवन्त प्राण हो।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥245॥
ॐ ह्रीं श्री **वायुमूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ ! 'असंगात्मा' न संग कुछ रहा, अतएव असंगात्मा शुभ नाम तव रहा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥246॥
ॐ ह्रीं श्री **असंगात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'वह्निमूर्ति' अग्नि सम आप कहाए, हे नाथ ! कर्म ईंधन तुम पूर्ण जलाए।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥247॥
ॐ ह्रीं श्री **वह्निमूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुमको 'अधर्मधक्' प्रभु इस लोक में कहा, कीन्हा अधर्म तुमने सब भस्म प्रभु अहा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥248॥
ॐ ह्रीं श्री **अधर्मदहे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुमको 'सुयज्वा' कहते हैं लोक में सभी, कर्मों का बन्ध होगा तुमको नहीं कभी।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥249॥
ॐ ह्रीं श्री **सुयज्वने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको प्रभुजी कहते 'यजमानात्मा', रहते हो लीन निज में जिन देव महात्मा।
तव नाम मंत्र का प्रभु शुभ जाप हम करें, हम कर्म श्रृंखला प्रभुजी शीघ्र परि हरें॥250॥
ॐ ह्रीं श्री **यजमानात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द)

'सुत्वा' आप कहाते हो, निजानन्द रस पाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥251॥
ॐ ह्रीं श्री **सुत्वने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुत्रामपूजित' आप कहे, शत इन्द्रों से पूज्य रहे।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥252॥
ॐ ह्रीं श्री **सुत्रामपूजिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'ऋत्विक्' तुम कहलाते हो, जग को मार्ग दिखाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥253॥
ॐ ह्रीं श्री **ऋत्विजे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'यज्ञपति' तवनाम अहा, सारे जग में पूज्य रहा।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥254॥
ॐ ह्रीं श्री **यज्ञपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'याज्य' आपको कहते हैं, भक्त शरण में रहते हैं।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥255॥
ॐ ह्रीं श्री **याज्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहलाते 'यज्ञांग' प्रभो ! हो पूजा के हेतु विभो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥256॥
ॐ ह्रीं श्री **यज्ञांगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अमृत' तुम कहलाते हो, सौख्य अनन्त दिलाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥257॥
ॐ ह्रीं श्री **अमृताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'हवी' नाम को पाये हो, सारे अशुभ जलाए हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥258॥
ॐ ह्रीं श्री **हविषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्योममूर्ति' तव नाम अहा, कर्म लेप न लेश रहा।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥259॥
ॐ ह्रीं श्री **व्योममूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अमूर्तात्मा' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥260॥
ॐ ह्रीं श्री **अमूर्तात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'निर्लेप' कहे जग में, आगे बढ़े मोक्ष मग में।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥261॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्लेपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निर्मल' तुम कहलाते हो, तुम ही कर्म नशाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥262॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्मलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अचल' तुम्हे कहते प्राणी, पाए तुम मुक्ति रानी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥263॥
ॐ ह्रीं श्री **अचलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सोममूर्ति' तुम हो स्वामी, हो प्रशान्त जग में नामी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥264॥
ॐ ह्रीं श्री **सोममूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'सुसौम्यात्मा' गाये, सौम्य छवि अतिशय पाये।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥265॥
ॐ ह्रीं श्री **सुसौम्यात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सूर्यमूर्ति' हे प्रभो तुम्हीं, महा तेज मय रहे तुम्हीं।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥266॥
ॐ ह्रीं श्री **सूर्यमूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महाप्रभ' तुम कहलाते हो, तुम प्रभाव दिखलाते हो।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥267॥
ॐ ह्रीं श्री **महाप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मंत्रविद्' हो स्वामी, ज्ञानी हो अन्तर्यामी।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥268॥
ॐ ह्रीं श्री **मंत्रविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्हीं 'मंत्रकृत' हो आले, सभी मंत्र रचने वाले।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥269॥
ॐ ह्रीं श्री **मंत्रकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु तुम 'मंत्री' कहलाए, सभी यंत्र तुमने पाये।
नाम आपका ध्याते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥270॥
ॐ ह्रीं श्री **मंत्रिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'मंत्रमूर्ति' भगवान, कहलाते हो तुम प्रभु।
करूँ विशद गुणगान, सप्ताक्षरी हो मूर्तिमय॥271॥
ॐ ह्रीं श्री **मंत्रमूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'अनन्त' तक नाम, अनुपम पाया आपने।
पद में करूँ प्रणाम, तीन योग से तव चरण॥272॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'स्वतंत्र' जिनराज, कर्म बन्ध से हीन हो।
स्व में करते राज, तंत्र देह को मानकर॥273॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वतंत्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो 'तंत्रकृत' आप, मंत्र-तंत्र कर्त्ता कहे।
करूँ आपका जाप, मुक्ति पाने के लिए॥274॥
ॐ ह्रीं श्री **तंत्रकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'स्वान्त' तुम्हीं हो नाथ, अन्त किए हो कर्म का।
चरण झुकाएँ माथ, तव गुण पाने के लिए॥275॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वान्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कृतान्तान्त' शुभ नाम, पाया है जिनदेव ने।
पद में करें प्रणाम, किए कर्म का अन्त तुम॥276॥
ॐ ह्रीं श्री **कृतान्तान्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कृतान्तकृत' देव, आगम के कर्त्ता तुम्हीं।
वन्दूँ तुम्हें सदैव, शिव सुख पाने के लिए ॥277॥

ॐ ह्रीं श्री **कृतान्तकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृती' पुण्यफल रूप, अनन्त चतुष्टय के धनी।
पाये निज स्वरूप, शिवपुर वासी बन गये ॥278॥

ॐ ह्रीं श्री **कृतिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कृतार्थ' भगवान, सफल करो पुरुषार्थ सब।
करें विशद गुणगान, पुरुषार्थ सिद्धि के लिए ॥279॥

ॐ ह्रीं श्री **कृतार्थाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जिनेन्द्र 'सत्कृत्य', इन्द्र करें सत्कार तव।
सुर नर चक्री भृत्य, बने आपके चरण में ॥280॥

ॐ ह्रीं श्री **सत्कृत्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए आप 'कृतकृत्य', आत्म कार्य सब कर चुके।
सारा लोक अनित्य, जान स्वयं को ध्याए हो ॥281॥

ॐ ह्रीं श्री **कृतकृत्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कृतक्रतू' जिनेश, पूजा करते इन्द्र भी।
पाये सुफल विशेष, प्राणी जो अर्चा करें ॥282॥

ॐ ह्रीं श्री **कृतक्रतवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप हो 'नित्य', सादी आप अनन्त हो।
प्राणी रहे अनित्य, तव पद से जो दूर हैं ॥283॥

ॐ ह्रीं श्री **नित्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मृत्युञ्जय' शुभ नाम, मृत्यु को जीते प्रभो !।
शत्-शत् बार प्रणाम, तव पद पाने के लिए ॥284॥

ॐ ह्रीं श्री **मृत्युंजयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमृत्यु' नाथ, मरण रहित हो जिन प्रभो।
दीजे हमको साथ, हम भी तुम जैसे बनें ॥285॥

ॐ ह्रीं श्री **अमृत्यवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतात्मा' आप, कहलाते त्रय लोक में।
करें आपका जाप, तुम सम बनने के लिए ॥286॥

ॐ ह्रीं श्री **अमृतात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतोद्भव' नाम, पाया जिनवर आपने।
अमृत है शिवधाम, पाना हम भी चाहते ॥287॥

ॐ ह्रीं श्री **अमृतोद्भवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मनिष्ठ' हे देव !, ब्रह्म आप कहलाए हो।
वन्दन करें सदैव, ब्रह्मादि नर नाथ सब ॥288॥

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मनिष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परंब्रह्म' उत्कृष्ट, केवल ज्ञानी बन गये।
रहे सभी को इष्ट, ध्याते हैं अतएव सब ॥289॥

ॐ ह्रीं श्री **परंब्रह्मणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मात्मा' शिव रूप, आतम ज्ञानी एक तुम।
अविचल ज्ञान स्वरूप, सर्व गुणों से पूर्ण हो ॥290॥

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंगप्रयात छन्द)

तुम्हीं 'ब्रह्मसम्भव' कहाये हो स्वामी, करे भक्ति तव जो बने मोक्ष गामी।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥291॥

ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मसंभवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मपति' तुम कहाते हो स्वामी, झुके इन्द्र गणधर चरण आके नामी।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥292॥

ॐ ह्रीं श्री **महाब्रह्मपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! आपको लोग 'ब्रह्मेट्' कहते, सदा आप परं ब्रह्म में लीन रहते।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥293॥

ॐ ह्रीं श्री **ऋत्विजे ब्रह्मेटे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मपदेश्वर' हे मुक्ति के ईश्वर, सभी धन्य होते हैं तव वन्दना कर।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥294॥

ॐ ह्रीं श्री **महाब्रह्मपदेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रसन्न' प्रभु की छवि है निराली, प्राणी को सुख-शांति शुभ देनेवाली।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥295॥
ॐ ह्रीं श्री **सुप्रसन्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'प्रसन्नात्मा' है प्रभो नाम प्यारा, सभी प्राणियों को दिए तुम सहारा।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥296॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रसन्नात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'ज्ञानधर्मदमप्रभु' कहाये हो स्वामी, करें ध्यान तव जो बने मोक्ष गामी।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥297॥
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानधर्मदमप्रभवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'प्रशमात्मा' आपने नाम पाया, प्रशम गुण प्रभु के हृदय में समाया।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥298॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रशमात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'प्रशान्तात्मा' हो जहाँ में निराले, तुम हो प्रशान्ति प्रभु देने वाले।
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥299॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रशान्तात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'पुराणपुरुषोत्तम' जग में कहाये, पुराणों में वर्णन तुम्हारा ही आये॥
प्रभो नाम है तव महा सौख्यकारी, मिले ऋद्धि-सिद्धि बने ज्ञान धारी ॥300॥
ॐ ह्रीं श्री **पुराणपुरुषोत्तमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'महाशोकध्वज' नाम, पाया है प्रभु आपने।
तरु अशोक तल धाम, समवशरण में शोभता॥301॥
ॐ ह्रीं श्री **महाशोकध्वजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रहे शोक से हीन, प्रभु अशोक कहलाए हैं।
निज में रहते लीन, शोक निवारी जिन कहे॥302॥
ॐ ह्रीं श्री **अशोकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'काय' कहलाते आप, महिमा अपरम्पार है।
करें आपका जाप, मुक्ति पाने के लिए॥303॥
ॐ ह्रीं श्री **कायाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्रष्टा' तुम हे नाथ !, सृष्टी के कर्त्ता कहे।
चरण झुकाएँ माथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं यहाँ॥304॥
ॐ ह्रीं श्री **स्रष्ट्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आसन पद्म महान, पाया है प्रभु आपने।
किए जगत कल्याण, अतः 'पदमविष्टर' कहे॥305॥
ॐ ह्रीं श्री **पद्मविष्टराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनवर हे 'पद्मेश', कहलाते हो लोक में।
मुक्ति का संदेश, पाये हैं जग में सभी॥306॥
ॐ ह्रीं श्री **पद्मेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पद्मसंभूति' नाम, आगम में प्रभु का कहा।
बारम्बार प्रणाम, करते हैं हम भाव से॥307॥
ॐ ह्रीं श्री **पद्मसंभूतये** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पद्मनाभि' जिनराज, नाभि पद्म समान तव।
पूर्ण करो सब काज, आप त्रिलोकी नाथ हो॥308॥
ॐ ह्रीं श्री **पद्मनाभये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप 'अनुत्तर' देव, तुम सम कोई भी नहीं।
अक्षय रहे सदैव, गुण गण सारे आप में॥309॥
ॐ ह्रीं श्री **अनुत्तराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पद्मयोनि' शुभ नाम, जिनवर पाया आपने।
योनि पद्म समान, जिससे जन्मे आप हो॥310॥
ॐ ह्रीं श्री **पद्मयोनये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'जगयोनि' हे नाथ !, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
चरण झुकाएँ माथ, उत्पत्ति जग में किए॥311॥
ॐ ह्रीं श्री **जगदयोनये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'इत्य' नाम को पाय, पूज्य हुए संसार में।
सादर शीश झुकाय, हम भी वन्दन कर रहे॥312॥
ॐ ह्रीं श्री **इत्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'स्तुत्य' जिनेश, सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र से।
दिए जगत उपदेश, वीतराग का जो परम॥313॥

ॐ ह्रीं श्री **स्तुत्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तुतिश्वर' हे नाथ !, स्तुति करने आये हम।
चरण झुकाये माथ, हाथ जोड़ तव चरण में॥314॥

ॐ ह्रीं श्री **स्तुतीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तवनार्ह' जिनेन्द्र !, आप स्तवन योग्य हो।
इन्द्र और राजेन्द्र, करते हैं तव वन्दना॥315॥

ॐ ह्रीं श्री **स्तवनार्हाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हृषीकेश' उपदेश, दिया लोक में आपने।
नाशे कर्म अशेष, इन्द्रिय मन को जीतकर॥316॥

ॐ ह्रीं श्री **हृषीकेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ! आप 'जितजेय', मोहबली को जीतकर।
जग में हुए अजेय, सर्व जहाँ में श्रेष्ठतम॥317॥

ॐ ह्रीं श्री **जितजेयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतक्रिय' करने योग्य, कार्य किए संसार के।
छोड़े सर्व अयोग्य, नहीं योग्य थे आपके॥318॥

ॐ ह्रीं श्री **कृतक्रियाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! 'गणाधिप'आप, द्वादश गण के श्रेष्ठतम।
करें नाम का जाप, मुक्ति पाने के लिए॥319॥

ॐ ह्रीं श्री **गणाधिपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक में श्रेष्ठ, 'गणज्येष्ठ' है नाम तव।
पाया नाम यथेष्ठ, गुण गण धारी आपने॥320॥

ॐ ह्रीं श्री **गणज्येष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

हो गणना के योग्य तुम, 'गण्य' आपका नाम।
लाख चौरासी गुण सहित, तव पद करूँ प्रणाम॥321॥

ॐ ह्रीं श्री **गण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्य' आपका नाम शुभ, हो तुम पूर्ण पवित्र।
आप सभी के हो प्रभु, कोई शत्रु न मित्र॥322॥

ॐ ह्रीं श्री **पुण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणाग्रणी' तुमने दिया, शिव पथ का उपदेश।
मुक्ति पथ पर बढ़ चले, धार दिगम्बर भेष॥323॥

ॐ ह्रीं श्री **गणाग्रण्ये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के कोष तुम, अतः 'गुणाकर' नाम।
सार्थक पाया आपने, तव पद करूँ प्रणाम॥324॥

ॐ ह्रीं श्री **गुणाकराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! 'गुणाम्बोधी' कहे, श्रेष्ठ गुणों की खान।
लाख चौरासी आपने, पाये सुगुण महान॥325॥

ॐ ह्रीं श्री **गुणाम्भोधये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गुणाज्ञ' गुणवान तुम, श्रेष्ठ जगत के ईश।
सब दोषों से हीन हो, अतः झुकाएँ शीश॥326॥

ॐ ह्रीं श्री **गुणज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' गुण के धनी, गुण मणि आप विशाल।
तव गुण पाने के लिए, गाते हम जयमाल॥327॥

ॐ ह्रीं श्री **गुणनायकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्वादि गुण आदरी, 'गुणादरी' हे नाथ !।
सत्त्वप्राप्त गुण हों मुझे, चरण झुकाते माथ॥328॥

ॐ ह्रीं श्री **गुणादरिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रज तम आदि विभाव गुण, सर्व नशाए आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' हुए, मुझे करो निष्पाप॥329॥

ॐ ह्रीं श्री **गुणाच्छेदिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक गुण हीन तुम, 'निर्गुण' आप महान।
ज्ञानादि गुण धारते, जग में रहे प्रधान॥330॥

ॐ ह्रीं श्री **निर्गुणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए प्रभु 'पुण्यगी', पावन वाणी धार।
पावन वाणी हो मेरी, नमन अनन्तो बार॥331॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यगिरे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रेष्ठ गुणों को धारकर, पाए 'गुण' प्रभु नाम।
भव्य जीव अतएव सब, करते तुम्हें प्रणाम॥332॥
ॐ ह्रीं श्री **गुणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'शरण्य' तव चरण की, शरण जिसे मिल जाए।
ऋद्धि-सिद्धि सुख प्राप्त कर, निश्चय मुक्ति पाए॥333॥
ॐ ह्रीं श्री **शरण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पुण्यवाक्' प्रभु आपके, जग को करें निहाल।
सुख-शांति आनन्द दे, कर देते खुशहाल॥334॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो पावन इस लोक में, 'पूत' आपका नाम।
पावन हमको भी करो, बारम्बार प्रणाम॥335॥
ॐ ह्रीं श्री **पूताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'वरेण्य' मुक्ति पति, मुक्ति रमा के कंत।
सर्वश्रेष्ठ परमात्मा, किए कर्म का अंत॥336॥
ॐ ह्रीं श्री **वरेण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ ! 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
श्रेष्ठ पुण्य का दान दो, चरण झुकाएँ शीश॥337॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यनायकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप नहीं गणनीय हो, हे 'अगण्य' जिनराज।
हमको भी निज सम करो, आन सम्हारो काज॥338॥
ॐ ह्रीं श्री **अगण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ 'पुण्यधी' आप हो, बुद्धि पुण्य स्वरूप।
मम बुद्धि को शुद्ध कर, प्रकट करो निज रूप॥339॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यधिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' आपका नाम है, श्रेष्ठ गुणों के नाथ।
पूर्ण गुणी हम बन सकें, नाथ निभाओ साथ॥340॥
ॐ ह्रीं श्री **गुण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पाप शाप को नाशकर, हुए 'पुण्यकृत' आप।
नाम जाप कर आपका, हो जाएँ निष्पाप॥341॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यकृत** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ 'पुण्यशासन' तुम्हीं, तुम्हीं पुण्य के कोष।
तुम्हें छोड़ते जीव यह, है भारी अफसोस॥342॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'धर्माराम' यह नाम शुभ, पाए श्री जिनेश।
धर्म से हो आराम सुख, कहते हैं तीर्थेश॥343॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मरामाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मूलोत्तर गुण के धनी, श्री जिनेन्द्र 'गुणग्राम'।
ऋद्धि-सिद्धि श्री प्राप्त जिन, पाये हैं यह नाम॥344॥
ॐ ह्रीं श्री **गुणग्रामाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पुण्य पाप से हीन तव, 'पुण्यापुण्यनिरोध'।
रत्नत्रय से ध्यान कर, स्वयं जगाए बोध॥345॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यापुण्यनिरोधाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'पापापेत' नाम प्रभु पाए, पाप रहित निष्पाप कहाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥346॥
ॐ ह्रीं श्री **पापापेताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप 'विपापात्मा' कहलाए, पाप कर्म सब दूर भगाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥347॥
ॐ ह्रीं श्री **विपापात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्हें 'विपाप्य' कहते प्राणी, है निर्दोष आपकी वाणी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥348॥
ॐ ह्रीं श्री **विपाप्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'वीतकल्मष' कहलाए, कल्मष धो कर शुद्धि पाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥349॥
ॐ ह्रीं श्री **वीत्कल्मषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'निर्द्वंद्व' द्वन्द्व के नाशी, परिग्रह हीन रहे अविनाशी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥350॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्द्वंद्वाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निर्मद' मद को तुमने नाशा, अतिशय केवलज्ञान प्रकाशा।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥351॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्मदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शांत' किए उपशांत कषाएँ, जिनकी महिमा हम भी गाएँ।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥352॥
ॐ ह्रीं श्री **शांताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'निर्मोह' मोह के त्यागी, सिद्ध सनातन वसु गुणभागी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥353॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्मोहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निरुपद्रव' उपद्रव के नाशी, सिद्ध श्री जिन शिवपुर वासी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥354॥
ॐ ह्रीं श्री **निरुपद्रवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निर्निमेष' एकटक ही लखते, नहीं कभी भी पलक झपकते।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥355॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्निमेषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निराहार' आहार न करते, क्षुधा व्याधि औरों की हरते।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥356॥
ॐ ह्रीं श्री **निराहाराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
क्रिया रहित 'निष्क्रिय' कहलाए, क्रियावान को मुक्ति दिलाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥357॥
ॐ ह्रीं श्री **निष्क्रियाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निरुपल्लव' जी विघ्न नशाए, तव अर्चा को हम भी आए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥358॥
ॐ ह्रीं श्री **निरुपप्लवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निष्कलंक' अकलंक कहे हैं, कोई कलंक भी नहीं रहे हैं।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥359॥
ॐ ह्रीं श्री **निष्कलंकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो ! 'निरस्तैना' आप कहाए, तव पद वन्दन करने आए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥360॥
ॐ ह्रीं श्री **निरस्तैनसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निर्धूतागस्' नाम आपका, रहा नाम न कोई पाप का।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥361॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्धूतागसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आस्रवहीन 'निरास्रव' स्वामी, आप हुए प्रभु अन्तर्यामी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥362॥
ॐ ह्रीं श्री **निरास्रवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'विशाल' ! तव अन्त नहीं है, तुम सम कोई भगवंत नहीं है।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥363॥
ॐ ह्रीं श्री **विशालाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'विपुलज्योति' हे जिनवर ! मेरे, शीश झुकाएँ पद में तेरे।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥364॥
ॐ ह्रीं श्री **विपुलज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अतुल' आपकी तुलना सोई, कर न सके लोक में कोई।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥365॥
ॐ ह्रीं श्री **अतुलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'अचिन्त्यवैभव' कहलाए, बृहस्पति न गुण गा पाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥366॥
ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यवैभवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सुसंवृत्ता' स्वामी, संवर किए पूर्णतः नामी।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥367॥
ॐ ह्रीं श्री **सुसंवृत्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुगुप्तात्मा' आप कहाए, कर्मारि छू भी न पाए।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥368॥
ॐ ह्रीं श्री **सुगुप्तात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुभृत्' नाम आपका प्यारा, जाना लोकालोक है सारा।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥369॥
ॐ ह्रीं श्री **सुबुधे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुनयतत्त्ववित्' नय के ज्ञाता, आप रहे त्रिभुवन के त्राता।
नाम जाप में ध्यान लगाएँ, ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाएँ॥370॥
ॐ ह्रीं श्री **सुनयतत्त्वविते** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ी छंद)

प्रभु 'एकविद्य' हैं ज्ञान युक्त, हैं क्षद्म ज्ञान से पूर्णमुक्त।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥371॥
ॐ ह्रीं श्री **एकविद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'महाविद्य' जग में महान, पाए विधाएँ विशद ज्ञान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥372॥
ॐ ह्रीं श्री **महाविद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'मुनि' आपने मौन धार, जीवों को भव से किया पार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥373॥
ॐ ह्रीं श्री **मुनये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'परिवृढ' तुममें गुण अनेक, पाकर दिखलाया मार्ग नेक।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥374॥
ॐ ह्रीं श्री **परिवृढाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'पति' ! आप हो जग प्रधान, स्वामी जग में हो ज्ञानवान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥375॥
ॐ ह्रीं श्री **पत्ये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धीश' ! आपकी धी महान, सारे जग में पायी प्रधान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥376॥
ॐ ह्रीं श्री **धीशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'विद्यानिधि' हो तुम अनूप, तव चरणों सुर-नर झुकें भूप।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥377॥
ॐ ह्रीं श्री **विद्यानिधये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'साक्षी' ! कर साक्षात्कार, तव पद में मेरा नमस्कार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥378॥
ॐ ह्रीं श्री **साक्षिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे प्रभु ! 'विनेता' तुम विनीत, जग की सब जाने आप रीत।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥379॥
ॐ ह्रीं श्री **विनेत्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'विहतान्तक' कर कर्म अन्त, तुम सिद्ध बने पा गुणानन्त।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥380॥
ॐ ह्रीं श्री **विहितान्तकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'पिता' ! आप रक्षक जिनेश, तुम जनक कहे जग में विशेष।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥381॥
ॐ ह्रीं श्री **पित्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु कहे 'पितामह' जग ज्येष्ठ, तुम सम न त्राता कोई श्रेष्ठ।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥382॥
ॐ ह्रीं श्री **पितामहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अब भवदधि 'पाता' करो पार, हम वन्दन करते बार-बार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥383॥
ॐ ह्रीं श्री **पात्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आतम कीन्ही तुमने 'पवित्र', तुम रहे जगत के श्रेष्ठ मित्र।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥384॥
ॐ ह्रीं श्री **पवित्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पावन' ! तव महिमा अपार, न पाये जिसका कोई पार।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥385॥
ॐ ह्रीं श्री **पावनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गति' आपकी गति महान्, पञ्चम गति पाई जग प्रधान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥386॥
ॐ ह्रीं श्री **गतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'त्राता' ! जग रक्षक जिनेश, आश्रय दाता हो तुम विशेष।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥387॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रात्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वैद्य ! 'भिषग्वर' तुम प्रधान, सब रोग विनाशक हो महान।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥388॥
ॐ ह्रीं श्री **भिषग्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्य' ! आप हैं महति मान, प्रभु मुक्ति रमा के वर महान्।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥389॥
ॐ ह्रीं श्री **वर्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु ! आपका 'वरद' हस्त, कर देता है जीवन प्रशस्त।
सारे दुःखहर्त्ता रहे आप, प्रभु नाम जाप से कटें पाप॥390॥
ॐ ह्रीं श्री **वरदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चामर छन्द)

'परम' नाम आपका, जीव सभी जानते, श्रेष्ठतम आपको, लोग सभी मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥391॥
ॐ ह्रीं श्री **परमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनेन्द्र देव ! तुम, 'पुमान' हो पवित्र हो, सर्वप्राणियों के आप, इष्ट श्रेष्ठ मित्र हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥392॥
ॐ ह्रीं श्री **पुंसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'कवि' आप हो, ज्ञान के सनाथ हो, भव्य प्राणियों के लिए, आप साथ-साथ हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥393॥
ॐ ह्रीं श्री **कवयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणपुरुष' आपको, लोग सभी जानते, आदियुक्त हो अनन्त, सत्य यही मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥394॥
ॐ ह्रीं श्री **पुराणपुरुषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्षीयान्' नाम आप, श्रेष्ठ प्रभु पाए हो, वर्षों की गणना में, आप न समाए हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥395॥
ॐ ह्रीं श्री **वर्षीयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऋषभ' देव आपका, नाम जग प्रसिद्ध है, देव इन्द्र आदि से, पूज्य हो ये सिद्ध है।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥396॥
ॐ ह्रीं श्री **ऋषभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' देव आपकी, लोक करें वन्दना, ध्यान किए आप का, होय कभी बन्ध ना।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥397॥
ॐ ह्रीं श्री **पुरुवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रतिष्ठाप्रभवादि' सब, लोक तुम्हें जानते, प्रतिष्ठा के योग्य तुम, सर्व यही मानते।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥398॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रतिष्ठाप्रभवाय**[1] नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (1) प्रतिष्ठाप्रसव भी नाम आता है।

सर्व कार्य सिद्धि के, आप श्रेष्ठ 'हेतु' हो, विशद जिन धर्म के, आप प्रभु केतु हो।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्यकार, मंत्र रहा मंगलम्॥399॥
ॐ ह्रीं श्री **हेतवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनैकपितामह', आपका शुभ नाम है, शीर्ष पर इस लोक के, प्रभु शुभ धाम है।
कर्मनाश हेतु नाथ, नाम कहा मंगलम्, कर्मश्रेष्ठ सौख्य कार, मंत्र रहा मंगलम्॥400॥
ॐ ह्रीं श्री **भुवनैकपितामहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

'श्रीवृक्षलक्षणा' भाई, जिन नाम कहा सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥401॥
ॐ ह्रीं श्री **वृक्षलक्षणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनप्रभु 'श्लक्ष्ण' कहलाए, जो शिव रमणी को पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥402॥
ॐ ह्रीं श्री **श्लक्ष्णाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्षण्य' कहे जिन स्वामी, सब लक्षण पाए नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥403॥
ॐ ह्रीं श्री **लक्षण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभलक्षण' प्रभु जी पाए, जो सहस्राष्ट कहलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥404॥
ॐ ह्रीं श्री **शुभलक्षणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'निरक्ष' कहलाए, प्रभु हीन इन्द्रिय गाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥405॥
ॐ ह्रीं श्री **निरक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुण्डरीकाक्ष' कहाए, नाशाग्र दृष्टि शुभ पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥406॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्डरीकाक्षाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कल' कहलाए स्वामी, जग रक्षक अन्तर्यामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥407॥
ॐ ह्रीं श्री **पुष्कलाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'पुष्करेक्षण' हैं भाई, शुभ गमन कमल सुखदायी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥408॥
ॐ ह्रीं श्री **पुष्करेक्षणाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'सिद्धिदा' स्वामी, सिद्धि दायक जग नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥409॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धिदाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सिद्धसंकल्प' कहाए, कर पूर्ण सभी दिखलाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥410॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसंकल्पाय** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु को 'सिद्धात्मा' जानो, सब सिद्धि पाए मानो।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥411॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सिद्धसाधन' कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥412॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसाधनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धबोध्य' जगनामी, बोधी तुम पाये स्वामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥413॥
ॐ ह्रीं श्री **बुद्धबोध्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाबोधि' कहलाये, जो श्रेष्ठ सिद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥414॥
ॐ ह्रीं श्री **महाबोधये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'वर्धमान' जिन स्वामी, गुण पाये अतिशय नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥415॥
ॐ ह्रीं श्री **वर्धमानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महर्द्धिक' कहलाए, जो श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाये।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥416॥
ॐ ह्रीं श्री **महर्द्धिकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदांग' नाम अति प्यारा, है सार्थक नाम तुम्हारा।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥417॥
ॐ ह्रीं श्री **वेदांगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'वेदविद्' स्वामी, ज्ञानी वेदों के नामी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥418॥
ॐ ह्रीं श्री **वेदविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'वेद' स्वयं संवेदी, आठों कर्मों के भेदी।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥419॥
ॐ ह्रीं श्री **वेद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'जातरूप' कहलाए, शुभ भेष दिगम्बर पाए।
प्रभु नाम जपें सुख पावें, फिर शिव नगरी को जावें॥420॥
ॐ ह्रीं श्री **जातरूपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्रग्विणी छन्द)

प्रभु 'विदाम्बर' कहे पूर्ण ज्ञानी अरे !, भव्य जीव को सदा पूर्ण ज्ञानी करे।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥421॥
ॐ ह्रीं श्री **विदांवराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'वेदवेद्य' कहलाए हैं ज्ञानी महा, नहीं जानने योग्य तुम्हें कुछ भी रहा।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥422॥
ॐ ह्रीं श्री **वेदवेद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वसंवेद्य' नाम प्राप्त कीन्हें प्रभो !, स्व का अनुभव प्राप्त किए हैं जिन विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥423॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वसंवेद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विवेद' तुम वेद रहित जग में कहे, तीन लोक में पूज्य आप अतिशय रहे॥
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥424॥
ॐ ह्रीं श्री **विवेदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदताम्बर' कहलाए जग में जिन विभो !, सब भाषामय दिव्य ध्वनि देते प्रभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥425॥
ॐ ह्रीं श्री **वदताम्बराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनादिनिधन' रहे संसार में, भवि जीवों के लिए सेतु उपकार में।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥426॥
ॐ ह्रीं श्री **अनादिनिधनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्त' आपको कहते हैं प्राणी सभी, ज्ञान आपका लुप्त नहीं होवे कभी।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥427॥
ॐ ह्रीं श्री **व्यक्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्तवाक्' कहलाए हैं जिनवर प्रभो !, वचन आपके ग्रहण करें प्राणी विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥428॥
ॐ ह्रीं श्री **व्यक्तवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'व्यक्तशासन' प्रभो ! जग में अहा, शासन प्रभु का व्यक्त लोक में शुभ रहा।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥429॥
ॐ ह्रीं श्री **व्यक्तशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र 'युगादिकृत्' कहलाए हैं, षट् कर्मों की शिक्षा जो बतलाए हैं।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥430॥
ॐ ह्रीं श्री **युगादिकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगाधार' प्रभु को कहता है जग सभी, भूल नहीं पाते प्रभु को कोई कभी।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥431॥
ॐ ह्रीं श्री **युगाधाराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादि' जग के कर्त्ता जानिए, त्याग किए आरम्भ जगत् का मानिए॥
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥432॥
ॐ ह्रीं श्री **युगादये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' जिनवर तुम ही कहलाए हो, कर्म भूमि का आदि कर शिव पाए हो।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥433॥
ॐ ह्रीं श्री **जगदादिजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अतीन्द्र' तुम रहित इन्द्रियों से रहे, ज्ञानेन्द्रिय के धारी इस युग में कहे॥
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥434॥
ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'अतीन्द्रिय' कहते हैं ज्ञानी सभी, इन्द्रिय सुख की चाह नहीं कीन्हीं कभी।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥435॥
ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्रियाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' आप हो श्रेष्ठ बुद्धि धारी प्रभो !, नहीं आप सम कोई श्रेष्ठ जग में विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥436॥
ॐ ह्रीं श्री **धीन्द्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महेन्द्र' तुम पूज्य हुए शत इन्द्र से, सुर नर पशु आदि जग के अहमिन्द्र से।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥437॥
ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अतीन्द्रियार्थदृक्' कहलाए जिनवर अहा, सर्वेन्द्रिय से रहित ज्ञान जिनका रहा॥
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥438॥
ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्रियार्थदृशे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अनिन्द्रिय' हीन इन्द्रियों से प्रभो !, इन्द्रियातीत सौख्य प्राप्त कीन्हें विभो !
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥439॥
ॐ ह्रीं श्री **अनिन्द्रियाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अहमिन्द्रार्च्य' आप इन्द्रों से पूज्य हैं, ज्ञान हीन संसारी सर्व अपूज्य हैं।
नाम जाप जो जीव सदा करता रहा, सुख-शांति सौभाग्य सदा पाता अहा ॥440॥
ॐ ह्रीं श्री **अहमिन्द्राच्यार्य** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'महेन्द्रमहित' तव नाम, जैनागम में कहा है।
करते विशद प्रणाम, इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सब ॥441॥
ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्रमहिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
त्रिभुवन पूज्य 'महान्', आप रहे संसार में।
करें विशद गुणगान, प्रभु गुण पाने के लिए ॥442॥
ॐ ह्रीं श्री **महते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'उद्भव' जगत् प्रसिद्ध, नाम प्राप्त कीन्हें प्रभो !
सार्थक है जो सिद्ध, उद्भव कीन्हें धर्म का ॥443॥
ॐ ह्रीं श्री **उद्भवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कारण' आप महान्, धर्म सौख्य सौभाग्य के।
अतिशय रहे प्रधान, कर्म नाश के हेतु तुम ॥444॥
ॐ ह्रीं श्री **कारणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कर्त्ता' तुम तीर्थेश, असि मसि आदि कर्म के।
धार दिगम्बर भेष, मोक्ष मार्ग पर बढ़ चले ॥445॥
ॐ ह्रीं श्री **कर्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पारग' पाए नाम, पार हुए संसार से।
पद में करें प्रणाम, पाने भव से पार हम ॥446॥
ॐ ह्रीं श्री **पारगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तारण तरण जहाज, 'भवतारक' कहलाए हो।
मोक्ष महल का ताज, पाया है प्रभु आपने ॥447॥
ॐ ह्रीं श्री भवतारकाय नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अग्राह्य' तव नाम, अवगाहन अति कठिन है।
पाए तुम शिवधाम, गुण अवगाहन प्राप्त कर ॥448॥
ॐ ह्रीं श्री **अग्राह्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
योगी जन के गम्य, 'गहन' आप अतिशय रहे।
है स्वरूप तव रम्य, सर्व लोक में श्रेष्ठतम ॥449॥
ॐ ह्रीं श्री **गहनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'गुह्य' गुप्त हो आप, पार नहीं पावे कोई।
करें नाम का जाप, योग धारने के लिए ॥450॥
ॐ ह्रीं श्री **गुह्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जग में हुए महान, है 'परार्ध्य' तव नाम शुभ।
कैसे करें बखान, महिमा तुमरी अगम है ॥451॥
ॐ ह्रीं श्री **परार्ध्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मुक्ति श्री के नाथ, 'परमेश्वर' कहलाए हैं।
चरण झुकाएँ माथ, तव पद पाने के लिए ॥452॥
ॐ ह्रीं श्री **परमेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञानी आप अनन्त, 'अनन्तर्द्धि' कहलाए हो।
नहीं है जिसका अंत, सर्व ऋद्धियों से सहित ॥453॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्तर्द्धये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अमेयर्द्धि' भगवान्, मर्यादा जिसकी नहीं।
पाए ऋद्धि महान्, जो गणना से पार हैं ॥454॥
ॐ ह्रीं श्री **अमेयर्द्धये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अचिन्त्यर्द्धि' जिनराज, तुम अचिन्त्य संसार में।
पाए सौख्य समाज, सर्व ऋद्धियाँ प्राप्त कर ॥455॥
ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यदर्धये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'समग्रधी' नाथ !, ज्ञाता ज्ञेय प्रमाण के।
चरण झुकाएँ माथ, अपने ज्ञान प्रणाम शुभ ॥456॥
ॐ ह्रीं श्री **समग्रधिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राग्रय' हे जिनदेव !, आप लोक में प्रथम हो।
करें चरण की सेव, मुक्ति पाने कर्म से ॥457॥

ॐ ह्रीं श्री **प्राग्रयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'प्राग्रहर' आप, पूज्य सुमंगल कार्य में।
नाशक सारे पाप, परम पूज्य परमात्मा ॥458॥

ॐ ह्रीं श्री **प्राग्रहराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अभ्यग्र' जिनेन्द्र, सम्मुख हो लोकाग्र के।
पूजें चरण शतेन्द्र, मन वच तन से आपके ॥459॥

ॐ ह्रीं श्री **अभ्यग्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'प्रत्यग्र' महान्, आप विलक्षण जगत से।
करें विशद गुणगान, भाव सहित तव पाद में ॥460॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रत्यग्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

'अग्रय' तुम कहलाए स्वामी, अग्रणीय हो अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥461॥

ॐ ह्रीं श्री **अग्रयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रिम' तुमको कहते प्राणी, रहो अग्र जग के कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥462॥

ॐ ह्रीं श्री **अग्रिमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी तुम 'अग्रज' कहलाए, ज्येष्ठ लोक में बनकर आए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥463॥

ॐ ह्रीं श्री **अग्रजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' तुमने तप धारा, तप में जीवन बीता सारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥464॥

ॐ ह्रीं श्री **महातपसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातेज' प्रभु आप कहाए, आभा शुभ तेजस्वी पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥465॥

ॐ ह्रीं श्री **महातेजसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोदर्क' है नाम निराला, भव से मुक्ति देने वाला।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥466॥

ॐ ह्रीं श्री **महोदर्काय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्यदान 'महोदय' जानो, जगतपति प्रभु को पहिचानो।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥467॥

ॐ ह्रीं श्री **महोदयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायशा' कहलाए स्वामी, यशोपूत हैं जग में नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥468॥

ॐ ह्रीं श्री **महायशसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधाम' है नाम तुम्हारा, उसको पाना लक्ष्य हमारा।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥469॥

ॐ ह्रीं श्री **महाधाम्ने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महासत्त्व' तुमको कहते हैं, शाश्वत आप सदा रहते हैं।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥470॥

ॐ ह्रीं श्री **महासत्त्वाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृति' जिनवर कहलाए, जग जीवों को धैर्य दिलाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥471॥

ॐ ह्रीं श्री **महाधृतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधैर्य' धारी जिन स्वामी, आकुलता त्यागे जग नामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥472॥

ॐ ह्रीं श्री **महाधैर्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावीर्य' धारी हैं भारी, फिर भी कहलाये अविकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥473॥

ॐ ह्रीं श्री **महावीर्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'महासम्पत' कहलाए, समवशरण में शोभा पाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा ॥474॥

ॐ ह्रीं श्री **महासंपदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'महाबल' कहते प्राणी, वीर्यवान हो जग कल्याणी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥475॥
ॐ ह्रीं श्री **महाबलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'महाशक्ति' के धारी, त्रिभुवन पति हे करुणाकारी !
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥476॥
ॐ ह्रीं श्री **महाशक्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्योति' तुमने शुभ पाई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥477॥
ॐ ह्रीं श्री **महाज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूति' कहलाए स्वामी, विभव रूप हे अन्तर्यामी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥478॥
ॐ ह्रीं श्री **महाभूतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाद्युति' हैं धुति के धारी, कांतिमान प्रभु अतिशयकारी।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥479॥
ॐ ह्रीं श्री **महाद्युतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामति' महाबुद्धि पाए, केवलज्ञानी आप कहाए।
नाम आपका अतिशय प्यारा, भवसागर से तारणहारा॥480॥
ॐ ह्रीं श्री **महामतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

प्रभु तुम 'महानीति' जग सिद्ध, नीति के धारी जगत् प्रसिद्ध।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥481॥
ॐ ह्रीं श्री **महानीतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'महाक्षांतिवान' विशेष, क्षमा के धारी आप जिनेश।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥482॥
ॐ ह्रीं श्री **महाक्षान्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादय' कहलाए जिनराज, धर्म का जिन के सिर पर ताज।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥483॥
ॐ ह्रीं श्री **महादयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा है 'महाप्रज्ञ' शुभ नाम, करें हम उनको शतत् प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥484॥
ॐ ह्रीं श्री **महाप्रज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तव 'महाभाग' है नाम, तुम्हें हम करते विशद प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥485॥
ॐ ह्रीं श्री **महाभागाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी पाते अति 'आनन्द', कहाते अतः प्रभु 'महानन्द'।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥486॥
ॐ ह्रीं श्री **महानंदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवि' कहलाते हैं आप, नशाए तुमने सारे पाप।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥487॥
ॐ ह्रीं श्री **महाकवये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामह' तुमको कहते लोग, धरा है तुमने अतिशय योग।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥488॥
ॐ ह्रीं श्री **महामहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाकीर्ति' धारी आप्त, सुयश है सारे जग में व्याप्त।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥489॥
ॐ ह्रीं श्री **महाकीर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांति' तव श्रेष्ठ अपार, छवि है अतिशय अपरम्पार।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥490॥
ॐ ह्रीं श्री **महाकान्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावपु' कहलाए तुम नाथ !, निभाओ मोक्ष महल में साथ।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥491॥
ॐ ह्रीं श्री **महावपुषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का 'महादान' है नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान॥492॥
ॐ ह्रीं श्री **महादानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाते 'महाज्ञान' हो आप, नशाए तुमने सारे पाप।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥493॥
ॐ ह्रीं श्री **महाज्ञानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु जी कहलाए 'महायोग', त्याग कीन्हें हैं सारे भोग।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥494॥
ॐ ह्रीं श्री **महायोगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महागुण' कहलाते जगदीश, गुणों के आप रहे हैं ईश।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥495॥
ॐ ह्रीं श्री **महागुणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महामहपति' है प्रभु का नाम, इन्द्र करते हैं चरण प्रणाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥496॥
ॐ ह्रीं श्री **महामहपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'प्राप्तमहाकल्याणपञ्चक', तुम्ही हो इस जग में व्यापक।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥496॥
ॐ ह्रीं श्री **प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महाप्रभु' कहलाते जिनराज, चरण में वन्दन करे समाज।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥498॥
ॐ ह्रीं श्री **महाप्रभवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो 'महाप्रातिहार्याधीश', पूजते सुर नर जिन्हें ऋशीष।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥499॥
ॐ ह्रीं श्री **महाप्रातिहार्याधीशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महेश्वर' पाया प्रभु ने नाम, बनाए शिवपुर में जो धाम।
प्रभु तुम पाए नाम महान, करें हम उनका शुभ गुणगान ॥500॥
ॐ ह्रीं श्री **महेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छंद)

'महामुनि' प्रभु जी कहलाए, मुनियों में जो श्रेष्ठ कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥501॥
ॐ ह्रीं श्री **महामुनये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

नाम प्रभु 'महामौनी' पाए, दीक्षा लेकर निज को ध्याए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥502॥
ॐ ह्रीं श्री **महामौनिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहे 'महाध्यानी' जिन स्वामी, ध्यान किए जिन अन्तर्यामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥503॥
ॐ ह्रीं श्री **महाध्यानिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो 'महादम' आप कहाए, जित इन्द्रिय हो संयम पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥504॥
ॐ ह्रीं श्री **महादमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाम 'महाक्षम' प्रभु जी पाए, क्षमा धर्म के ईश कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥505॥
ॐ ह्रीं श्री **महाक्षमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्टादश शीलों के स्वामी, 'महाशील' हो अन्तर्यामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥506॥
ॐ ह्रीं श्री **महाशीलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महायज्ञ' है नाम तुम्हारा, कर्मेंधन को तुमने जारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥507॥
ॐ ह्रीं श्री **महायज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'महामख' भी कहलाए, लोक पूज्यता अतिशय पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥508॥
ॐ ह्रीं श्री **महामखाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहे 'महाव्रतपति' हे स्वामी !, महाव्रतों को धारे नामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥509॥
ॐ ह्रीं श्री **महाव्रतपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'मह्य' आप जगपूज्य कहाए, गणधर साधू भी गुण गाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥510॥
ॐ ह्रीं श्री **मह्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांतिधर' आप कहाए, अतिशय कांति को प्रभु पाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥511॥
ॐ ह्रीं श्री **महाकांतिधराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिप' आप कहलाए भाई, तीन लोक की प्रभुता पाई।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥512॥
ॐ ह्रीं श्री **अधिपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रीमय' मैत्री धारें, जीवों को भव पार उतारें।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥513॥
ॐ ह्रीं श्री **महामैत्रीमयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अमेय' तुमको हम ध्याते, अपरिमेय गुण तुमरे गाते।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥514॥
ॐ ह्रीं श्री **अमेयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' कहलाए स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥515॥
ॐ ह्रीं श्री **महोपायाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हें 'महोमय' कहते प्राणी, वाणी है प्रभु तव कल्याणी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥516॥
ॐ ह्रीं श्री **महोमयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' आप कहाए, करुणाकर इस जग में गाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥517॥
ॐ ह्रीं श्री **महाकारुणिकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंता' आप कहे जिन स्वामी, ज्ञाता हो प्रभु अन्तर्यामी।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥518॥
ॐ ह्रीं श्री **मंत्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामंत्र' है नाम तुम्हारा, लगता अतिशय प्यारा-प्यारा।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥519॥
ॐ ह्रीं श्री **महामंत्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महायति' प्रभु जी कहलाए, सब यतियों में श्रेष्ठ कहाए।
नाम मंत्र है मंगलकारी, कहा जगत में संकटहारी ॥520॥
ॐ ह्रीं श्री **महायतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तोटक छन्द)

जिनदेव 'महानाद' आप कहे, सागर जैसे गंभीर रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥521॥
ॐ ह्रीं श्री **महानादाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महाघोष' कहलाए हैं, जो दिव्य ध्वनि सुनाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥522॥
ॐ ह्रीं श्री **महाघोषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज 'महेज्य' कहाये हैं, महती पूजा को पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥523॥
ॐ ह्रीं श्री **महेज्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महसांपति' कहलाए हैं, जग में अतिशय दिखलाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥524॥
ॐ ह्रीं श्री **महसांपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महाध्वरधर' स्वामी, हैं ज्ञानी मुक्ति पथगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥525॥
ॐ ह्रीं श्री **महाध्वरधराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धुर्य कहे महिमाधारी, अनगार बने हैं अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥526॥
ॐ ह्रीं श्री **धुर्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महौदार्य' प्रभु कहलाए हैं, अतिशय उदारता पाए हैं।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥527॥
ॐ ह्रीं श्री **महौदार्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'महिष्ठ' भी कहलाए, जो आगम जग को बतलाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा ॥528॥
ॐ ह्रीं श्री **महिष्ठवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'महात्मा' जिन स्वामी, हर जीव रहा है अनुगामी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥529॥
ॐ ह्रीं श्री **महात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'महसांधाम' प्रभाकारी, तव कांति रही जग में न्यारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥530॥
ॐ ह्रीं श्री **महसांधाम्ने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनदेव 'महर्षि' आप कहे, ऋषियों में अतिशय श्रेष्ठ रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥531॥
ॐ ह्रीं श्री **महर्षये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'महितोदय' कहलाए हो, तीर्थंकर पदवी पाए हो।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥532॥
ॐ ह्रीं श्री **महितोदयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भो 'महाक्लेशअंकुश' धारी, उपसर्ग परीषह जयकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥533॥
ॐ ह्रीं श्री **महाक्लेशांकुशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'शूर' आप क्षय कर्म किए, तब जगे धर्म के दीप हिए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥534॥
ॐ ह्रीं श्री **शूराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'महाभूतपति' आप कहे, गणधर भी प्रभु तव भक्त रहे।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥535॥
ॐ ह्रीं श्री **महाभूतपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'गुरु' जगत् के कहलाए, न पार कोई महिमा पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥536॥
ॐ ह्रीं श्री **गुरवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'महापराक्रम' के धारी, हैं मंगलमय मंगलकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥537॥
ॐ ह्रीं श्री **महापराक्रमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने 'अनन्त' गुण प्रगटाए, न महिमा कोई कह पाए।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥538॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'महाक्रोधरिपु' के हन्ता, कहलाए अतिशय भगवन्ता।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥539॥
ॐ ह्रीं श्री **महाक्रोधरिपवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'वशी' आप अतिशयकारी, वश किए स्वयं को अविकारी।
तव नाम मंत्र सुखदाय रहा, जो सारे जग में श्रेष्ठ कहा॥540॥
ॐ ह्रीं श्री **वशिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'महाभवाब्धिसंतापि', नाम आपका श्रेष्ठतम।
चारों गति निवारि, मोक्ष महल में जा बसे॥541॥
ॐ ह्रीं श्री **महाभवाब्धिसंतापिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मोहारि को नाश, 'महामोहाद्रिसूदन' बने।
कीन्हे कर्म विनाश, परम सिद्ध पद पा लिए॥542॥
ॐ ह्रीं श्री **महामोहाद्रिसूदनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महागुणाकर' आप, रत्नत्रय के कोष हो।
करें नाम का जाप, धर्म निधि हमको मिले॥543॥
ॐ ह्रीं श्री **महागुणाकराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'क्षान्त' आपका नाम, क्षमा आदि गुण धारते।
चरणों करें प्रणाम, गुण पाने तुम सम विशद॥544॥
ॐ ह्रीं श्री **क्षान्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महायोगीश्वर' आप, कहलाए परमात्मा।
नाश किए सब पाप, नाम आपका हम जपें॥545॥
ॐ ह्रीं श्री **महायोगीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शमी' शांत परिणाम, रहे आपके नित्य ही।
बारम्बार प्रणाम, शांति पाने के लिए॥546॥
ॐ ह्रीं श्री **शमिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाध्यानपति' नाथ !, ध्यान किए हो श्रेष्ठतम।
चरण झुकाएँ माथ, ध्यान शुभम् हम कर सकें॥547॥

ॐ ह्रीं श्री **महाध्यानपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'ध्यातमहाधर्म', धर्म अहिंसा के धनी।
करें सदा सत् कर्म, मुक्ति पाने के लिए॥548॥

ॐ ह्रीं श्री **ध्यातमहाधर्माय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च 'महाव्रत' श्रेष्ठ, धारण करके अपने।
पाया धर्म यथेष्ठ, पार हुए संसार से॥549॥

ॐ ह्रीं श्री **महाव्रताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म अरि का नाश, 'महाकर्मअरिहा' किए।
कीन्हें ज्ञान प्रकाश, मुक्त हुए वसु कर्म से॥550॥

ॐ ह्रीं श्री **महाकर्मारिघ्ने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने प्रभु 'आत्मज्ञ', निज स्वरूप को जानकर।
अतिशय हुए गुणज्ञ, गुण अनन्त पाए प्रभो !॥551॥

ॐ ह्रीं श्री **आत्मज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब देवों के देव, 'महादेव' हो आप जिन।
करें चरण की सेव, सब इन्द्रों से पूज्य तुम॥552॥

ॐ ह्रीं श्री **महादेवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'महेशिता' नाम, पाये हो ऐश्वर्य सब।
शत्-शत् करें प्रणाम, कृपा पात्र बनकर रहें॥553॥

ॐ ह्रीं श्री **महेशित्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशे सर्व क्लेश, 'सर्वक्लेशापह' प्रभो !।
पूजें तुम्हें जिनेश, मम क्लेश उपशांत हों॥554॥

ॐ ह्रीं श्री **सर्वक्लेशापहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साधु' आप महान्, किए साधना श्रेष्ठतम।
मिले मुझे यह ज्ञान, संयम का पालन करें॥555॥

ॐ ह्रीं श्री **साधवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वदोषहर' देव, सर्व गुणों की खान हैं।
वन्दू तुम्हें सदैव, निज गुण पाने के लिए॥556॥

ॐ ह्रीं श्री **सर्वदोषहराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हर' पाए प्रभु नाम, हर्ता पापों के प्रभु।
पाया है निज धाम, कर्म नाशकर आपने॥557॥

ॐ ह्रीं श्री **हराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'असंख्येय', गुण असंख्य धारी प्रभु।
मेरा है यह ध्येय, हम भी वह गुण पा सकें॥558॥

ॐ ह्रीं श्री **असंख्येयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणना के न योग्य, 'अप्रमेयात्मा' हैं प्रभु।
जो भी रहे अयोग्य, वह गुण नाशे आपने॥559॥

ॐ ह्रीं श्री **अप्रमेयात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शमात्मा' नाथ, शांत स्वरूपी हैं प्रभु।
करता रहूँ प्रणाम, शांत भाव से हर समय॥560॥

ॐ ह्रीं श्री **शमात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-चामर)

'प्रशमाकर' तव नाम रहा, अतिशय कारी श्रेष्ठ अहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥561॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रशमाकराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वयोगीश्वर' आप कहे, सब मुनियों में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥562॥

ॐ ह्रीं श्री **सर्वयोगीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अचिन्त्य' महिमाधारी, तुम हो अतिशय गुणकारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥563॥

ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' कहलाए, श्रुत स्वरूपता को पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥564॥

ॐ ह्रीं श्री **श्रुतात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विष्टरश्रव' जिनदेव कहे, सर्व लोक में श्रेष्ठ रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥565॥

ॐ ह्रीं श्री **विष्टरश्रवसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्तात्मा' जिन कहलाए, विजय आप निज पर पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥566॥

ॐ ह्रीं श्री **दान्तात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'दमतीर्थेश' रहे, सकल परीषहजयी कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥567॥

ॐ ह्रीं श्री **दमतीर्थेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगात्मा' शुभ नाम अहा, प्रभु आपका श्रेष्ठ रहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥568॥

ॐ ह्रीं श्री **योगात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानसर्वग' कहे स्वामी, मोक्ष महल के अनुगामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥569॥

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानसर्वगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रधान' अतिशय धारी, महिमा जग से है न्यारी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥570॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रधानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आत्मा' कहलाए, निज में निजता को पाए।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥571॥

ॐ ह्रीं श्री **आत्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' आप कहाते हो, निज स्वरूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥572॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रकृतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' प्रभु हैं लोकजयी, सर्व श्रेष्ठ हैं कर्म क्षयी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥573॥

ॐ ह्रीं श्री **परमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमोदय' तुम हो स्वामी, घट-घट के अन्तर्यामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥574॥

ॐ ह्रीं श्री **परमोदयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रक्षीणाबंध' कहे, कर्म बन्ध से हीन रहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥575॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रक्षीणबंधाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामारी' कहलाए, काम शत्रु पर जय पाये।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥576॥

ॐ ह्रीं श्री **कामारये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'क्षेमकृत्' हो स्वामी, क्षेम किया करते नामी।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥577॥

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमशासन' जिन आप रहे, मंगलमय भगवन्त कहे।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥578॥

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' आपका नाम अहा, प्राणी मात्र से प्रेम रहा।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥579॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रणवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' आप कहलाते हो, मंत्र रूपता पाते हो।
नाममंत्र हम ध्यातें हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥580॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रणयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

नाम रहा प्रभु का शुभम्, मंगलकारी 'प्राण'।
दीन बन्धु कहलाए हैं, दिए जगत को त्राण॥581॥

ॐ ह्रीं श्री **प्राणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्राणद' कहे, रक्षक जग के ईश।
प्राणी चरणों में सभी, झुका रहे हैं शीश॥582॥

ॐ ह्रीं श्री **प्राणदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणतेश्वर' शुभ नाम है, भव्यों के भगवान।
चरण शरण का दास यह, सारा रहा जहान॥583॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रणतेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रमाण' ज्ञानी प्रभो, पाये सम्यक् ज्ञान।
सर्व लोक में आपका, है ऊँचा स्थान॥584॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रमाणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणिधी' निधियों के प्रभो !, स्वामी आप महान।
गुण अनन्त की खान हो, करें विशद गुणगान॥585॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रणिधये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग कला में 'दक्ष' प्रभु, अतः 'दक्ष' है नाम।
दक्ष बनूँ दो दक्षिणा, बारम्बार प्रणाम॥586॥
ॐ ह्रीं श्री **दक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन दाता आप हो, 'दक्षिण' आप जिनेश।
चरण वन्दना हम करें, पाने को निज देश॥587॥
ॐ ह्रीं श्री **दक्षिणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अध्वर्य' जिनेश हो, सर्व गुणों के ईश।
अतः आपके चरण में, झुका रहे हम शीश॥588॥
ॐ ह्रीं श्री **अध्वर्यवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपथ के राही बने, 'अध्वर' पाया नाम।
चरण वन्दना हम करें, जिन के ऋजु परिणाम॥589॥
ॐ ह्रीं श्री **अध्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनन्त के कोष प्रभु, पाए शुभ 'आनन्द'।
राग-द्वेष अरु मोहतज, नाश किए सब द्वन्द्व॥590॥
ॐ ह्रीं श्री **आनन्दाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नन्दन' आप जिनेश हो, तीन लोक के नाथ।
दाता तीनों लोक के, चरण झुकाएँ माथ॥591॥
ॐ ह्रीं श्री **नन्दनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-शांति के कोष प्रभु, कहलाते हैं 'नन्द'।
निज स्वभाव में खो गये, मेरे सारे द्वन्द॥592॥
ॐ ह्रीं श्री **नन्दाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्दनीय प्रभु लोक में 'वन्द्य' कहाए आप।
विशद शुद्ध आदर्श पा, नाशे सारे पाप॥593॥
ॐ ह्रीं श्री **वंद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अनिन्द्य' तुम लोक में, सब दोषों से हीन।
गुण अनन्त के पुञ्ज हो, अतिशय ज्ञान प्रवीण॥594॥
ॐ ह्रीं श्री **अनिंद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभिनन्दन' तव नाम है, जग वन्दन के योग्य।
और लोक में देव जो, सारे रहे अयोग्य॥595॥
ॐ ह्रीं श्री **अभिनंदनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामह' तुमने कर्म का, क्षण में किया विनाश।
बनें आप जैसे प्रभो !, लगी हमारी आस॥596॥
ॐ ह्रीं श्री **कामघ्ने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कामद' है नाम तव, सारे जग में इष्ट।
नाम जाप से आपके, नशते सर्व अनिष्ट॥597॥
ॐ ह्रीं श्री **कामदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'काम्य' आप कामनीय हो, मंगलमयी जिनेन्द्र।
तव चरणों में वन्दना, करते इन्द्र नरेन्द्र॥598॥
ॐ ह्रीं श्री **काम्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामधेनु' कहलाए तव, वांछित फल दातार।
इच्छा मम पूरण करो, वन्दन बारम्बार॥599॥
ॐ ह्रीं श्री **कामधेनवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'अरिञ्जय' आपका, अरि का किया विनाश।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, कीन्हा लोक प्रकाश॥600॥
ॐ ह्रीं श्री **अरिंजयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द भुजंगी)

'असंस्कृतसुसंस्कार' नाम आपका, अन्त किया आपने सर्वपाप का।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥601॥
ॐ ह्रीं श्री **असंस्कृतसुसंस्काराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अप्राकृत' तुम्हीं हो स्वाभाविक प्रभो !, ज्ञान के आप स्वामी कहाए विभो !
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥602॥
ॐ ह्रीं श्री **अप्राकृताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे प्रभो ! 'वैकृतान्तकृत' कहाए तुम्ही, मोह अरु विकारादि नशाए तुम्ही॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें,भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥603॥
ॐ ह्रीं श्री **वैकृतांतकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अंतकृत' आप हो कर्म नाशिया, जन्म-जरा-मृत्यु का नाश तुम किया।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥604॥
ॐ ह्रीं श्री **अंतकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे प्रभो ! 'कांतगु' नाम आपका, दिव्य ध्वनि से हो क्षय पूर्ण पाप का॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥605॥
ॐ ह्रीं श्री **कांतगवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कान्त' हो प्रभु आप महारम्य हो, हे त्रिलोकी प्रभु ज्ञान के गम्य हो॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥606॥
ॐ ह्रीं श्री **कांताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ ! आप कहलाए 'चिंतामणि', साधु संघ के प्रभु आप हो गणी॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥607॥
ॐ ह्रीं श्री **चिन्तामणये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अभीष्टद' प्रभो लोक में कहे आप हो, नष्ट सभी आप करते संताप हो॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥608॥
ॐ ह्रीं श्री **अभीष्टदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'अजित' आप हो कर्म इन्द्रियजयी, अतः कहलाए आप हो कर्म के क्षयी॥
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥609॥
ॐ ह्रीं श्री **अजिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितकामारि' आप जीत काम को, अन्त किया आपने सर्वपाप का।
हे प्रभु ! नाममंत्र जाप हम करें, भाव सहित पाद मूल शीश हम धरें॥610॥
ॐ ह्रीं श्री **जितकामारये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

प्रभु 'अमित' आप कहलाए, न माप कोई भी पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥611॥
ॐ ह्रीं श्री **अमिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन 'अमितशासन' कहलाए, अनुपम पदवी को पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥612॥
ॐ ह्रीं श्री **अमितशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'जितक्रोध' कहाए स्वामी, जीते कषाय जग नामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥613॥
ॐ ह्रीं श्री **जितक्रोधाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'जितामित्र' अविकारी, तुम जीते जगती सारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥614॥
ॐ ह्रीं श्री **जितामित्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'जितक्लेश' आप हो स्वामी, तुम हो जिन अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥615॥
ॐ ह्रीं श्री **जितक्लेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिन कहे 'जितान्तक' भाई, मृत्यु जीते दुखदायी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥616॥
ॐ ह्रीं श्री **जितांतकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम हो 'जिनेन्द्र' अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥617॥
ॐ ह्रीं श्री **जिनेन्द्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'परमानन्द' सुखारी, हो जन-जन के हितकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥618॥
ॐ ह्रीं श्री **परमानंदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'मुनीन्द्र' कहलाए, मुनियों के स्वामी गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥619॥
ॐ ह्रीं श्री **मुनीन्द्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुन्दुभिस्वन' हे स्वामी, त्रिभुवन पति अन्तर्यामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥620॥
ॐ ह्रीं श्री **दुंदुभिस्वनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'महेन्द्रवंद्या' जानो, जग पूज्य प्रभु पहिचानो।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥621॥
ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्रवंद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगीन्द्र' हुए अविकारी, इस जग में करुणाकारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥622॥
ॐ ह्रीं श्री **योगीन्द्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'यतीन्द्र' कहलाए, इस जग में युक्ति पाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥623॥
ॐ ह्रीं श्री **यतीन्द्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'नाभिनन्दन' स्वामी, हे मोक्ष महापथ गामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥624॥
ॐ ह्रीं श्री **नाभिनंदनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभेय' आप कहलाए, आदिम तीर्थंकर गाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥625॥
ॐ ह्रीं श्री **नाभेयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नाभिजा' कर्म के नाशी, रवि केवलज्ञान प्रकाशी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥626॥
ॐ ह्रीं श्री **नाभिजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अजात' हे स्वामी !, हो जन्म रहित शिवगामी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥627॥
ॐ ह्रीं श्री **अजाताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

'सुव्रत' सुव्रत के धारी, हे महाव्रती ! अनगारी।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥628॥
ॐ ह्रीं श्री **सुव्रताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मनु' सुपथ के दाता, हे कर्मभूमि ! विज्ञाता।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥629॥
ॐ ह्रीं श्री **मनवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्तम' से उत्तम गाए, त्रैलोक्यपति कहलाए।
है नाममंत्र सुखदायी, तीनों लोकों में भाई॥630॥
ॐ ह्रीं श्री **उत्तमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

हे जिन ! आप 'अभेद्य' कहाए, तुम्हें भेद कोई न पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥631॥
ॐ ह्रीं श्री **अभेद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अनत्यय' आप कहाए, नष्ट नहीं कोई कर पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥632॥
ॐ ह्रीं श्री **अनत्ययाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी श्रेष्ठ 'अनाशवान' गाए, महिमा पार न कोई पाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥633॥
ॐ ह्रीं श्री **अनाश्वते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिक' आपको कहते प्राणी, ऐसा मान रही जिनवाणी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥634॥
ॐ ह्रीं श्री **अधिकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिगुरु' नाम आपने पाया, जन-जन को सद्मार्ग दिखाया।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥635॥
ॐ ह्रीं श्री **अधिगुरवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' आपकी है शुभ वाणी, प्राणी मात्र की है कल्याणी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥636॥
ॐ ह्रीं श्री **सुगिरे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुमेधा' बुद्धि के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥637॥

ॐ ह्रीं श्री **सुमेधसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'विक्रमी' जग में आले, सर्व लोक में आप निराले।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥638॥

ॐ ह्रीं श्री **विक्रमिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वामी' आप प्रभो ! कहलाए, रक्षक सर्व जहाँ में गाए।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥639॥

ॐ ह्रीं श्री **स्वामिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुराधिर्ष' कहाए स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
नाम जाप तव करते स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी॥640॥

ॐ ह्रीं श्री **दुरादिधर्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

'निरुत्सुक' कहलाए जिनराज, सभी प्राणी को तुम पर नाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥641॥

ॐ ह्रीं श्री **निरुत्सुकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हो सारे जग को इष्ट, अतः कहलाए आप 'विशिष्ट'।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥642॥

ॐ ह्रीं श्री **विशिष्टाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्टभुक्' कहते हैं कई लोग, शिष्टता का पाये संयोग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥643॥

ॐ ह्रीं श्री **शिष्टभुजे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिष्ट' है प्रभु का अतिशय नाम, शिष्ट हो करते चरण प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥644॥

ॐ ह्रीं श्री **शिष्टाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य के 'प्रत्यय' हो हे नाथ !, झुकाते तव चरणों हम माथ।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥645॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रत्ययाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'कमनीय' कहाए आप, दर्श कर मिटते हैं अभिशाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥646॥

ॐ ह्रीं श्री **कामनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनघा' हो पाप विहीन, पुण्य के फल में रहते लीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥647॥

ॐ ह्रीं श्री **अनघाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमि' है प्रभो आपका नाम, करें हम चरणों विशद प्रणाम।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥648॥

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत के 'क्षेमंकर' जिनराज, चरण में झुकता सकल समाज।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥649॥

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमंकराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'अक्षय' हो क्षय से हीन, लोक में रहते हो स्वाधीन।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥650॥

ॐ ह्रीं श्री **अक्षयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हो 'क्षेमधर्मपति' आप, नशाने वाले सारे पाप।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥651॥

ॐ ह्रीं श्री **क्षेमधर्मपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षमी' हो जग में आप विशेष, क्षमा का देते हो संदेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥652॥

ॐ ह्रीं श्री **क्षमिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम हो जग में 'अग्राह्य', जगत में रहते जग से बाह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥653॥

ॐ ह्रीं श्री **अग्राह्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप का नाम 'ज्ञाननिग्राह्य', नहीं हो अज्ञानी के ग्राह्य।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप॥654॥

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञाननिग्राह्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'ज्ञानसुगम्य' जिनेश, जानते ज्ञानी तुम्हें विशेष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।655।।
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानगम्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निरुत्तर' तुम हो प्रभु विशेष, नहीं तुम सम कोइ और जिनेश।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।656।।
ॐ ह्रीं श्री **निरुत्तराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो 'सुकृति' हो अतिशयकार, श्रेष्ठ हो सुकृति के आधार।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।657।।
ॐ ह्रीं श्री **सुकृतिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'धातु' हो तुम हे जिन भगवन्त, शब्द के ज्ञाता आप अनन्त।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।658।।
ॐ ह्रीं श्री **धातवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्हें 'इज्याई' कहें कई लोग, पूज्य हो तुम पूजा के योग।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।659।।
ॐ ह्रीं श्री **इज्याहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुनय' तुम नय के हो सापेक्ष, कुनय से पूर्ण रहे निरपेक्ष।
करें हम नाममंत्र का जाप, नाश हों मेरे सारे पाप।।660।।
ॐ ह्रीं श्री **सुनयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(श्री छन्द)

नाथ 'श्रीसुनिवास' कहाए, श्री में प्रभु जी धाम बनाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।661।।
ॐ ह्रीं श्री **सुनिवासाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'चतुरानन' ब्रह्मा तुम स्वामी, मोक्ष मार्ग के हो अनुगामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।662।।
ॐ ह्रीं श्री **चतुराननाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर देखें, अपना स्वामी प्रभु जी लेखें।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।663।।
ॐ ह्रीं श्री **चतुर्वक्त्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य' करें पद वन्दन, जन्म-जरादिका हो खण्डन।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।664।।
ॐ ह्रीं श्री **चतुरास्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ 'चतुर्मुख' आप कहाए, चऊ दिशि दर्शन सबने पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।665।।
ॐ ह्रीं श्री **चतुर्मुखाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी, आप कहाए हो चिद्रूपी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।666।।
ॐ ह्रीं श्री **सत्यात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सत्यविज्ञान' आप कहलाए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।667।।
ॐ ह्रीं श्री **सत्यविज्ञानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सत्यसुवाक्' तुम्ही हो स्वामी, वाक् सुधामृत देते नामी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।668।।
ॐ ह्रीं श्री **सत्यवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सत्यसुशासन' तुमने पाया, भवि जीवों का भाग्य जगाया।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।669।।
ॐ ह्रीं श्री **सत्यशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सत्याशीष' है नाम तुम्हारा, सर्व जहाँ में अपरम्पारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।670।।
ॐ ह्रीं श्री **सत्याशिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सत्यसंधान' आप कहलाए, तीन लोक की प्रभुता पाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।671।।
ॐ ह्रीं श्री **सत्यसंधानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सत्य' आप हो सत् पथदर्शी, द्वादशांग जिन वाक्प्रदर्शी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी।।672।।
ॐ ह्रीं श्री **सत्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यपरायण' आप कहाए, जन-जन को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥673॥

ॐ ह्रीं श्री **सत्यपरायणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेयान्' स्थिर हो स्वामी, अविकारी हे अन्तर्यामी !।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥674॥

ॐ ह्रीं श्री **स्थेयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थवीयान्' महिमा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥675॥

ॐ ह्रीं श्री **स्थवीयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेदियान्' प्रभु आप कहाए, अतिशय महिमा को दिखलाए।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥676॥

ॐ ह्रीं श्री **नेदीयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दवीयान्' है नाम तुम्हारा, सारे जग का संकटहारा।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥677॥

ॐ ह्रीं श्री **दवीयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! 'दूरदर्शन' कहलाते, दूर से दर्शन प्राणी पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥678॥

ॐ ह्रीं श्री **दूरदर्शनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अणोरणीयान' कहाते, नहीं दृष्टिगोचर हो पाते।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥679॥

ॐ ह्रीं श्री **अणोरणीयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' कहते तुमको प्राणी, ऐसी है शुभ आगम वाणी।
नाममंत्र तव मंगलकारी, पढ़े भव्य हो शिवपद धारी ॥680॥

ॐ ह्रीं श्री **अनणवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

'गुरुराद्यगरीयसा' गाए, इस जग के गुरु कहाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥681॥

ॐ ह्रीं श्री **गरीयसमाद्यगुरवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदायोग' हैं आले, चेतन में रमने वाले।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥682॥

ॐ ह्रीं श्री **सदायोगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदाभोग' हैं स्वामी, हैं प्रातिहार्य अनुगामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥683॥

ॐ ह्रीं श्री **सदाभोगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदातृप्त' कहलाते, तृप्ति भोगों से पाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥684॥

ॐ ह्रीं श्री **सदातृप्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम 'सदाशिव' प्यारा, भव्यों का एक सहारा।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥685॥

ॐ ह्रीं श्री **सदाशिवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सदागति' के धारी, पञ्चम गति प्यारी-प्यारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥686॥

ॐ ह्रीं श्री **सदागतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सदासौख्य' शुभ पाया, यह है संयम की माया।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥687॥

ॐ ह्रीं श्री **सदासौख्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं 'सदाविद्य' जिन स्वामी, मुक्ति पथ के अनुगामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥688॥

ॐ ह्रीं श्री **सदाविद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कहे 'सदोदय' भाई, यह है प्रभु की प्रभुताई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥689॥

ॐ ह्रीं श्री **सदोदयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'सुघोष' कहलाए, शुभ दिव्य ध्वनि सुनाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥690॥

ॐ ह्रीं श्री **सुघोषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' के धारी, छवि सुन्दर अतिशयकारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥691॥
ॐ ह्रीं श्री **सुमुखाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' मूर्ति कहलाए, जिन श्रेष्ठ सौम्यता पाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥692॥
ॐ ह्रीं श्री **सौम्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुखद' सुखों के धारी, सुखदायी हो अनगारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥693॥
ॐ ह्रीं श्री **सुखदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुहित' सु हितकर गाए, जो शास्वत सुख उपजाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥694॥
ॐ ह्रीं श्री **सुहिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'सुहृत' हितु कहलाए, जग हित करने को आए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥695॥
ॐ ह्रीं श्री **सुहृदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'सुगुप्त' जिन स्वामी, तव चरणों में प्रणमामी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥696॥
ॐ ह्रीं श्री **सुगुप्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'गुप्तिभृत' गुप्ति धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥697॥
ॐ ह्रीं श्री **गुप्तिभृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'गोप्ता' पाए, रक्षक जग के कहलाए।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥698॥
ॐ ह्रीं श्री **गोप्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकाध्यक्ष' कहाते, जो व्याधि उपाधि नशाते।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥699॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकाध्यक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कहे 'दमेश्वर' भाई, निज के ऊपर जय पाई।
प्रभु की है महिमा न्यारी, है नाम जाप सुखकारी ॥700॥
ॐ ह्रीं श्री **दमेश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'वृहद् बृहस्पति' आप कहाए, सुरपति मिलकर शरण में आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥701॥
ॐ ह्रीं श्री **वृहद्बृहस्पतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वाग्मी' आप कहाए, श्रेष्ठ वचन सुनने तव आए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥702॥
ॐ ह्रीं श्री **वाग्मिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वाचस्पति' हे अतिशयकारी !, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥703॥
ॐ ह्रीं श्री **वाचस्पतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'उदारधी' जग के स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी !।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥704॥
ॐ ह्रीं श्री **उदारधिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'मनीषी' प्रभु कहलाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥705॥
ॐ ह्रीं श्री **मनीषिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धिषण' आपको कहते भाई, प्रभु सर्वज्ञता तुमने पाई।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥706॥
ॐ ह्रीं श्री **धिषणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'धीमान्' कहाए, कौन आपकी महिमा गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥707॥
ॐ ह्रीं श्री **धीमते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शेमुषीश' हो जग के त्राता, अतिशयकारी भाग्य विधाता।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥708॥
ॐ ह्रीं श्री **शेमुषीशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गिरांपति' प्रभु जो कहलाए, सब भाषामय ध्वनि सुनाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥709॥
ॐ ह्रीं श्री **गिरांपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'नैकरूप' प्रभु आप कहाए, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर गाये।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥710॥
ॐ ह्रीं श्री **नैकरूपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'नयोत्तुंग' तुमको सब जाने, नय के ज्ञाता तुमको माने।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥711॥
ॐ ह्रीं श्री **नयोत्तुंगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'नैकात्मा' त्रिभुवन के स्वामी, गुण पाये तुमने प्रभु नामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥712॥
ॐ ह्रीं श्री **नैकात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'नैकधर्मकृत' आप कहाए, धर्म अनेक वस्तु में गाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥713॥
ॐ ह्रीं श्री **नैकधर्मकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अविज्ञेय' जिन प्रभु कहलाए, महिमा कोई जान न पाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥714॥
ॐ ह्रीं श्री **अविज्ञेयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अप्रतर्क्यात्मा' तुम स्वामी, तर्क रहित हो अन्तर्यामी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥715॥
ॐ ह्रीं श्री **अप्रतर्क्यात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'कृतज्ञ' तव महिमा न्यारी, जन-जन के हो करुणाकारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥716॥
ॐ ह्रीं श्री **कृतज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कृतलक्षण' है नाम तुम्हारा, लगता सबको प्यारा-प्यारा।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥717॥
ॐ ह्रीं श्री **कृतलक्षणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'ज्ञानगर्भ' स्वामी कहलाए, निज का अतिशय ज्ञान जगाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥718॥

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानगर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'दयागर्भ' त्रिभुवन में गाए, प्राणी मात्र पर दया दिखाए।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥719॥
ॐ ह्रीं श्री **दयागर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'रत्नगर्भ' महिमा के धारी, वर्षे रत्न गर्भ में भारी।
पूज रहे हम नामावलियाँ, खिल जावें अन्तर की कलियाँ॥720॥
ॐ ह्रीं श्री **रत्नगर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

हे नाथ ! 'प्रभास्वर' कहे आप, त्रैलोक्य प्रकाशी रहित पाप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥721॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रभास्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'पद्मगर्भ' तुम हो अनन्त, कीन्हा है गर्भ का पूर्ण अन्त।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥722॥
ॐ ह्रीं श्री **पद्मगर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'जगद्गर्भ' जग में महान्, तुमने पाए थे तीन ज्ञान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥723॥
ॐ ह्रीं श्री **जगद्गर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'हेमगर्भ' हैं कांतिमान, है वर्ण स्वर्ण सम शोभमान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥724॥
ॐ ह्रीं श्री **हेमगर्भाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे देव ! 'सुदर्शन' कहे आप, तव दर्शन से कट जाँय पाप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥725॥
ॐ ह्रीं श्री **सुदर्शनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'लक्ष्मीवान्' त्रैलोक्य नाथ, सब वन्दन करते जोड़ हाथ।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥726॥
ॐ ह्रीं श्री **लक्ष्मीवते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'त्रिदशाध्यक्ष' जग में महान, अतिशयकारी गुण के निधान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥727॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिदशाध्यक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दृढ़ीयान' दृढ़ हो अनूप, सुर-नर झुकते तव चरण भूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥728॥
ॐ ह्रीं श्री **दृढ़ीयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'इन' त्रिभुवन के रहे ईश, जग जीव झुकाते चरण शीश।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥729॥
ॐ ह्रीं श्री **इनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'ईशित' तुम हो जग में जिनेश, सब दोष निवारक हो विशेष।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥730॥
ॐ ह्रीं श्री **ईशित्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
है श्रेष्ठ 'मनोहर' विशद रूप, अतिशयकारी जग में अनूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥731॥
ॐ ह्रीं श्री **मनोहराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम 'मनोज्ञांग' हो सुभग रूप, सुख-शांति प्रदायक शांत रूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥732॥
ॐ ह्रीं श्री **मनोज्ञांगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'धीर' वीर गुण के निधान, त्रिभुवन के ज्ञाता हो महान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥733॥
ॐ ह्रीं श्री **धीराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'गम्भीर' आप जग में विशेष, न तुम सम कोई है जिनेश।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥734॥
ॐ ह्रीं श्री **गम्भीरशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'धरमयूप' जग में प्रधान, तुम गुण रत्नों के हो निधान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥735॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मयूपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'दयायाग' सुखप्रद जिनेश, तुम नाश किए सब राग-द्वेष।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥736॥
ॐ ह्रीं श्री **दयायागाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'धरमनेमि' जिनवर महान्, तुम धर्म धुरी हो जग में प्रधान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥737॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मनेमये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनराज 'मुनीश्वर' रहे आप, अविकारी नाशे सर्व पाप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥738॥
ॐ ह्रीं श्री **मुनीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'धर्मचक्रायुध' धर्म रूप, इस से भी हो तुम प्रथग्रूप।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥739॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मचक्रायुधाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'देव' परम गुण के निधान, तुम जगत पूज्य जग में महान।
तव नाममंत्र हम जपें आज, पावें हे प्रभु ! हम मुक्तिराज॥740॥
ॐ ह्रीं श्री **देवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

'कर्महा' तुम हो नाथ, सब कर्मों के नाशी, अनन्त चतुष्टय प्राप्त, केवलज्ञान प्रकाशी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥741॥
ॐ ह्रीं श्री **कर्मघ्ने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'धरमघोषण' है नाम, श्रेष्ठ धर्म के धारी, शिव नगरी के साथ, जग में मंगलकारी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥742॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मघोषणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'अमोघवच' देव, व्यर्थ वचन न जावें, हृदय धारकर जीव, मुक्ति वधु को पावें।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥743॥
ॐ ह्रीं श्री **अमोघवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अमोघाज्ञ' भगवान, आज्ञा सुर सिर धारें, प्राणी आज्ञा पाय, मुक्ति मार्ग सम्हारें।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥744॥
ॐ ह्रीं श्री **अमोघाज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निर्मल' मल से हीन, कर्म सभी तुम नाशे, हुए स्वयं में लीन, निज स्वरूप प्रकाशे।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥745॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्मलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघशासन' सुनाम, जिनवर तुमने पाया, सकल सुखों का धाम, जग को प्रभु बनाया।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥746॥
ॐ ह्रीं श्री **अमोघशासनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'सुरूप' सुखकार, जग में आप निराले, नर सुरेन्द्र से पूज्य, शांति करने वाले।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥747॥
ॐ ह्रीं श्री **सुरूपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुभग' आपको देख, सब आकर्षित होते, राग-द्वेष अरु खेद, प्राणी अपना खोते।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥748॥
ॐ ह्रीं श्री **सुभगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनवर तुम हो 'त्यागि', सब कुछ तुमने त्यागा, लगा अनादि राग, क्षण में तुमसे भागा।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥749॥
ॐ ह्रीं श्री **त्यागिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'ज्ञातृ' तुम हो नाथ, सारे जग के ज्ञाता, जग में श्रेष्ठ जिनेश, विधि के आप विधाता।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥750॥
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञात्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
देव 'समाहित' आप, अतिशय ज्ञानी ध्यानी, ध्वनि आपकी श्रेष्ठ, कही जग में जिनवाणी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥751॥
ॐ ह्रीं श्री **समाहिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुस्थित' सुख में वास, आपने अक्षय पाया, मुक्ति रमा के पास, तुमने धाम बनाया।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥752॥
ॐ ह्रीं श्री **सुस्थिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'स्वस्थ' कहाए आप, प्रभु सब रोग विनाशी, हुए आप आत्मस्थ, केवल ज्ञान प्रकाशी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥753॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वस्थाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'स्वास्थ्यभाक्' जिनराज, रोग न होते कोई, शिव नगरी के ताज, आपने बाधा खोई।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥754॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वास्थ्यभाजे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नीरजस्क' जिन देव, कर्म रहित कहलाए, रज कर्मों की एव, सारी आप उड़ाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥755॥
ॐ ह्रीं श्री **नीरजस्काय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप 'निरुद्धव' देव, त्रिभुवन स्वामी गाए, गर्भादि पर श्रेष्ठ, उत्सव इन्द्र मनाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥756॥
ॐ ह्रीं श्री **निरुद्धवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'अलेप' भगवान, कर्म लेप के नाशी, करें विशद गुणगान, तुम हो शिवपुर वासी।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥757॥
ॐ ह्रीं श्री **अलेपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निष्कलंक' आत्मान, न कलंक हैं कोई, करलो आप समान, आये चरणों सोई।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥758॥
ॐ ह्रीं श्री **निष्कलंकात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'वीतराग' न राग, रहा आपके तन में, अतः समाए आप, जिनवर मेरे मन में।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥759॥
ॐ ह्रीं श्री **वीतरागाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'गतस्पृह' शुभ नाम, जग में पूजा जाए, मन की सारी चाह, अपनी पूर्ण नशाए।
नाम मंत्र तव श्रेष्ठ, जग में पूज्य कहाए, मुक्ति वधु को पाय, जो भी ध्याये गाए॥760॥
ॐ ह्रीं श्री **गतस्पृहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

इन्द्री वश में कर लिए, 'वश्येन्द्रिय' भगवान।
आए दर पे इसलिए, बनने आप समान॥761॥
ॐ ह्रीं श्री **वश्येन्द्रियाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'विमुक्तात्मन' हो प्रभो, हुए कर्म से मुक्त।
अनन्त चतुष्टय पा लिए, गुणानन्त से युक्त॥762॥
ॐ ह्रीं श्री **विमुक्तात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निःसपत्ना' कहलाए तुम, राग-द्वेष से हीन।
निजानन्द में लीन हो, किया मोह को क्षीण॥763॥
ॐ ह्रीं श्री **निःसपत्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जितेन्द्रिय' हो गये, अविकारी भगवान।
जीते इन्द्रिय के विषय, जग में हुए महान॥764॥
ॐ ह्रीं श्री **जितेन्द्रियाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रशान्त' तुमने किए, कर्म सभी निर्मूल।
मोक्ष मार्ग मेरा करो, हे जिनेन्द्र ! अनुकूल॥765॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रशांताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनन्तधामर्षि' तुम, ऋषियों के सरताज।
चरण कमल में वन्दना, करती सकल समाज॥766॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्तधामर्षये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय 'मंगल' परम, तीन लोक के ईश।
वन्दन करते भाव से, चरणों में धर शीश॥767॥
ॐ ह्रीं श्री **मंगलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मलहा' नाशी पाप के, हुए आप भगवान।
कर्म मैल को धो प्रभु, जग में हुए महान॥768॥
ॐ ह्रीं श्री **मलघ्ने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनघ' आपने पाप का, कीन्हा पूर्ण विनाश।
चेतन शक्ति प्रकट कर, कीन्हा शिवपुर वास॥769॥
ॐ ह्रीं श्री **अनघाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अनीदृक्' आप हो, जग में उपमातीत।
श्रेष्ठ गुणों से आपके, रखता है जग प्रीत॥770॥
ॐ ह्रीं श्री **अनीदृशे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आपका नाम शुभ, अतिशय 'उपमाभूत'।
अतः हृदय में आपको, करते हैं आहूत॥771॥
ॐ ह्रीं श्री **उपमाभूताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दिष्ट' आप इस लोक में, अतिशय हुए महान।
नित्य निरंजन श्रेष्ठतम, गुण अनन्त की खान॥772॥
ॐ ह्रीं श्री **दिष्टये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दैव' आपकी जगत में, महिमा अपरम्पार।
शरणागत को शीघ्र ही, कर देते भवपार॥773॥
ॐ ह्रीं श्री **दैवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अगोचर' आप हो, नभ में किया विहार।
कमल चरण तल सुर रवें, महिमा का नहिं पार॥774॥
ॐ ह्रीं श्री **अगोचराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपादि से शून्य तुम, हे 'अमूर्त' जिनराज।
राह दिखाओ नाथ अब, आन सम्हारो काज॥775॥
ॐ ह्रीं श्री **अमूर्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूर्तिमान' तुम मूर्त हो, जग में अपरम्पार।
परमौदारिक देह का, पाया शुभ आधार॥776॥
ॐ ह्रीं श्री **मूर्तिमते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक' अनादि आप हो, रहे जगत में एक।
जग में रहकर के स्वयं, धारे रूप अनेक॥777॥
ॐ ह्रीं श्री **एकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैक' आपके गुण कई, जो हैं गणनातीत।
गुण पाने प्रभु आपके, रखते चरणों प्रीत॥778॥
ॐ ह्रीं श्री **नैकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए 'नानैक' जिन, गुण अनन्त के कोष।
जिनकी पूजा से विशद, जीवन हो निर्दोष॥779॥
ॐ ह्रीं श्री **नानैकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्यात्मगम्या' हो तुम्हीं, आत्म तत्त्व के कोष।
तव स्वरूप पावें वही, जो होते निर्दोष॥780॥
ॐ ह्रीं श्री **अध्यात्मगम्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'अगम्यात्मा' प्रभु कहलाए, मिथ्या ज्ञानी जान न पाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥781॥
ॐ ह्रीं श्री **अगम्यात्मने** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कहे 'योगविद्' अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के प्रभु अनुगामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥782॥
ॐ ह्रीं श्री **योगविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगिवंदित' आप कहाए, मुक्ति वधु के स्वामी गाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥783॥
ॐ ह्रीं श्री **योगिवंदिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' हे जग के स्वामी, वन्दनीय हो जग में नामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥784॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वत्रगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' कहलाए, नित्य रूपता प्रभु जी पाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥785॥
ॐ ह्रीं श्री **सदाभाविने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'त्रिकालविषयार्थ' कहाए, त्रैकालिक वस्तु प्रगटाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥786॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालविषयार्थदृशे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंकर' आप रहे सुखदाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥787॥
ॐ ह्रीं श्री **शंकराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवद' हो अतिशय सुखकारी, वन्दनीय हो मंगलकारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥788॥
ॐ ह्रीं श्री **शंवदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दान्त' आप इन्द्रिय के जेता, मन मर्कट के रहे विजेता।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥789॥
ॐ ह्रीं श्री **दांताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दमी' इन्द्रियों को तुम दमते, अतः लोग चरणों में नमते।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥790॥
ॐ ह्रीं श्री **दमिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' क्षमा के धारी, क्षमा धारते हो अनगारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥791॥
ॐ ह्रीं श्री **क्षान्तिपरायणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिप' आपको कहते प्राणी, जन-जन के हो तुम कल्याणी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥792॥
ॐ ह्रीं श्री **अधिपाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमानंद' आपने पाया, निजानंद को तुमने ध्याया।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥793॥
ॐ ह्रीं श्री **परमानंदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमात्मज्ञ'आप कहलाए, पर को जिन सम आप बनाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥794॥
ॐ ह्रीं श्री **परमात्मज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'परात्पर' हो अविकारी, श्रेष्ठ जगत में मंगलकारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥795॥
ॐ ह्रीं श्री **परात्पराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगद्वल्लभ' हो तुम स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥796॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगद्वल्लभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अभ्यर्च्य' पूज्यता पाए, सुर नर मुनि से पूज्य कहाए।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥797॥
ॐ ह्रीं श्री **अभ्यर्च्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगन्मंगलोदय' अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥798॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगन्मंगलोदयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' स्वामी, पूज्य शतेन्द्रों से जग नामी।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥799॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिलोकाग्रशिखामणि' जिनराज, शिवपुर नगरी के सरताज।
नामावलि पूजने आए, हमने यह सौभाग्य जगाए॥800॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिलोकाग्रशिखामणये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप)

हे 'त्रिकालदर्शी' तुम, सब पदार्थ जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥801॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालदर्शिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'लोकेश' आप, सर्व लोक जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥802॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकधाता' आप हो, श्रेष्ठ वृत धारते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥803॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकधात्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृढ़वत हो लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥804॥
ॐ ह्रीं श्री **दृढ़व्रताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकातिग', लोग तुम्हें जानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥805॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकातिगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूज्य' आप लोक में, सर्व कर्म हानते।
नाम जपें आपका हम, देव तुम्हें मानते॥806॥
ॐ ह्रीं श्री **पूज्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकैकसारथी', कर रहे हम आरती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥807॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकैकसारथये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पुराण' आपको, ये सृष्टि पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥808॥
ॐ ह्रीं श्री **पुराणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुष' नाम आत्मा, अनादि से धारती।
दिव्य ध्वनि आपकी, पूज्यनीय भारती॥809॥
ॐ ह्रीं श्री **पुरुषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूर्व' नाम आपका, ये जगती पुकारती।
दिव्य ध्वनि आपकी है, पूज्यनीय भारती॥810॥
ॐ ह्रीं श्री **पूर्वाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतपूर्वांगविस्तर', हो अंग पूर्ण धारी।
पाद पद्म में प्रभु है, वन्दना हमारी॥811॥
ॐ ह्रीं श्री **कृतपूर्वांगविस्तराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आदिदेव' आप हो, जिन धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी॥812॥
ॐ ह्रीं श्री **आदिदेवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणाद्य' आप हो, समता के धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी॥813॥
ॐ ह्रीं श्री **पुराणाद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुदेव' आप रहे, हो कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी॥814॥
ॐ ह्रीं श्री **पुरुदेवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिदेवता' की है, महिमा कुछ न्यारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी॥815॥
ॐ ह्रीं श्री **अधिदेवतायै** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमुख्य' आप हो, युग के अवतारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी॥816॥
ॐ ह्रीं श्री **युगमुख्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगज्येष्ठ' युग के, हो श्रेष्ठ धर्म धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी॥817॥
ॐ ह्रीं श्री **युगज्येष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादिस्थितिदेशक', हे देशना के धारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥818॥
ॐ ह्रीं श्री **युगादिस्थितिदेशकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कल्याणवर्ण' हो, जग में कल्याणकारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥819॥
ॐ ह्रीं श्री **कल्याणवर्णाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नाथ ! 'कल्याण' करो, आये हैं पुजारी।
पाद पद्म में प्रभु, है वन्दना हमारी ॥820॥
ॐ ह्रीं श्री **कल्याणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

नाथ है 'कल्य' आपका नाम, मोक्ष तव अतिशयकारी धाम।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥821॥
ॐ ह्रीं श्री **कल्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो 'कल्याणलक्षणः' आप, करें हम सदा आपका जाप।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥822॥
ॐ ह्रीं श्री **कल्याणलक्षणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहे 'कल्याणप्रकृति' देव, बने कल्याणी प्रभु सदैव।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥823॥
ॐ ह्रीं श्री **कल्याणप्रकृतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'दीप्रकल्याणआतमा' आप, नशाओ मेरा प्रभु संताप।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥824॥
ॐ ह्रीं श्री **दीप्रकल्याणात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'विकल्मष' कहलाए जिननाथ, चरण में झुका रहे तव माथ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥825॥
ॐ ह्रीं श्री **विकल्मषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'विकलंक' आप हो सिद्ध, जिनेश्वर तुम हो जगत प्रसिद्ध।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥826॥
ॐ ह्रीं श्री **विकलंकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी आप कहे 'कलातीत', कलाएँ सारी किए अतीत।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥827॥
ॐ ह्रीं श्री **कलातीताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहाए 'कलिलघ्न' जिनदेव, पाप का छालन करें सदैव।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥828॥
ॐ ह्रीं श्री **कलिलघ्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनेश्वर आप रहे 'कलाधार', कलाओं के शुभ हो आधार।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥829॥
ॐ ह्रीं श्री **कलाधराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पूज्य तुम देवों के भी देव, अतः कहलाए हो 'देवदेव'।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥830॥
ॐ ह्रीं श्री **देवदेवाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहाए आप प्रभु 'जगन्नाथ', अतः तव चरण झुकाते माथ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥831॥
ॐ ह्रीं श्री **जगन्नाथाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु तव 'जगतबन्धु' है नाम, करें तव चरणों विशद प्रणाम।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥832॥
ॐ ह्रीं श्री **जगद्बंधवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु तव 'जगतविभु' है नाम, करे यह सारा जगत प्रणाम।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥833॥
ॐ ह्रीं श्री **जगतद्विभवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहाते 'जगतहितैषी' नाथ, जगत का हित करते हो साथ।
जपें हम नाममंत्र की माल, चरण में वन्दन करें त्रिकाल ॥834॥
ॐ ह्रीं श्री **जगद्धितैषिणे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

हे 'लोकज्ञ' जगत के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥835॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सर्वज्ञ' आप हितकारी, व्याप्त लोक में हो अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥836॥
ॐ ह्रीं श्री **सर्वज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'जगदग्रज' हो अन्तर्यामी, ज्येष्ठ लोक में हो तुम स्वामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥837॥
ॐ ह्रीं श्री **जगदग्रजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आप 'चराचरगुरु' कहाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥838॥
ॐ ह्रीं श्री **चराचरगुरवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'गोप्य' आप गुप्ति के धारी, रक्षक हो तुम विस्मयकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥839॥
ॐ ह्रीं श्री **गोप्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'गूढ़ात्मा' हे नाथ कहाए, इन्द्रिय गोचर न हो पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥840॥
ॐ ह्रीं श्री **गूढ़ात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'गूढ़सुगोचर' तुम हो स्वामी, ज्ञानी जन हैं तव अनुगामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥841॥
ॐ ह्रीं श्री **गूढ़गोचराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सद्योजात' आप कहलाए, भेष दिगम्बर प्रभु जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥842॥
ॐ ह्रीं श्री **सद्योजाताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं 'प्रकाशात्मा' जिनदेवा, सुर नर करे आपकी सेवा।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥843॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रकाशात्मने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हे स्वामी !, कांतिमान हे अन्तर्यामी !।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥844॥
ॐ ह्रीं श्री **ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'आदित्यवर्ण' कहलाए, सहस्र रश्मि सम कांति पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥845॥
ॐ ह्रीं श्री **आदित्यवर्णाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'भर्माभ' श्रेष्ठ छवि धारी, महिमा है इस जग से न्यारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥846॥
ॐ ह्रीं श्री **भर्माभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुप्रभ' अतिशय शोभा पाते, सूर्य चन्द्रमा कई लजाते।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥847॥
ॐ ह्रीं श्री **सुप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कनकप्रभ' तव दीप्ति निराली, तप्त स्वर्ण समकांती वाली।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥848॥
ॐ ह्रीं श्री **कनकप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुवर्णवर्ण' तव महिमा न्यारी, दीप्तिमान हो जिन अविकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥849॥
ॐ ह्रीं श्री **सुवर्णवर्णाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'रुक्माभ' स्वर्ण छविधारी, तीन लोक में मंगलकारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥850॥
ॐ ह्रीं श्री **रुक्माभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सूर्यकोटिसमप्रभ' तुम स्वामी, दयानिधि हे अन्तर्यामी !।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥851॥
ॐ ह्रीं श्री **सूर्यकोटिसमप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'तपनीयनिभ' प्रभु जी कहलाए, तप्त स्वर्ण सम आभा पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥852॥
ॐ ह्रीं श्री **तपनीयनिभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उच्च देह धर 'तुंग' कहाए, पद सर्वोच्च प्रभु जी पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥853॥
ॐ ह्रीं श्री **तुंगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभो' यह जग जाने, उदित सूर्य सम कांति माने।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥854॥
ॐ ह्रीं श्री **बालार्काभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अनलप्रभ' हो अन्तर्यामी, निर्मल कांति है तव नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥855॥
ॐ ह्रीं श्री **अनलप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'संध्याभ्रबभ्रू' छवि धारी, छवि सांझ के रवि सम प्यारी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥856॥
ॐ ह्रीं श्री **संध्याभ्रबभ्रवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'हेमाभ' आप कहलाए, स्वर्ग समान देह प्रभु पाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥857॥
ॐ ह्रीं श्री **हेमाभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'तप्ताचामीकरप्रभ' स्वामी, हेम वर्ण धारी तव नामी।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥858॥
ॐ ह्रीं श्री **तप्तचामीकरप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निष्टप्तकनकच्छाय' कहाए, यहाँ दीप्ति धारी कहलाए।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥859॥
ॐ ह्रीं श्री **निष्टप्तकनकच्छायाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कनत्कांचनासन्निभ' देही, पाकर भी हो तुम वैदेही।
नाममंत्र को ध्याकर स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ॥860॥
ॐ ह्रीं श्री **कनत्कांचनसन्निभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंग प्रयात)

'हिरण्यवर्ण' शुभ तव है नाम स्वामी, अतुल कांतिधारी जिनेश्वर हो नामी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥861॥
ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यवर्णाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वर्ण छविधारी 'स्वर्णाभ' गाए, सुर नर यति सब पूजा रचाए।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥862॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वर्णाभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतकुंभनिभप्रभ' हैं शांतिधारी, प्रभु हैं निजातम के ब्रह्माविहारी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥863॥
ॐ ह्रीं श्री **शांतकुंभनिभप्रभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'द्युम्नाभ' तुमको कहते हैं प्राणी, ॐकार मयी श्रेष्ठ है प्रभु की वाणी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥864॥
ॐ ह्रीं श्री **द्युम्नाभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'जातरूपाभ' कहलाए स्वामी, करुणानिधि हैं जिन अन्तर्यामी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥865॥
ॐ ह्रीं श्री **जातरूपाभाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'तप्तजांबूनदद्युति' के धारी, महिमा तुम्हारी है इस जग से न्यारी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥866॥
ॐ ह्रीं श्री **तप्तजांबूनदद्युतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सधौतकलधौतश्री' हे जिनेन्द्रा, तुम्हारे चरण पूजते हैं शतेन्द्रा।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥867॥
ॐ ह्रीं श्री **सुधौतकलधौतश्रिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'प्रदीप्त' दीप्ति मान विशद ज्ञानधारी, सर्वलोक में महान श्रेष्ठ अविकारी।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥868॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रदीप्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे जिनेन्द्र 'हाटकद्युति' सूर्य को लजाते, दीप्तिमान हेमाभ आप जिन कहाते।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥869॥
ॐ ह्रीं श्री **हाटकद्युतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शिष्टेष्ट' आप जिन लोक में कहाते, वन्दना को संत भी भाव सहित आते।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥870॥
ॐ ह्रीं श्री **शिष्टेष्टाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पुष्टी के कर्ता जिन 'पुष्टिद' हो स्वामी, पुष्टि करो नाथ हे अन्तर्यामी !।
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥871॥
ॐ ह्रीं श्री **पुष्टिदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टी करो 'पुष्ट' होके हमारी, करुणा करो नाथ करुणा के धारी॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ,पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥872॥
ॐ ह्रीं श्री **पुष्टाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आप 'स्पष्ट' सब द्रव्य जानी, भव्यों के कल्याण हेतु बखानी॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥873॥
ॐ ह्रीं श्री **स्पष्टाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'स्पष्टाक्षर' तुम्हें जानते हैं, हितकारी वाणी सभी मानते हैं॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥874॥
ॐ ह्रीं श्री **स्पष्टाक्षराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्ही 'क्षम' हो भव नाश करने में स्वामी, अतएव कहलाए तुम मोक्षगामी॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥875॥
ॐ ह्रीं श्री **क्षमाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शत्रुघ्न' तुमने सर्व शत्रु हराये, कर्मों की सेना भगाने हम आए॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥876॥
ॐ ह्रीं श्री **शत्रुघ्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'अप्रतिघ' हो न शत्रु तव कोई, महिमा प्रभु तुमने अतिशय संजोई॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥877॥
ॐ ह्रीं श्री **अप्रतिघाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'अमोघ' तुमने सफलता को पाया, संयम को धारणकर जीवन सजाया॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥878॥
ॐ ह्रीं श्री **अमोघाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु तुम 'प्रशास्ता' हो जग में निराले, सर्वोत्तम उपदेश तुम देने वाले॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥879॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रशास्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कहे 'शासिता' आप रक्षा के धारी, भक्तों के हो आप कल्याणकारी॥
प्रभु नाप जाप कर पूजा रचाएँ, पाके सहस्र नाम मुक्ति को पाएँ॥880॥
ॐ ह्रीं श्री **शासित्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

'स्वभू' आपको देव, जाने जग के जीव सब।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके॥881॥
ॐ ह्रीं श्री **स्वभुवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शांतिनिष्ठ जिनदेव, शांति के दाता कहे।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके॥882॥
ॐ ह्रीं श्री **शांतिनिष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'मुनिज्येष्ठ' हे नाथ, सब मुनियों में बड़े हो।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते॥883॥
ॐ ह्रीं श्री **मुनिज्येष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शिवताति' हे नाथ !, शिव के कर्त्ता आप हो।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके॥884॥
ॐ ह्रीं श्री **शिवतातये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शिवप्रद' हे भगवान !, शिव पद हमको दीजिये।
करते तव गुणगान, भक्ति भाव से चरण में॥885॥
ॐ ह्रीं श्री **शिवप्रदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शांतिद' आप सदैव, जग जीवों को दे रहे।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके॥886॥
ॐ ह्रीं श्री **शांतिदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शांतिकृत' हे नाथ !, शांति इस जग में करो।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते॥887॥
ॐ ह्रीं श्री **शांतिकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'शांति' दाता नाथ, त्रिभुवन में शांति करो।
चरण झुकाकर माथ, नाम मंत्र को पूजते॥888॥
ॐ ह्रीं श्री **शांतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'कांतिमान' जिनदेव, कांति के धारी अहा।
वन्दू चरण सदैव, तव चरणों में विनत हो॥889॥
ॐ ह्रीं श्री **कांतिमते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कांमितप्रद' भगवान, पूर्ण मनोरथ कीजिए।
करें विशद गुणगान, नाम मंत्र को आपके ॥890॥

ॐ ह्रीं श्री **कांमितप्रदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयोनिधि' गुणखान, श्रेय हमें प्रभु दीजिए।
करें विशद गुणगान, तव चरणों में विनत हो॥891॥

ॐ ह्रीं श्री **श्रेयोनिधये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिष्ठान' जिनदेव, जैन धर्म के मूल हो।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥892॥

ॐ ह्रीं श्री **अधिष्ठानाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतिष्ठ' हे देव !, पूजित फिर भी लोक में।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥893॥

ॐ ह्रीं श्री **अप्रतिष्ठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे 'प्रतिष्ठित' आप, तीन लोक में हर समय।
करें नाम का जाप, शिव सुख पाने के लिए॥894॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रतिष्ठिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुस्थिर' आप सदैव, रहते निज स्वभाव में।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥895॥

ॐ ह्रीं श्री **सुस्थिराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थावर' हे जिनराज !, स्थित रहते हर समय।
यह जग करता नाज, श्री जिनके शुभ नाम पर॥896॥

ॐ ह्रीं श्री **स्थावराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थाणु' हे जिनदेव !, अचल अटल अविकार हो।
वन्दू चरण सदैव, नाम मंत्र को आपके ॥897॥

ॐ ह्रीं श्री **स्थाणवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथीयान्' तव नाम, सर्वलोक में पूज्य हो।
बारम्बार प्रणाम, विशद गुणों के कोष तुम॥898॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रथीयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथित' मिले विश्राम, भव सागर में गमन से।
बारम्बार प्रणाम, नाम मंत्र तव पूजते॥899॥

ॐ ह्रीं श्री **प्रथिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथु' आपका धाम, तीन लोक में श्रेष्ठ है।
बारम्बार प्रणाम, पूजा करते भाव से॥900॥

ॐ ह्रीं श्री **पृथवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-लोलतरंग)

'दिग्वासा' दिश ही अम्बर है, धारें ऐसी मुद्रा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥901॥

ॐ ह्रीं श्री **दिग्वाससे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वातरशन' तव नाम जिनेश, कहाते हो प्रभु अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥902॥

ॐ ह्रीं श्री **वातरशनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्ग्रंथेश' जिनेश अशेष, परिग्रह तुमने छोड़ा स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥903॥

ॐ ह्रीं श्री **निर्ग्रंथेशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दिगम्बर' हो जिनराज, दिशाएँ अम्बर हैं तव नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥904॥

ॐ ह्रीं श्री **दिगम्बराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' किन्चित परिग्रह से, हीन कहे हैं अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥905॥

ॐ ह्रीं श्री **निष्किंचनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराशंस' इच्छा के त्यागी, कहलाए हैं मेरे स्वामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥906॥

ॐ ह्रीं श्री **निराशंसाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानचक्षु' हैं केवल ज्ञानी, आप हुए हो शिवपुर गामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥907॥

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानचक्षुषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अमोमुह' मोह विनाशी, हुए लोक में अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी॥908॥

ॐ ह्रीं श्री **अमोमुहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोराशि' तेज पुंज के, धारी हो हे जिनवर स्वामी !।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥909॥
ॐ ह्रीं श्री **तेजोराशये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतौज' ओजस्वी अनुपम, आप हुए हो जग में नामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥910॥
ॐ ह्रीं श्री **अनंतौजसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानाब्धि' हे ज्ञान सरोवर, आप कहाए अन्तर्यामी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥911॥
ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानाब्धये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शीलसागर' हे स्वामी !, आप हुए हो शील के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥912॥
ॐ ह्रीं श्री **शीलसागराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' शुभ तेज पुंज हैं, अतिशय तेज रूप के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥913॥
ॐ ह्रीं श्री **तेजोमयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योति' हे ज्योति स्वरूपी, पावन केवल ज्ञान के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥914॥
ॐ ह्रीं श्री **अमितज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिमूर्ति' ज्योतिर्मय अनुपम, मंगलमय पावन अविकारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥915॥
ॐ ह्रीं श्री **ज्योतिर्मूर्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'तमोपह' आप कहाए, मोहारि के नाशनकारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥916॥
ॐ ह्रीं श्री **तमोपहाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगच्चूड़ामणि' अनुपम, तीन लोक में मंगलकारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥917॥
ॐ ह्रीं श्री **जगच्चूड़ामणये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप्ति आप 'दैदीप्यात्मा' हो, अतिशय प्रभु दीप्ति के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥918॥
ॐ ह्रीं श्री **दीप्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शंवान्' सौख्य शांतिमय, पावन हो समता के धारी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥919॥
ॐ ह्रीं श्री **शंवते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विघ्नविनायक' आप प्रभु हो, इस जग में विघ्नों के नाशी।
नाम सुमंत्र का जाप करें प्रभु, बन जाएँ मुक्ति पथगामी ॥920॥
ॐ ह्रीं श्री **विघ्नविनायकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

प्रभु 'कलिघ्न' आप कहलाए, सब विघ्नों को दूर भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥921॥
ॐ ह्रीं श्री **कलिघ्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मशत्रुघ्न' नाम के धारी, चऊ कर्मों के नाशनकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥922॥
ॐ ह्रीं श्री **कर्मशत्रुघ्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकालोकप्रकाशक' ज्ञानी, वाणी तव जग की कल्याणी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥923॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकालोकप्रकाशकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे 'अनिद्रालु' जिन स्वामी, मोहक्षयी मुक्ति पथगामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥924॥
ॐ ह्रीं श्री **अनिद्रालवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अतन्द्रालु' कहलाए, आलस तद्रा पर जय पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥925॥
ॐ ह्रीं श्री **अतंद्रालवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जागरूक' तुम जाग्रत रहते, हर उपसर्ग परीषह सहते।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ॥926॥
ॐ ह्रीं श्री **जागरूकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रमामय' ज्ञान के धारी, गुण अनन्त के हो अधिकारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥927॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रमामयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्ष्मीपति' आप हो स्वामी, अनन्त चतुष्टय पाये नामी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥928॥
ॐ ह्रीं श्री **लक्ष्मीपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' हो मंगलकारी, अतिशय ज्ञान ज्योति के धारी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥929॥
ॐ ह्रीं श्री **जगज्ज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मराज' है नाम तुम्हारा, भवि जीवों को तारण हारा।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥930॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मराजाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रजाहित' करने वाले, जग जीवों के हो रखवाले।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥931॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रजाहिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मुमुक्षु' भी कहलाए, मोक्ष की इच्छा भी न पाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥932॥
ॐ ह्रीं श्री **मुमुक्षवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बन्धमोक्षज्ञा' प्रभु कहलाए, बन्ध मोक्ष की विधि बताए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥933॥
ॐ ह्रीं श्री **बंधमोक्षज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जिताक्ष' इन्द्रिय मन जेता, मोहादि वसु कर्म विजेता।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥934॥
ॐ ह्रीं श्री **जिताक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितमन्मथ' हे नाथ कहाए, काम अरि को मार भगाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥935॥
ॐ ह्रीं श्री **जितमन्मथाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'प्रशान्तरसशैलुष' स्वामी, शांति मार्ग के हे अनुगामी !।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥936॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रशांतरसशैलूषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यपेटकनायक' तुम स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी !।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥937॥
ॐ ह्रीं श्री **भव्यपेटकनायकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मूलकर्त्ता' कहलाए, आदि धर्म प्रवर्तक गाए।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥938॥
ॐ ह्रीं श्री **मूलकर्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अखिलज्योति' तुमने प्रगटाई, निधिज्ञान की तुमने पाई।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥939॥
ॐ ह्रीं श्री **अखिलज्योतिषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'मलघ्न' मलके हो नाशी, धवल अमल आतम के वासी।
नाम मंत्र को प्रभु हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥940॥
ॐ ह्रीं श्री **मलघ्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज– हे दीन बन्धु..)

हे नाथ 'मूलसुकारण' प्रभु आप कहाए, मुक्ति का मार्ग जग को प्रभु आप दिखाए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥941॥
ॐ ह्रीं श्री **मूलकारणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'आप्त' हो सर्वज्ञ वीतराग हितैषी, प्रभु दर्श करे आपका हो भावना वैसी।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥942॥
ॐ ह्रीं श्री **आप्ताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! आप 'वागीश्वर' श्रेष्ठ कहाए, शुभ दिव्य ध्वनि आपकी शिव मार्ग दिखाए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥943॥
ॐ ह्रीं श्री **वागीश्वराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयान् आप अनुपम ही 'श्रेय' जगाए, हम श्रेय पाने हेतु तव द्वार पे आए।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥944॥
ॐ ह्रीं श्री **श्रेयसे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'श्रायसोक्तये' वाणी है श्रेष्ठ आपकी, नाशक रही है लोक में सारे ही पाप की।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥945॥
ॐ ह्रीं श्री **श्रायसोक्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'निरुक्तवाक्' आपकी वाणी महान है, अनुपम है लोक में जो अतिशय प्रधान है।
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥946॥
ॐ ह्रीं श्री **निरुक्तवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ ! 'प्रवक्ता' जिनेश आप कहाए, शुभ देशना जिनेन्द्र आप श्रेष्ठ सुनाए॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥947॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रवक्त्रे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ ! श्रेष्ठ 'वचसामिश' आप कहाए, प्रभु दिव्य ध्वनि की अनुपम गंग बहाए॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥948॥
ॐ ह्रीं श्री **वचसामीशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे नाथ ! आप 'मारजिता' मोह जयी हो, इस लोक में जिनेन्द्र आप कर्म क्षयी हो॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥949॥
ॐ ह्रीं श्री **मारजिते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'विश्वभाववित्' प्रभु श्रेष्ठ कहाए, चरणों में भक्त भक्ति को भाव से आए॥
तव नाम मंत्र जाप प्रभु कर्म नशाए, भव सिन्धु पार करने में साथ निभाए॥950॥
ॐ ह्रीं श्री **विश्वभावविदे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

हे 'सुतनु' श्रेष्ठ तनधारी, व्याधि के नाशन हारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥951॥
ॐ ह्रीं श्री **सुतनवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'तनुनिर्मुक्त' कहाए, इस भव से मुक्ति पाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥952॥
ॐ ह्रीं श्री **तनुनिर्मुक्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु 'सुगत' आप हो स्वामी, हो मुक्ति के अनुगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥953॥
ॐ ह्रीं श्री **सुगताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हतदुर्नय' आप कहाए, नय मिथ्या सभी नशाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥954॥
ॐ ह्रीं श्री **हतदुर्नयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो 'श्रीश' आप जिन स्वामी, श्री पति हो अन्तर्यामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥955॥
ॐ ह्रीं श्री **श्रीशाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'श्रीश्रितपादाब्ज' कहाते, सुर चरण आपके ध्याते।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥956॥
ॐ ह्रीं श्री **श्रितपादाब्जाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'वीतभी' आप निराले, प्रभु अभय दिलाने वाले।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥957॥
ॐ ह्रीं श्री **वीतभिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'अभयंकर' हितकारी, प्रभु जन-जन के उपकारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥958॥
ॐ ह्रीं श्री **अभयंकराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'उत्सन्नदोष' तुम स्वामी, बन गये मोक्ष पथ गामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥959॥
ॐ ह्रीं श्री **उत्सन्नदोषाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निर्विघ्न' आप कहलाते, प्रभु सारे विघ्न नशाते।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥960॥
ॐ ह्रीं श्री **निर्विघ्नाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'निश्चल' जिन अविकारी, प्रभु आतम ब्रह्म विहारी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥961॥
ॐ ह्रीं श्री **निश्चलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'लोकसुवत्सल' ज्ञानी, हे वीतराग विज्ञानी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥962॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकवत्सलाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकोत्तर' अविनाशी, हे लोक शिखर के वासी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥963॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकोत्तराय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकपति' जिन स्वामी, हे शिवपुर के पथगामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥964॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकपतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकचक्षु' कहलाए, मुक्ति का मार्ग दिखाए।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥965॥
ॐ ह्रीं श्री **लोकचक्षुषे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'अपारधी' स्वामी, धी है तव अतिशय नामी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥966॥
ॐ ह्रीं श्री **अपारधिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रहे 'धीरधी' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥967॥
ॐ ह्रीं श्री **धीरधिये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'बुद्धसन्मार्ग' प्रदाता, हे त्रिभुवन के सुखदाता।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥968॥
ॐ ह्रीं श्री **बुद्धसन्मार्गाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुद्ध' बुद्ध अविनाशी, हो निज स्वभाव के नाशी।
तव नाम मंत्र को ध्यायें, अरु कर्म निर्जरा पायें॥969॥
ॐ ह्रीं श्री **शुद्धाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

हे 'सत्यासूनृतवाक्', सत्य वचन धारी प्रभो।
पाने कर्म विपाक, नाम मंत्र ध्याएँ विशद॥970॥
ॐ ह्रीं श्री **सत्यसूनृतवाचे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरम बुद्धि को प्राप्त, होके 'प्रज्ञापारमित'।
बने श्रेष्ठ हो आप्त, नाम मंत्र ध्याऊँ विशद॥971॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रज्ञापारमिताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राज्ञ' कहाए नाथ, सुर गण करते वन्दना।
चरण झुकाएँ माथ, प्रज्ञा पाने के लिए॥972॥
ॐ ह्रीं श्री **प्राज्ञाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यति' विषय विषहीन, स्वात्म निरत रहते सदा।
रहते निज में लीन, ध्यायें तव हम नाम को॥973॥
ॐ ह्रीं श्री **यतये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नियमितेन्द्रिय' हे देव !, जीते इन्द्रियों के विषय।
ध्याएँ तुम्हें सदैव, मन वच तन तिय योग से॥974॥
ॐ ह्रीं श्री **नियमितेन्द्रियाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'भदंत' यतिराज, सुर नर यति से पूज्य हो।
तुम पर जग को नाज, नाम मंत्र ध्याते अहा॥975॥
ॐ ह्रीं श्री **भदंताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे 'भद्रकृत' आप, श्रेष्ठ भद्रता धारते।
करें नाम तव जाप, तव पद पाने के लिए॥976॥
ॐ ह्रीं श्री **भद्रकृते** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भद्र' आपका नाम, है प्रसिद्ध इस लोक में।
शत्-शत् करें प्रणाम, नाम मंत्र ध्याते सदा॥977॥
ॐ ह्रीं श्री **भद्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्पवृक्ष' भगवान, वाञ्छित फल देते सदा।
करें विशद गुणगान, ध्याते हम तव नाम को॥978॥
ॐ ह्रीं श्री **कल्पवृक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरप्रद' कहे जिनेश, देते हैं वरदान शुभ।
ध्याते तुम्हें विशेष, तव पद पाने के लिए॥979॥
ॐ ह्रीं श्री **वरप्रदाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समुन्मूलिकर्मारि', कर्मों के नाशी प्रभो !
करके श्रेष्ठ विचार, ध्याते हैं हम आपको॥980॥
ॐ ह्रीं श्री **समुन्मूलिकर्मारये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किए कर्म का नाश, 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी'।
करके ज्ञान प्रकाश, शिव पद के धारी बने॥981॥
ॐ ह्रीं श्री **कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'कर्मण्य' महान्, सब कर्मों में निपुण तुम।
करते हम गुणगान, सहस्र नाम का भाव से॥982॥
ॐ ह्रीं श्री **कर्मण्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मठ' आप जिनेन्द्र, सब कार्यों में दक्ष हो।
पूजें तुम्हें शतेन्द्र, सहस्र नाम के रूप में॥983॥
ॐ ह्रीं श्री **कर्मठाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रांशु' पाया नाम, सर्व सौख्य दाता कहे।
करते सभी प्रणाम, नाम मंत्र का ध्यान कर॥984॥
ॐ ह्रीं श्री **प्रांशवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए हिताहित ज्ञान, 'हेयआदेयवीचक्षणः'।
जग में रहे प्रधान, विशद ध्यान करते सभी॥985॥
ॐ ह्रीं श्री **हेयादेयविचक्षणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए शक्ति विशेष, हे 'अनन्तशक्ति' तुम्ही।
तुमको हे तीर्थेश, ध्याते हैं हम भाव से॥986॥
ॐ ह्रीं श्री **अनन्तशक्तये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'अच्छेद्य' प्रधान, आप स्वयंभू श्रेष्ठतम्।
वीतराग विज्ञान, तुमको ध्याते हम अहा॥987॥
ॐ ह्रीं श्री **अच्छेद्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिपुरारि' हे नाथ, ज्ञाता तीनों लोक में।
नाम मंत्र का जाप, करते तीनों योग से॥988॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिपुरारये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिलोचन' आप, तीन नेत्रधारी रहे।
नाश किए सब पाप, विशद ज्ञान को प्राप्त कर॥989॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिलोचनाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'त्रिनेत्र' भगवान, तीन ज्ञान जन्मत हुए।
पाए केवल ज्ञान, तुमको ध्याते हम अहा ॥ 990॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रिनेत्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धडी छन्द)

जिनराज 'त्र्यंबक' कहे आप, प्रभु नाश किए त्रय विधि पाप।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥991॥
ॐ ह्रीं श्री **त्र्यंबकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'त्रयक्ष' अतिशय महान्, पाए हो तुम प्रभु ज्ञान भान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥992॥
ॐ ह्रीं श्री **त्र्यक्षाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'केवलज्ञानवीक्षण' सुनाम, करता यह जग तुमको प्रणाम।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥993॥
ॐ ह्रीं श्री **केवलज्ञानवीक्षणाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'समंतभद्र' तुम हो महान्, मंगलमय तुम जग में प्रधान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥994॥
ॐ ह्रीं श्री **समंतभद्राय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'शांतारि' हो शांत रूप, तुम शांतिकर जग में अनूप।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥995॥
ॐ ह्रीं श्री **'शांतारये'** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धर्माचार्य' हो धर्मवान, तुम प्रकट किया अतिशय महान्।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥996॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्माचार्याय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'दयानिधि' हो दयावान, दो नाथ भक्त को दया दान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥997॥
ॐ ह्रीं श्री **दयानिधये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो प्रभु 'सूक्ष्मदर्शी' विशेष, तुम सूक्ष्म द्रव्य लखते जिनेश।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥998॥
ॐ ह्रीं श्री **सूक्ष्मदर्शिने** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जितानंग' कर्मारि जीत, तुम हुए जगत में श्रेष्ठ मीत।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥999॥
ॐ ह्रीं श्री **जितानंगाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनराज 'कृपालु' रहे आप, नाशे हैं जग के सर्व पाप।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1000॥
ॐ ह्रीं श्री **कृपालवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनदेव 'धर्मदेशक' महान्, जन-जन को देते भेद ज्ञान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1001॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मदेशकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे प्रभु 'शुभंयु' आप नाम, पाकर के पाए मोक्ष धाम।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1002॥
ॐ ह्रीं श्री **शुभंयवे** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सुखसाद्भुत' हो सुखाधीन, रहते हो निज में ध्यान लीन।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1003॥
ॐ ह्रीं श्री **सुखसाद्भुताय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे 'पुण्यराशि' तुम पुण्यवान, होकर पदवी पाई महान्।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1004॥
ॐ ह्रीं श्री **पुण्यराशये** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनराज 'अनामय' हो महान्, हे व्याधि रहित जग में प्रधान।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1005॥
ॐ ह्रीं श्री **अनामयाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हे धर्मरक्ष प्रभु 'धर्मपाल', नाशा है क्षण में कर्म जाल।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1006॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मपालाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जिनदेव आप हो 'जगत्पाल', हम झुका रहे तव चरण भाल।
तव नाम मंत्र हम जपे नाथ, दो मोक्ष मार्ग में प्रभु साथ॥1007॥
ॐ ह्रीं श्री **जगत्पालाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- 'धर्मसाम्राज्यनायक' प्रभो, जग में हुए महान्।
विशद नाम तव जाप कर, करते हैं गुणगान॥1008॥
ॐ ह्रीं श्री **धर्मसाम्राज्यनायकाय** नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उदितोदित माहात्म प्रकाशी, केवलज्ञानी सिद्ध कहाए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1009॥
ॐ ह्रीं श्री **उदितोदितमाहात्म्याय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इस जग में व्यवहार हीन, व्यवहार विधि में सोते पाए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1010॥
ॐ ह्रीं श्री **व्यवहारसुषुप्ताय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चतुराशीति लक्ष सुगुण के, धारी अनुपम सिद्ध कहाए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1011॥
ॐ ह्रीं श्री **चतुरशीतिलक्षगुणाय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सिद्ध पुरी के पथिक जीव, साम्राज्य श्रेष्ठ शिवपुर का पाए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1012॥
ॐ ह्रीं श्री **सिद्धपुरीपान्थाय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अर्हत् योग निरोध किए फिर, दिव्य ध्वनि संकोच कराए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1013॥
ॐ ह्रीं श्री **संहतध्वनये** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
योग किट्टि निर्लेपन में जिन, उद्यत होकर मोक्ष सिधाए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1014॥
ॐ ह्रीं श्री **योगकिट्टिनिर्लेपनउद्यताय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हुए अयोगी श्री जिनेन्द्र तव, कर्मों के सब भाव नशाए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1015॥
ॐ ह्रीं श्री **त्रुटत्कर्मपाशाय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परम निर्जरा करके अर्हत्, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।
नित्य निरंजन निर्विकार शुभ, सिद्ध प्रभु अतिशय पद पाए॥1016॥
ॐ ह्रीं श्री **परम निर्जराय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सृग्विणी छन्द)

सिद्ध में अनन्त पर्याय का योग है, गुणानन्तों का भी साथ संयोग है।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1017॥

ॐ ह्रीं श्री **निष्पीतानंतपर्यायाय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील अठदश सहस्र प्राप्त कर पूर्णतः, श्रेष्ठ साम्राज्य शिवपुर का पाए अहा।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1018॥

ॐ ह्रीं श्री **अष्टादशसहस्त्रशीलेशाय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अक्षर अयोगी 'अ इ उ ऋ, लृ' कर के उच्चारण पाए सिद्ध श्री।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1019॥

ॐ ह्रीं श्री **पंचलघुअक्षरस्थितये** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध हैं द्रव्य से सिद्ध परमात्मा, ध्यान करके बने जीव अन्तरात्मा।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1020॥

ॐ ह्रीं श्री **द्रव्यसिद्धाय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अयोगी चरम द्वय समय में रहे, सब प्रकृतियाँ बहत्तर जो क्षण में दहे।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1021॥

ॐ ह्रीं श्री **द्वासप्ततिप्रकृत्याशिषे** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब त्रयोदश प्रकृतियाँ अयोगी प्रभो !, अन्त में नाश करके बने जिन विभो !।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1022॥

ॐ ह्रीं श्री **त्रयोदशप्रकृतिप्रणुते** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक आलोक जिससे प्रकाशित रहे, ज्ञान निर्भर विशद ज्ञानी श्री जिन कहे।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1023॥

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञाननिर्भराय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्तों में शुभ ज्ञान धन एक हैं, जीव चिन्मय चमत्कारमय नेक हैं।
सिद्ध के जाप से कर्म का नाश हो, ध्यान से सिद्ध के मोक्ष में वास हो॥1024॥

ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानैकचिज्जीवघनाय** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सहस चौबिस गुण के शुभ, अर्घ्य चढ़ाए हैं शुभकार।
विशद भाव से पूजा की है, नाम मंत्र का ले आधार॥

गुण अनन्त होते सिद्धों के, अल्प बुद्धि का कोई पुमान।
कई जन्मों को पाकर भी वह, कर न सके पूर्ण गुणगान॥1025॥

ॐ ह्रीं **चतुर्विंशति अधिक एकसहस्रगुणधारक** सिद्ध परमेष्ठिने नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सहस्राष्ट गुण सिद्ध के, जग में रहे अनूप।
जयमाला गाते विशद, पाने निज स्वरूप॥

(तर्ज : भक्तामर की....)

सौ इन्द्रों से वंद्य जिनेश्वर, के पद शीश झुकाते हैं।
उनके गुण पाने को हम भी, भाव सहित गुण गाते हैं॥
सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र सभी मिल, चरण शरण में आते हैं।
पूजा अर्चा करके वह सब, चरणों में सिर नाते हैं॥
कर्म नाश करके जिन प्रभु ने, विशद ज्ञान प्रगटाया है।
दिव्य देशना देकर जग को, मुक्ती पथ दर्शाया है॥
तीन लोक की सर्व चराचर, वस्तु के तुम ज्ञाता हो।
इस जगती पर अनुपम हे जिन !, विधि के आप विधाता हो॥
है महात्म्य आपका अनुपम, जग में आप प्रधान कहे।
इस जग में रहकर के हे जिन, पूर्ण रूप से भिन्न रहे॥
अखिल विश्व में हो अचिन्त्य तुम, नहीं कोई उपमान कहा।
सब उपमानों से विरहित तुम, विशद आपका ज्ञान रहा॥
द्रव्य भाव नो कर्मों से तुम, रहित सिद्ध स्वरूपी हो।
नित्य निरंजन ज्ञान स्वभावी, चमत्कार चिद्रूपी हो॥
हो अखण्ड अव्यय अविनाशी, तीन लोक में अपरम्पार।
गुण अनन्त शुभ पाने वाले, कहे जगत में मंगलकार॥
शास्वत गुण पर्याय प्राप्त कर, बन जाते हैं सिद्ध महान।
सिद्धों के रहने का अनुपम, कहा गया शास्वत स्थान॥
सिद्ध अनन्तान्त वहाँ पर, निज स्वाभाव में रहते लीन।
शास्वत गुण को पाने वाले, हैं विभाव से पूर्ण विहीन॥

ऐसे जिन सिद्धों की अर्चा, जो भी करते हैं शुभकार।
उन जीवों का जीवन बनता, अतिशयकारी शुभ मनहार॥
हो एकाग्र चित्त से ध्याने, वाले पाते ज्ञान प्रबोध।
काल अनादि लगा कर्म के, आश्रव का वह करते रोध॥

(घत्ता छन्द)

जय-जय अविकारी, जग हितकारी, सिद्ध सनातन शुभकारी।
जय ब्रह्म बिहारी, अतिशय कारी, विघ्न हरण जग मनहारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सर्व सिद्धि दातार तुम, गुण अनन्त के कोष।
पद वन्दन से आपके, जीवन हो निर्दोष॥

इत्याशीर्वादः

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- गुण अनन्त जिन सिद्ध के, वर्णन कठिन महान।
अल्प बुद्धि हूँ मैं विशद, कर न सकू बखान॥
भक्ति से प्रेरित हुआ, करता हूँ गुणगान।
दोष कथन में जो रहें, शोध पड़े धीमान॥
पूज्य कहाए सिद्ध जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
महा समुच्चय से विशद, गाते हैं जयमाल॥

(पद्धड़ि छन्द)

जय स्वयं बुद्ध अक्षय अपार, जय स्वस्थ चित्त आनन्द धार।
जय मंगलमय मंगल महान, जय शरण आप जग में प्रधान॥
जय जय जिनवर गुण के निधान, जय प्राप्त चतुष्टय राज मान।
जय जय अनूप आचार सार, जय ज्ञान भान आनन्दकार॥
जय स्वयं शक्ति आधार वान, जय महामंत्र की श्रेष्ठ शान।
जय महामुनि आराध्य योग, जय स्वयं शुद्ध चैतन्य भोग॥

जय भव सिन्धु तारण जहाज, जय सिद्ध शिला के श्रेष्ठ ताज।
जय महातत्त्व हे उपादेय !, जय महामान हे ज्ञान ज्ञेय !॥
जय भव्य जीव के ध्यान योगं, जय स्वस्थ सुस्थिर जिन अयोग।
जय लोकोत्तम हे ब्रह्मवान, जय लोक शरण अघहर महान॥
जय संतापित को जलधि धार, जय रोग रसायन परम सार।
जय जय जिनेश निज गुण स्वरूप, जय निराकार आकार रूप॥
जय शरणागत को शरण आप, जय नाम जाप से कटें पाप।
जय त्रिभुवन के तुम श्रेष्ठ नाथ !, सब करें वन्दना जोड़ हाथ॥
जय सिद्ध शिला के आप ईशं, जय पद वन्दन करते महीश।
जय वीतराग सर्वज्ञ देव, हम करें चरण की सदा सेव॥
जय नित्य निरंजन निराकार, जय अजर अमर गुणमय अपार।
जय अविनाशी जिन ध्यान लीन, जय अविकल अविचल कर्म क्षीण॥
जय सिद्धि प्रदाता सिद्ध राज, भव सिन्धू के पावन जहाज।
जय शांति प्रदायक ज्ञानवान, जय सिद्धचक्र पावन विधान॥
जय शास्वत स्वश्रित सुखद ज्ञेय, जय ऐक्य ध्यान ध्याता सुध्येय।
जय सिद्ध सनातन मोक्ष धाम, जय शांत सिद्ध तव पद प्रणाम॥
भव त्रास निवारक हे जिनेश !, जय स्वाश्रित आश्रित हे महेश !।
जग हरिहरादि से पूज्य नाथ, भव-भव में पाएँ आप साथ॥

(छन्द : घत्तानन्द)

जय जय अविनाशी ज्ञान प्रकाशी, कर्म विनाशी शुभकारी।
जय शुद्ध स्वरूपी अचल अरूपी, चेतन रूपी अविकारी॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चत्वारिंशदधिकद्विसहस्रगुणोपेत सिद्ध परमेष्ठिभ्यः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परम धरम के ईश तुम, श्रेष्ठ सुगुण दातार।
तव पद की हम वन्दना, करते बारम्बार॥

इत्याशीर्वादः

आरती

तर्ज : भक्ति बेकरार है...

सिद्ध चक्र दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
पुण्य अवसर है आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है॥ टेक॥
ज्ञान दर्शनावरण आदि सब, प्रभु ने कर्म नशाए जी-2
लोकालोक प्रकाशित अनुपम, केवल ज्ञान जगाए जी-2......
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध प्रभु अविकारी हैं-2
भव्यों को सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी हैं-2......
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सुख अनन्त के कोष कहे-2
नित्य निरंजन हैं अविकारी, पूर्ण रूप निर्दोष रहे-2......
पर्व अठाई में मैना ने, सिद्धों का गुणगान किया-2
पूजा भक्ति अर्चा करके, यथा योग्य सम्मान किया-2......
सिद्ध चक्र की पूजा करके, गंधोदक छिड़काया था-2
कोढ़ रोग से श्रीपाल ने, छुटकारा तब पाया था-2......
जागे हैं सौभाग्य हमारे, हमको यह सौभाग्य मिला-2
देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, श्रद्धा का शुभ फूल खिला-2......
सिद्धों के गुण गाने वाले, सिद्धों के गुण पाते हैं-2
कर्म नाशकर अपने सारे, 'विशद' सिद्ध हो जाते हैं-2......

***

करने सिद्धों की भक्ति हम आये यहाँ, प्राप्त कीन्हें सुगुण आपने प्रभु महाँ।
तीन लोकों में हो प्रभु तारणतरण, हम झुकाते हैं माथा अतः तव चरण॥

प्रभु सिद्धों की भक्ति का मुझे उपहार मिल जाए।
श्रेष्ठ श्रद्धा के फूलों से मेरा जीवन ये खिल जाए॥
बुझा सद्ज्ञान का दीपक 'विशद' मेरा है सदियों से।
प्रभु विज्ञान का दीपक शुभम्, अब श्रेष्ठ जल जाए॥

प्रशस्ति

मध्य लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप महान।
भरत क्षेत्र में श्रेष्ठतम, भारत देश प्रधान॥
भरत क्षेत्र में श्रेष्ठ है, राजस्थान प्रदेश।
ज्ञानी ध्यानी धर्म प्रिय, रहते लोग विशेष॥
जिला भीलवाड़ा रहा, जिसमें शुभ स्थान।
है बिजौलिया श्रेष्ठतम, तीरथ क्षेत्र महान॥
नगर बीच मंदिर बड़ा, जिसमें पारसनाथ।
उनके चरणों में विशद, झुका रहे हम माथ॥
सिद्धचक्र का श्रेष्ठतम, जग में रहा विधान।
जिसके द्वारा सिद्ध का, किया शुभम गुणगान॥
विक्रम संवत् बीस सौ, सड़सठ रहा महान।
पच्चीस सौ सैंतिस शुभ, कहा वीर निर्वाण॥
पौष कृष्ण द्वितीया तिथि, प्रातः दिन गुरुवार।
रचना पूरी यह हुई, पावन अपरम्पार॥
ज्ञानमति जी आर्यिका, संत लाल विद्वान।
स्वस्ति भूषण आर्यिका, के हैं पूर्व विधान॥
उन रचनाओं का विशद, लिया गया आधार।
शुभ भावों का यह मिला, हमको शुभ उपहार॥
लोक अनादि काल है, शब्द अनादि अनन्त।
शब्द भाव के योग से, बने जीव धीमंत॥
लघु धी से लघु शब्द में, किया विशद गुणगान।
विद्वत ज्ञानी भूल को, यहाँ सुधारें आन॥

सिद्धचक्र चालीसा

दोहा- रत्नत्रय से शोभते, पञ्च गुरु शिवधाम।
करते पूजा अर्चना, करके विशद प्रणाम॥
चालीसा जिन सिद्ध का, गाते हम शुभकार।
वन्दन करते भाव से, पद में बारम्बार॥

(चौपाई)

जय-जय परम सिद्ध शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी॥1॥
सिद्ध सनातन शुभ कहलाए, अपने सारे कर्म नशाए॥2॥
पुरुषाकार लोक है भाई, उस पर सिद्ध शिला बतलाई॥3॥
ईशत् प्राग्भार शुभ जानो, अष्टम पृथ्वी जिसको मानो॥4॥
ज्ञान शरीरी जो कहलाए, प्रभु निकल परमातम गाए॥5॥
ज्योती पुञ्ज अरूपी जानो, ज्ञानादर्श स्वरूपी मानो॥6॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य कहाए, चमत्कार चित् चेतन पाए॥7॥
नित्य निरंजन गुण प्रगटाए, मुक्तिश्री के स्वामी गाए॥8॥
ज्ञानावरणी कर्म नशाए, ज्ञान अनन्त प्रभू प्रगटाए॥9॥
कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्श अनन्त प्रभू परकाशे॥10॥
मोह कर्म को आप नशाया, गुण सम्यक्त्व श्रेष्ठ प्रगटाया॥11॥
अन्तराय नाशे जिन स्वामी, बल अनन्त पाये शिवगामी॥12॥
वेदनीय कर्मों के नाशी, अव्यावाध सुगुण की राशि॥13॥
आयू कर्म नशाने वाले, अवगाहन गुण पाने वाले॥14॥
नाम कर्म भी रह ना पाया, गुण सूक्ष्मत्व श्रेष्ठ प्रगटाया॥15॥
गोत्र कर्म के नाशी जानो, अगुरुलघु गुण जिनका मानो॥16॥
गुण सहस्र तुमने प्रगटाए, सहस्रनाम धारी कहलाए॥17॥
पार नहीं महिमा का पावे, चाहे वृहस्पति भी आ जावे॥18॥
इन्द्र नरेन्द्र सभी गुण गाते, फिर भी महिमा न कह पाते॥19॥
भक्ती से हमने गुण गाया, पद में सादर शीश झुकाया॥20॥

विशद भावना हमने भाई, प्राप्त हमें हो प्रभु प्रभुताई॥21॥
सिद्ध प्रभू महिमा के धारी, जिन सर्वज्ञ कहे शुभकारी॥22॥
महा मोहतम नाशन हारी, निर्विकल्प आनन्दाविकारी॥23॥
कर्म त्रिविध से रहित कहाए, निजानन्द सुखकारी गाये॥24॥
संशयादि सारे भ्रमहारी, जन्म-जरादिक रोग निवारी॥25॥
युगपद सकल लोक के ज्ञाता, अनुपम विधि के श्रेष्ठ विधाता॥26॥
निरावरण निर्मल अनगारी, निरूपाधि चेतन गुणधारी॥27॥
दुर्निवार निर्द्वन्द स्वरूपी, निर आश्रय निरमय चिद्रूपी॥28॥
सब विकल्प तज भेद स्वरूपी, निज अनुभूति मगन अनरूपी॥29॥
अजर अमर अविकल अविनाशी, निराकार निज ज्ञान प्रकाशी॥30॥
दोष अठारह रहित कहाए, ज्ञान शरीरी अविचल गाए॥31॥
पावन वीतरागता धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥32॥
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय सब पाए, निज में सारे सुगुण समाए॥33॥
गुण अनन्त के हैं जो स्वामी, आप कहाए अन्तर्यामी॥34॥
सिद्ध सनातन तुम कहलाते, तीन लोक में पूजे जाते॥35॥
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए॥36॥
पञ्चम भाव आपने पाया, पञ्चम गति में धाम बनाया॥37॥
श्री के धारी आप कहाए, हो कृतकृत्य सत्य शिव पाए॥38॥
कहलाए प्रभु त्रिभुवन नामी, भव्य जीव हैं तव अनुगामी॥39॥
चरण आपके 'विशद' नमामी, ज्ञानी जन करते प्रणमामी॥40॥

दोहा- विघ्न हरण मंगल करण, सदा रहो जयवंत।
विघ्न रोग दुर्भाग्य का, होवे क्षण में अन्त॥
चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
वे कर्मों का नाशकर, बने श्री के नाथ॥

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिने नमः।

भजन (तर्ज-कहाँ हम जाएं किस दरपे...)

भरे सिद्धों के गुणभारी, सिद्धचक्र पाठ में भाई।
सिवा इसके न दुनियां में, कोई है श्रेष्ठ सुखदाई॥
कर्म आठों के नाशी हैं, सिद्ध गुण आठ पाए हैं।
असद संसार यह सारा, विशद दिखता है दुखदाई॥1॥
सिद्ध मंगल हैं लोकोत्तम, शरण भी सिद्ध गाए हैं।
चतुर्दिक लोक में भारी, विशद फैली है प्रभुताई॥2॥
अचल अविकार अविनाशी, निरंजन नित्य होते हैं।
नहीं हैं पार महिमा का, विशद संतों ने भी गाई है॥3॥
सिद्ध ब्रह्मा कहें विष्णु, सिद्ध शिव भी हमारे हैं।
सिद्ध जो भी बने अब तक, बने सिद्धों के अनुयायी॥4॥
सिद्ध ज्ञाता कहे दृष्टा, शुद्ध स्वरूप के धारी।
और की बात क्या कहना, शरण अरहंत ने पाई॥5॥
भटकते हम रहे जग में, नहीं सिद्धों को जाना था।
शरण में जब से आये हम, खुशी मन में मेरे छाई॥6॥
शरण में ले लिया हमको, तो मुक्ति भी दिला दो तुम।
'विशद' अब मोक्ष जाने की, प्रभु वारी मेरी आई॥7॥

भजन (तर्ज-तुमसे लागी लगन...)

सिद्ध का कर भजन, पद में कर ले नमन, अवसर आया। मण्डल सिद्धचक्र भाई रचाया।
आये प्रभुजी शरण, भक्ति में हो मगन, मन से ध्याया। मण्डल सिद्धचक्र भाई रचाया।
कर्म आठों प्रभु ने नशाए, सिद्ध के आठ गुण श्रेष्ठ पाए।
इन्द्र वंदन करें, चरण अर्चन करें, भाग्य पाया॥ मण्डल...
राग तुमने सभी से घटाया, विषम भोगों से मन को हटाया।
पाया संयम रतन, भेषधर के नगन, निज को ध्याया॥ मण्डल...
मैना सुंदरी पे संकट जब आया, कोढ़ी पति जो पिता ने दिलाया।
दर्श मुनि का किया, ढोक चरणों में दिया, संदेश पाया॥ मण्डल...
सिद्ध चक्र का पाठ रचाओ, गंधोदक तुम पति को लगाओ।
कुष्ट सारा गया, तन भी पाया नया, हर्ष छाया॥ मण्डल...
पर्व अष्टाह्निका जब भी पाओ, पूजा मण्डल को भाई रचाओ।
मुक्ति साधन अहा, 'विशद' यह भी रहा, आगम गाया॥ मण्डल...

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्व.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित 140 विधानों की विशाल श्रृंखला

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. बृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. बृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण धर्म विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव बृहद् कल्पतरु विधान
62. बृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह-1
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. लघु धर्मचक्र विधान
72. अर्हत् महिमा विधान
73. सरस्वती विधान
74. विशद महाअर्चना विधान
75. विधान संग्रह (प्रथम)
76. विधान संग्रह (द्वितीय)
77. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गाँव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
80. अर्हत् नाम विधान।
81. सम्यक् आराधना विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु मृत्युञ्जय विधान
84. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
85. मृत्युञ्जय विधान
86. लघु जम्बूद्वीप विधान
87. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
88. क्षायिक नवलब्धि विधान
89. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
90. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
91. बृहद् निर्वाण क्षेत्र विधान
92. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
93. तीन लोक विधान
94. कल्पद्रुम विधान
95. श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
96. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान (लघु)
97. सहस्रनाम विधान (लघु)
98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
99. त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
100. पुण्यास्रव विधान
101. सप्त ऋषि विधान
102. तेरह द्वीप मण्डल विधान
103. श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ मण्डल विधान
104. श्रावक व्रत दोष प्रायश्चित्त विधान
105. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
106. सम्यक् दर्शन विधान
107. श्रुतज्ञान व्रत विधान
108. ज्ञान पच्चीसी विधान
109. चारित्र शुद्धि विधान
110. लघु शांति विधान
111. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
117. षट् खण्डागम विधान
118. दिव्य देशना विधान
119. श्री आदिनाथ विधान (रैवाड़ी)
120. नवग्रह शांति विधान
121. रक्षा बन्धन विधान
122. सोलह कारण विधान
123. तीर्थंकर विधान
124. गणधर वलय विधान (लघु)
125. गणधर वलय विधान (बृहद्)
126. गिरनार गिरि विधान
127. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
128. ऋषि मण्डल विधान
129. कालसर्प दोष निवारक विधान
130. शनि ग्रह अरिष्ट निवारक विधान
131. वास्तु विधान (लघु)
132. भक्तामर विधान (चौपाई)
133. पद्मावती विधान
134. क्षेत्रपाल विधान
135. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान
136. बड़े बाबा विधान
137. कल्पद्रुम विधान (लघु)
138. लक्ष्मी प्राप्ति विधान
139. महावीर समवशरण विधान
140. चान्दनपुर महावीर विधान
141. श्री शान्तिनाथ विधान (शान्तिनाथ की खोह)
142. 2688 बीजाक्षर मंत्र भक्तामर विधान
143. श्री पार्श्वनाथ विधान (खण्डेला)
144. सुगन्ध दशमी व्रत विधान
145. कर्म निर्झर व्रत विधान
146. निर्दुख सप्तमी व्रत विधान
147. रविव्रत पूजा विधान
148. सौभाग्य दशमी व्रत विधान
149. बृहद् स्वयंभू व्रत विधान
150. पुरन्दर विधान
151. विशद पञ्चागम संग्रह
152. जिन गुरु भक्ति संग्रह
153. धर्म की दस लहरें
154. स्तुति स्तोत्र संग्रह
155. विराग वंदन
156. बिन खिले मुरझा गए
157. जिन्दगी क्या है
158. धर्म प्रवाह
159. भक्ति के फूल
160. विशद श्रमण चर्या
161. रत्नकरण्डश्रावकाचार चौपाई
162. इष्टोपदेश चौपाई
163. द्रव्य संग्रह चौपाई
164. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
165. समाधितन्त्र चौपाई
166. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
167. संस्कार विज्ञान
168. बाल विज्ञान भाग-3
169. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
170. विशद स्तोत्र संग्रह
171. भगवती आराधना
172. चिंतवन सरोवर भाग-1
173. चिंतवन सरोवर भाग-2
174. जीवन की मनःस्थितियाँ
175. आराध्य अर्चना
176. आराधना के सुमन
177. मूक उपदेश भाग-1
178. मूक उपदेश भाग-2
179. विशद प्रवचन पर्व
180. विशद ज्ञान ज्योति
181. जरा सोचो तो
182. विशद भक्ति पीयूष
183. विशद मुक्तावली
184. संगीत प्रसून
185. आरती चालीसा संग्रह
186. भक्तामर भावना
187. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
188. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
189. विशद महा अर्चना संग्रह
190. विशद जिनवाणी संग्रह
191. विशद वीतरागी संत
192. काव्य पुष्प
193. पञ्च जाप्य
194. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
195. बिजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
196. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट-उपरोक्त विधानों में से आप अधिकाधिक पूजन विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। - मुनि विशालसागर